पुस्तिका चौदह

अक्टूबर 2020

जनवरी 2008 से दिसम्बर 2008

सम्भव है
कुछ प्रस्थान बिन्दु मिलें।

सहयोग : पाँच–दस–बीस रुपये।

मजदूरों को दिखाना ही नहीं (9)

गुत्थी उत्पादन छिपाने की..... चोरी में चोरी

✶ कभी-कभार के शोषण की बजाय नियमित शोषण ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी वाली समाज व्यवस्थाओं का आधार होता है। नियमित शोषण के लिये शोषण-तन्त्र आवश्यक होते हैं। और चूँकि शोषितों द्वारा शोषण का विरोध स्वाभाविक है, किसी भी शोषण-तन्त्र को नियमित दमन की आवश्यकता होती है। शास्त्र और शस्त्र की गठजोड़ के संग पृथ्वी पर दमन-तन्त्रों का श्रीगणेश हुआ। दमन-तन्त्र का ही दूसरा नाम, अधिक प्रचलित नाम सरकार है।

✶ दमन-तन्त्र की विशेषता यह है कि यह खर्चा माँगता है। सरकार के खर्च का आदि-स्रोत टैक्स हैं। प्रकृति के बाद हाथ उत्पादन के आदि-स्रोत हैं। इसीलिये कर = हाथ, कर = टैक्स। अधिक समय नहीं हुआ, महलों-किलों में रहने वाले राजा-सामन्त सरकार थे और भूदासों से उपज का छठा हिस्सा ($16^2/_3$%) वसूलने का कानून था। आज विधायक-सांसद-अधिकारी वाली सरकार के खर्च की पूर्ति के लिये कुल उत्पादन व खपत का आधे से ज्यादा हिस्सा लिया जाता है।

✶ भूदासों द्वारा अपनी उपज का $83^1/_3$% रखना कानून अनुसार था। उत्पादकता में छलाँगें लगी हैं और आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-दो प्रतिशत मजदूरों के हिस्से में आना कानून अनुसार है। बाकी के 98 प्रतिशत में शोषण-तन्त्र और दमन-तन्त्र में हिस्सा-बाँट होती है।

✶ प्रहरी, कोतवाल, मन्त्री द्वारा रिश्वत लेने के किस्से बहुत पुराने हैं। दरअसल दमन-तन्त्र रिश्वत की चर्बी के बिना चल ही नहीं सकते। इसलिये नगर-प्रान्त-देश के दायरों में कैद हो कर भ्रष्टाचार आदि को मूल समस्या मानना नादानी के सिवा और कुछ नहीं है। हाँ, गैर-कानूनी को मर्ज और कानून को दवा पेश कर कानून अनुसार दमन-शोषण को छिपाने का नुस्खा पुराना है, यह शुद्ध काँइयापन है।

✶ आज नई बात दमन-तन्त्र के संग-संग शोषण-तन्त्र में भी कानूनों का उल्लंघन, गैर-कानूनी कार्यों का बहुत-ही बड़े पैमाने पर होने लगना है। मण्डी-मुद्रा के साम्राज्य में कानूनों का यह अर्थहीन होना राजाओं-सामन्तों के अन्तिम चरण में कानूनों के अर्थहीन होने जैसा लगता है। *दिल्ली और इसे घेरे नोएडा, सोनीपत, बहादुरगढ, गुड़गाँव, फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में कार्य करते 70-75 प्रतिशत मजदूरों को अब दस्तावेजों में दिखाना ही नहीं को विलाप की वस्तु की बजाय नई सम्भावनाओं से ओत-प्रोत के तौर पर देखना बनता है।*

मण्डी-मुद्रा की गतिक्रिया के चलते कानूनी/ गैर-कानूनी में हुई इस उलट-फेर के सन्दर्भ में मालिक से दो-चार आने वाला हिस्सेदार से चन्द शेयरों वाला निदेशक से कर्ज पर टिकी फैक्ट्री-कम्पनी की मुख्य कार्याधिकारी बनने की प्रक्रिया की संक्षिप्त चर्चा कर चुके हैं। कम्पनी के शिखर से, चेयरमैन-एम डी-सी ई ओ से आरम्भ होती कम्पनी की चोरी मैनेजमेन्ट के निचले स्तर तक फैली है। इधर इन तीस-चालीस वर्ष में उत्पादन क्षेत्र में हुये कुछ उल्लेखनीय बदलाओं पर चर्चा जारी रखें।

● कारखानों में सामग्रियाँ विशाल क्षेत्र और दूर-दराज से आती थी पर उन से उत्पादन एक छत तले, एक परिसर में किया जाता था। फैक्ट्री मानी गेट और घेरे में बन्द मजदूर बना।

मण्डी का विस्तार और उत्पादन की बढती मात्रा का गठजोड़ एक निरन्तर प्रक्रिया है। इन के संग फैक्ट्रियों का बढता आकार और फिर.......

— वस्त्र उद्योग को लें। कपड़ा मिलें इंग्लैण्ड में। कपास की खेती अमरीका-मिश्र-भारत में। रंग के लिये भारत में नील की खेती और फिर रसायनों से रंग बनाने पर ये जर्मनी से। कपड़ों की बिक्री संसार-भर में।

चर्खे को कताई मिल ने विस्थापित किया। जुलाहे को फैक्ट्री में कपड़ा बनाने ने। रंगरेज को........

उत्पादन की बढती मात्रा के संग काम की रफ्तार और फैक्ट्री की साइज बढी — विशाल कपड़ा मिलें बनी। एक ही कारखाने में कताई, बुनाई, धुलाई-रंगाई, छपाई करते दस हजार मजदूर। इंग्लैण्ड-अमरीका की बात एक तरफ कर बम्बई-कानपुर-इन्दौर-कोयम्बतुर देखें। वहाँ की विशाल कपड़ा मिलें आज गायब हैं।

दुनियाँ में नई-नई किस्म के धागों और कपड़ों की मात्रा इधर बहुत बढी है। वस्त्र उद्योग का विस्तार भी बहुत हुआ है— दर्जियों को कारखाने खत्म कर रहे हैं। गुड़गाँव-ओखला-नोएडा-फरीदाबाद में.... बंगलादेश-इन्डोनेशिया-वियतनाम-चीन में सिले-सिलाये वस्त्र तैयार करती फैक्ट्रियों की भरमार।

और, विशाल कारखाने गायब-से.....

— आइये वाहन उद्योग को लें। रबड़ के लिये मलाया में क्रूरता और तेल के लिये ताण्डव की चर्चा यहाँ नहीं करेंगे। वाहन निर्माण

को देखते हैं, कार फैक्ट्री को देखते हैं।

कपड़ा कारखानों वाली कहानी ही कार फैक्ट्रियों के मामले में दोहराई जाती लगती है। कपड़ा मिलों की जन्मस्थली इंग्लैण्ड से जैसे यह गायब हुई हैं, लाइन सिस्टम के जरिये मजदूरों को हाँकने में अग्रणी रही बड़ी कार फैक्ट्रियों की अमरीका में वैसी ही स्थिति बन रही है।

● वस्त्र हों चाहे वाहन, इनका उत्पादन यूरोप-अमरीका के सीमित क्षेत्रों से निकल कर विश्व-व्यापी हो गया है। मण्डी का विस्तार भौगोलिक के संग सामाजिक क्षेत्रों में बहुत फैल गया है। और, नित नई मण्डी की रचना के लिये गतिविधियाँ अत्याधिक वीभत्स विकृतियों के चरण में प्रवेश कर गई हैं।

नियन्त्रण अधिकाधिक कठिन..... भ्रम पैदा करना ज्यादा से ज्यादा मुश्किल।

● उत्पादन की बढती मात्रा काम की रफ्तार बढाते जाने के बावजूद मजदूरों की सँख्या बढाती आई है। यूरोप-अमरीका के छोटे क्षेत्रों की बजाय आज मजदूर दुनियाँ के कोने-कोने में हैं।

गेट और घेरे में बन्द मजदूरों की विशाल सँख्या पर नियन्त्रण अधिकाधिक कठिन.... और उत्पादन की मात्रा में नित नई वृद्धि! यह वह गुत्थी लगती है जिसने कई गेटों, कई घेरों में बन्द मजदूरों वाले उद्योग क्षेत्रों के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाई है।

मारुति कार को लें। दो हजार से अधिक कार प्रतिदिन बनाती मारुति फैक्ट्री में मात्र 1800 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 4000 वरकर आज हैं। जबकि नोएडा, ओखला, फरीदाबाद, गुड़गाँव की कुछ हजार फैक्ट्रियों-वर्कशॉपों में लाख के दायरे में मजदूर मारुति कार बनाने में प्रत्यक्ष भूमिका अदा करते हैं। वाहन निर्माण आज असेम्बली स्थल के चौतरफा पचास मील के घेरे में उत्पादन कार्य पर आधारित है। इतनी बड़ी फैक्ट्री! इतने अधिक मजदूर एक घेरे में!! जी हाँ, एक फैक्ट्री के कई टुकड़े करना अस्थाई तौर पर मजदूरों को नियन्त्रण में रखना सम्भव बनाता लगता है पर.... विश्व-भर में जगह-जगह लाखों मजदूरों वाले उद्योग विहार समाज में आमूलचूल परिवर्तन की बढती सम्भावना लिये हैं। (जारी)

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

फरीदाबाद में :

यामाहा मोटर मजदूर : ''19/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री की स्पेयर पार्ट्स डिविजन में हम 14 मजदूर 1986-92 के दौर से काम कर रहे हैं। पहले गेट पर एस्कोर्ट्स सैकेन्ड प्लान्ट का बोर्ड था, फिर एस्कोर्ट्स यामाहा का हुआ और अब यामाहा मोटर नाम लिखा है। हमें ठेकेदार के जरिये रखे वरकर कहा जाता रहा है जबकि हमारे ई.एस.आई. तथा पी.एफ. खातों में नियोक्ता कोड एस्कोर्ट्स-यामाहा के हैं और हम उत्पादन में हैं। इधर मैनेजमेन्ट हमारे यामाहा कोड समाप्त कर उनकी जगह किसी ठेकेदार के कोड डाल हमें वास्तव में ठेकेदार के जरिये रखे वरकर बनाना चाहती है। हम ने नये फार्मों पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर मैनेजमेन्ट के इस कदम के विरोध में अक्टूबर की तनखा नहीं ली और फिर नवम्बर की तनखा भी नहीं ली है।''

यूनिवर्सल मैटल वरकर : '' 30/5 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 5 से 100 टन की 20 पावर प्रेसों पर वर्ष में 12-15 मजदूरों की उँगलियाँ कटती हैं। डबुआ कॉलोनी में डॉ. सेंगर से दवा-पट्टी करवा, 50-100 रुपये दे कर निकाल देते हैं। इक्का-दुक्का जो अड़ता-भिड़ता है उसकी 8 दिन पहले की भर्ती दिखा कर ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड बना एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भर देते हैं। अगस्त 07 में भविष्य निधि विभाग ने छापा मारा तब हाजरी रजिस्टर में 63 मजदूरों के नाम थे। छापे के बाद कम्पनी ने गार्ड को निकाल दिया, हर मजदूर से फोटो ली और अगस्त व सितम्बर की तनखाओं से 26 वरकरों के ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काटे। अक्टूबर में कुछ के पैसे काटने बन्द किये तथा नवम्बर में कुछ और के। इस समय फैक्ट्री में 45 मजदूर हैं और ई.एस.आई. व पी.एफ. मात्र 6 की हैं। यहाँ ***डेन्सो, मदरसन, सन्दार, इण्डोरेशन*** कम्पनियों का काम होता है। हैल्परों की तनखा 1700-2000 और ऑपरेटरों की 2100-2300 रुपये। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, महीने में 100-130 घण्टे ओवर टाइम के जिनका भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों से पावर प्रेस चलवाते हैं और एक डायरेक्टर गाली देता है।''

सूपर स्क्रू मजदूर : ''प्लॉट 30, 35 व 96 सैक्टर-24 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 50 मजदूर कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं और 250 को ठेकेदार ***हिन्दुस्तान सेक्युरिटी*** के जरिये रखा है। जुलाई 07 से 10 घण्टे ड्युटी पर 3510 रुपये महीना देने लगे हैं — 8 घण्टे पर यह माँगने पर ठेकेदार से गाली मिलती है। दस घण्टे के बाद को ओवर टाइम कहते हैं और उसका भुगतान भी सिंगल रेट से। रविवार को साप्ताहिक छुट्टी — अन्य किसी दिन सरकारी त्यौहारी छुट्टी पड़ने पर उस दिन की छुट्टी के बदले में 10 घण्टे हमारे ओवर टाइम कहे जाते घण्टों से काट लेते हैं। बोनस नहीं देते।''

स्टर्लिंग टूल्स वरकर : '' 5 ए डी.एल. एफ. इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में 1500 स्थाई, 800 कैजुअल और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 700 मजदूर काम करते हैं। ***लीलैण्ड,***

माजदा, आयशर, मारुति वाहनों के नट-बोल्ट 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में बनते हैं। ओवर टाइम के स्थाई को 25 रुपये प्रति घण्टा और कैजुअलों तथा ठेकेदारों के जरिये रखों को 15 रुपये प्रति घण्टा। कैजुअलों में सी एन सी ऑपरेटरों को भी 3510-3640 रुपये तनखा, पे-स्लिप नहीं, ई.एस.आई. कार्ड नहीं, कम्पनी द्वारा 6 महीने में निकाल देना और .... और स्थाई मजदूरों द्वारा दुर्व्यवहार: 'भाड़े वाले हो, हमारे पास मत बैठो'। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है।''

आर एस प्लास्टिक सुपरवेयर मजदूर : ''प्लॉट 2 धर्म काँटा रोड़, मुजेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8 की एक शिफ्ट है। वर्ष के 365 दिन काम.... 15 अगस्त, दिवाली, होली पर 4 घण्टे काम के बाद मिठाई, रंग, दारू। उत्पादन के लिये हर समय भारी दबाव — सिंगल डाई पर 12 घण्टे में 80 पीस माँगते हैं जबकि बहुत मुश्किल से 60-65 बनते हैं। थोड़े-से नुक्स पर गाली देते हैं और समय काट लेते हैं। रोज गाली... मशीन खराब होने की बात बताओ तो मैनेजिंग डायरेक्टर की गाली खाओ। कप-प्लेट बनाने का गर्म-गन्दा काम है और गैस लगने से आँख में आँसू, चक्कर आ जाते हैं। आँख, फेफड़े, पेट की तकलीफें आम हैं। फैक्ट्री में काम करते सभी 22 मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और सब से 3640 रुपये तनखा पर हस्ताक्षर करवाते हैं परन्तु... परन्तु वास्तव में हैल्परों की तनखा 1800-2300 और ऑपरेटरों की 2300-2900 रुपये है। ओवर टाइम का भुगतान वास्तविक वेतन के सिंगल रेट से।''

अल्पिया पैरामाउन्ट वरकर : ''सैक्टर-59 पार्ट-बी झाड़सेंतली-जाजरू रोड़ स्थित कम्पनी के सैकेन्ड प्लान्ट में 25 स्थाई मजदूर और 175 कैजुअल वरकर काम करते हैं। कैजुअलों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्थाई मजदूरों की तनखा 3510-3640 और कैजुअलों में हैल्परों की 2200 तथा ऑपरेटरों की 3000 रुपये। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम के जिनका भुगतान सिंगल रेट से भी कम अनुसार। एक साहब गाली देता है, हाथ भी उठा देता है।''

गुड़गाँव में :

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : ''उद्योग विहार स्थित कम्पनी की चार फैक्ट्रियों में हम तीन हजार कैजुअल वरकरों ने कल, 18 दिसम्बर को रात की शिफ्ट में काम बन्द कर दिया। कम्पनी ने पुलिस बुलाई। पुलिस ने हमें फैक्ट्रियों से बाहर निकलने को कहा तो हम ने बाहर जाने से इनकार कर दिया और नवम्बर माह का वेतन नहीं दिये जाने की बात बताई। मैनेजमेन्ट ने हमें इमारतों से बाहर किया — सर्दी में पूरी रात हम फैक्ट्रियों में खुले में बैठे।

''ईस्टर्न मेडिकिट फैक्ट्रियों में 1100 स्थाई मजदूरों की 8 घण्टे की शिफ्ट हैं पर हम कैजुअल वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। जुलाई से 3510 रुपये न्यूनतम वेतन लागू होने से पहले हमें ओवर टाइम के 15½ रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से देते थे जिसे घटा कर 10½ रुपये प्रति घण्टा कर दिया है। काम का बहुत ज्यादा बोझ है — स्थाई मजदूर के लिये प्रति घण्टा 500 पीस निर्धारित हैं तो कैजुअल वरकर से 800-1100 पीस प्रति घण्टा माँगते हैं। सूईयों से हाथ लहुलुहान होते रहते हैं। परसनल मैनेजर गाली देता है और हमें जबरन 12 घण्टे रोकते हैं। अत्याधिक काम के कारण फैक्ट्री में एक कैजुअल वरकर के मूँह से खून आया और कमरे पर उसकी मृत्यु हो गई। कम्पनी ने मृत मजदूर के परिवार को कुछ नहीं दिया। तनखा में से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते तथा निकालने/छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरते। और, भर्ती के लिये 250 रुपये रिश्वत लेते हैं।''

सेक्युरिटी गार्ड : ''प्लॉट 16-17 व 751 खाँडसा, 138 व 222 उद्योग विहार फेज-1, 446 व 870 उद्योग विहार फेज-5, और नरसिंहपुर में ***पर्ल ग्लोबल*** की 7 फैक्ट्रियों में हम 100 गार्ड ड्युटी करते हैं। हम सब को कम्पनी ने स्वयं भर्ती किया है। हमारी ई.एस. आई. व पी.एफ. हैं। दस्तावेजों में कम्पनी 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट दिखाती है पर वास्तव में हमारी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक छुट्टी है। हमें 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 4218 रुपये देते हैं — ओवर टाइम दिखाते ही नहीं।''

कुरु बॉक्स मजदूर : ''199 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में अब 80-90 वरकर ही बचे हैं, कम्पनी ने अपनी 5 फैक्ट्रियों के 2000 मजदूरों को मानेसर में नई फैक्ट्री में भेज दिया है। अधिकतर वरकर तीन ठेकेदारों के जरिये रखे हैं और एक ठेकेदार 1000 मजदूरों के पी.एफ. के पैसे खा कर चला गया है। कम्पनी इस मामले में टरकाती रहती है। बायर को 8 घण्टे की ड्युटी बताते हैं जबकि वास्तव में है 9 घण्टे की। लेकिन असली समस्या तो इसके बाद रोकने की है। महीने में जबरन 150-180 घण्टे ओवर टाइम करवाते हैं। धमकाने-पीटने के लिये फैक्ट्री में पुलिस बुला लेते हैं। काम का भारी बोझ है और बैठते ही टारगेट.... अत्याधिक काम, खासकरके सर्दियों में जबरन रात को रोकने से हर साल एक-दो की मृत्यु हो जाती है। मृत मजदूर के परिवार को कम्पनी स्वयं कुछ नहीं देती, मजदूरों से चन्दा एकत्र किया जाता है। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते हैं पर महीने में 10-15 घण्टों की गड़बड़।'' ***स्पिरिट क्लोथिंग वरकर :*** ''549 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 50 स्थाई मजदूर और एक ठेकेदार के जरिये रखे 450 वरकर काम करते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2585 और चैकरों की 3200 रुपये तथा

कारीगरों को 8 घण्टे के 120 रुपये अनुसार — ई.एस.आई. व पी.एफ. 450 में 50 की ही।''

स्पार्क ओवरसीज मजदूर : ''166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी तो रोज है ही, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। रात 8 बजे के बाद रोकने पर 25 रुपये रोटी के देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा देरी से — नवम्बर की आज 19 दिसम्बर तक नहीं दी है। रात दो बजे छोड़ते हैं तब पास देते हैं पर सुबह वापस ले लेते हैं। पाँच सौ मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।''

ई एल इण्डिया मजदूर : '' 402 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई, 100 कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर लोहे का काम करते हैं। कैजुअल की तनखा 3510 और ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की 2200 तथा कारीगरों की 3000-4000 रुपये। सुबह 9 से रात 8½ की शिफ्ट, ओवर टाइम सिंगल रेट से।''

कन्डोर वरकर : ''792 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 और कारीगरों की 3000-3900 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 3510-3900 अनुसार सब की काटते हैं... तनखा से कभी 200 तो कभी 400 रुपये काटते हैं — उपस्थिति कम दिखाते हैं, ड्युटी करते हुओं की अनुपस्थिति लगाते हैं।''

कोस्मो वरकर : ''864 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में ई.एस.आई. व पी.एफ. स्टाफ वालों की ही — एक हजार मजदूरों में किसी की नहीं। हैल्परों की तनखा 2500-2700 और कारीगरों की 3200 रुपये। सुबह 9½ से रात 8 की शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। नवम्बर की तनखा आज 19 दिसम्बर तक नहीं दी है।''

दिल्ली में :

यूनी-युनाइटेड मजदूर : ''बी-51 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 125 सिलाई कारीगर हैं — ई.एस.आई. व पी.एफ. एक की भी नहीं। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और फिर रात 12 तक रोकते हैं। सिलाई कारीगरों का पीस रेट 8 घण्टे बाद नहीं बदलता, यानी ओवर टाइम का भुगतान भी सिंगल रेट से। धागे काटने वाली 15 महिला मजदूरों की तनखा 1500-2200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ड्युटी 12 घण्टे की और ओवर टाइम का भुगतान भी सिंगल रेट से। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्परों की तनखा 3000 रुपये।''

सरवेल वरकर : ''डी-6/1 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर और एक ठेकेदार के जरिये रखे 150 वरकर काम करते हैं। स्थाई की आमतौर पर 8 घण्टे की ड्युटी जबकि ठेकेदार के जरिये रखों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर पूरे महीने के 3280 रुपये — सिर्फ रविवार के 12 घण्टे में 4 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं, पैसे सिंगल रेट से। त्यौहार की छुट्टी के पैसे काट लेते हैं ...भर्ती के समय कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवाते हैं। भर्ती के तीन महीने बाद तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटने लगते हैं, ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड देते हैं पर नौकरी से निकालने/छोड़ने पर फण्ड के पैसे मजदूर को मिलते ही नहीं। स्थाई मजदूरों को तनखा 7 तारीख को और ठेकेदार के जरिये रखों को 25-28 को जा कर। सरकारी अधिकारी अथवा आई.एस.ओ. वाले आते हैं तब ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को फैक्ट्री से बाहर कर देते हैं।

''सरवेल फैक्ट्री में बिजली के तार बनते हैं, परमाणु संयन्त्रों के लिये तार बनते हैं। सोल्डरिंग करने वालों की उँगली और नाखुन हर समय जख्मी रहते हैं। चाँदी आदि के महँगे तार बनाने वाली बहुत भारी मशीनें खतरनाक हैं। ताम्बे व अल्युमीनियम के भारी तार बनाने तथा उन पर प्लास्टिक चढाने वाले पूरे प्लान्ट में बहुत बदबू रहती है। तारों की जाँच के लिये हाई वोल्टेज बिजली प्रयोग की जाती है और इस काम में भी आम मजदूर को लगा देते हैं। खतरे ही खतरे..... दो साल पहले फैक्ट्री में आग भी लगी थी — निकलने का सिर्फ एक गेट है और वहीं आग लगी थी। दो घण्टे हम अन्दर फँसे थे — सीढी लगा कर निकाला था। तारापुर, कलपक्कम परमाणु संयन्त्रों में स्थाई के संग ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को भी भेजते हैं। वहाँ और भी खतरनाक हालात हैं — कई किस्म की गैसें होती हैं और बिना किसी प्रशिक्षण के ऊँचाई पर तार जोड़ने के काम में लगा देते हैं। दारू-गुड़....साल-भर में बीमार। स्थाई मजदूर को परमाणु संयन्त्र भेजते हैं तब दैनिक भत्ता 300 रुपये और ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर को 80 रुपये। वहाँ एक छोटे कमरे में 5-7 को रखते हैं।''

विक्टर इन्टरनेशनल मजदूर : ''बी-86 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में टी वी, वी सी डी, टेलीफोन के पुर्जे बनते हैं और अधिकतर मजदूर लड़कियाँ हैं। सब हैल्पर ठेकेदार के जरिये रखे हैं और 8 घण्टे रोज काम पर 30 दिन के 1800-2200 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम से 200 रुपये काटते हैं, ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड देते हैं, निकालने/छोड़ने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते। डायरेक्टर बदतमीजी से पेश आता है।''

सब सरकारें मजदूरों और सामाजिक मौत-सामाजिक हत्या के सामने खड़े दस्तकारों-किसानों से आतंकित हैं। सब सरकारें इस आतंक के खिलाफ एकजुट हो रही हैं।

दोस्तों के नाम एक खत

मजदूर समाचार में आ रही अधिकतर मजदूरों की बातें मजदूर पहचान के इर्द-गिर्द हो रही हैं। तनखा, पी.एफ., ई.एस.आई., काम के घण्टे, कार्यस्थलों की हालात मजदूरों की बातों में मुख्य तौर पर हैं। लगता है कि अच्छे अथवा बुरे जीवन को आँकने के यही पैमाने हैं। ऐसे में बेहतरी-बदलाव के प्रयासों का इन्हीं की दिशा में धकेले जाने का खतरा है।

मित्रो, मेरे विचार से, हमें ऐसी बातचीत बढानी चाहियें जिनमें ''जीवन क्या है? अच्छा जीवन कैसा हो?'' जैसे प्रश्न भी हों। बुनियादी बदलाव की बातें हमारी रोज़ाना की सोच का हिस्सा बनें तभी बात बनेगी।

गहरे और व्यापक रिश्तों वाला जीवन अच्छा जीवन है। जबकि, क्षणिक-सतही-छिछले सम्बन्धों वाला जीवन बुरा-खराब जीवन है।

विस्फोटक हो सकता है हम में से प्रत्येक द्वारा खुद से सवाल पूछना :

— स्वयं के साथ कभी बैठ पाते हैं क्या? खुद के लिये समय का अकाल और स्थान का अभाव तो नहीं है? या फिर, खाली दिमाग शैतान का घर मान कर अकेले बैठने से परहेज करते हैं और इसे फालतू समझते हैं। मेरे विचार से, अधिक चिन्ता की बात स्वयं के जीवन पर चिन्तन-मनन करने से इनकार करना है : '' दिमाग खराब हो जाता है। सोचना ही नहीं है!''

— स्वयं के जीवन को महत्वहीन तो नहीं मानते? या, सिर्फ खुद को ही तो सब कुछ नहीं मानते? मेरे विचार से, न कोई शून्य है और न कोई पूर्ण है। इन अतियों के फेर में हर व्यक्ति सिकुड़ जाता-जाती है। इन अतियों से पैदा होने वाले दुख, खुशी, तनाव बेमतलब के हैं। हर व्यक्ति का महत्व है और अपने महत्व से आरम्भ करके ही हम दुख-दर्द मिटा कर वास्तविक खुशी की रचना कर सकते हैं।

अपने स्वयं से सवाल करने जितना ही महत्वपूर्ण है औरों से सम्बन्धों के बारे में विचार करना।

— ''रिश्ते अब हैं ही कहाँ? कोई किसी का नहीं होता!'' यह बातें इतनी सामान्य हो गई हैं कि फिकरे बन गई हैं। क्या ऐसे लोग हैं जिन से हमारे अच्छे, गहरे सम्बन्ध हैं? संग रह रहे लोगों, सहकर्मियों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों, दोस्तों के लिये हमारे पास समय है क्या? ऊर्जा है क्या? मन है क्या? विचारणीय बात हैं। मेरे विचार से, निकट भविष्य के लिये ही नहीं बल्कि अपने आज को बेहतर बनाने के लिये भी सम्पर्क में रहते लोगों के साथ अच्छे-गहरे सम्बन्ध बनाने के प्रयास करना बनता है।

— मित्र/दोस्त/सहेली इस घुटन भरे माहौल में ताजा हवा के झौंके हैं। बनते हैं, बनाने और बनाये रखने की जरूरत है। दोस्ती डिगा देती है लाभ-हानि की दीवारें। अजनबी और दोस्त दो छोर नहीं हैं। कितनी बार होता है कि कल जो अजनबी थे वे आज हमारे गहरे दोस्त हैं। माहौल आज अनजान लोगों से डरने का बनाया जा रहा है, अजनबी को लाभ-हानि के खाँचे में फिट नहीं कर पाना भी एक बाधा है। क्या अनजान-अजनबी से अच्छा व्यवहार नहीं करना अथवा उन्हें अनदेखा करना हमारे द्वारा अपने ताजा हवा के झरोखों को पाटना नहीं है?

आज बेशक इच्छा से नहीं बल्कि जबरन हम बाँधे गये हैं पूरी दुनियाँ से। हालात ऐसे हो गये हैं कि कुछ ऐसी ही बातें ब्याह-शादी, बच्चों, वृद्धों के सन्दर्भ में हो गई हैं। ऐसे में प्यार-मोहब्बत के बारे में सोचने की जरूरत तो है ही, नई दुनियाँ के लिये इस दुनियाँ के बारे में भी सोचने-विचारने की जरूरत है।

दोस्तो, ''समय बलवान है, काल से कौन बचा है'' की बातें अपनी जगह, पर विचारणीय बात यह है कि घड़ी ने हमें कहाँ ला पटका है। कैसे हैं आज हमारे समय से रिश्ते? हर समय भागमभाग लगी रहती है! आराम करना किसे अच्छा नहीं लगता? क्या आपको आराम करने का समय मिलता है? क्या आप सिर के बल खड़े हो कर आराम को हराम तो नहीं मानते?

थोड़ा ठहर कर देखते हैं तो : कितना कुछ खो रहे हैं हम जीवन में! धूल-धुँआ-गर्द व फ्लैट-खोखे एक तो चाँद-सितारों को यों ही ओझल कर रहे हैं, और फिर, किसे फुर्सत है तारों को निहारने की। मर-सी गई है रात की नीरवता। जानवरों और पेड़-पौधों को गमलों में रखना तो बहुत दुखद है ही, और भी तकलीफ की बात इनका हमारे दैनिक जीवन से गायब होते जाना है। क्या घूमने-फिरने को समय मिलता है? क्या आस-पास घूमने के लिये जगह है? कहीं घूमने की इच्छा ही तो नहीं मर गई है?

दोस्तो, रुपया-पैसा आज हमारी एक मजबूरी तो है, पर मुझे लगता है कि हम सब रुपये के फेर में अपना पूरा जीवन ही लगाये जा रहे हैं। रुपये कमाने-रुपये बचाने-रुपये खर्च करने में तो हम बहुत समय लगाते ही हैं, रुपये-पैसे के बारे में सोचते रहने में भी हम बहुत समय खर्च करते हैं।

अन्त में, मैं तो यही कहूँगा कि तनखा और काम के घण्टों के दायरे से बाहर के बारे में विचार करना और कदम उठाना नये जीवन के लिये जरूरी हैं। —अमित

कामगार

– कारखाना अधिनियम 1948 के अनुसार प्रत्येक कारखाने में काम कर रहे हर मजदूर को पे-स्लिप, फण्ड स्लिप, ई.एस. आई. कार्ड, उपस्थिति कार्ड मिलने चाहियें परन्तु गाजियाबाद में अधिकतर औद्योगिक संस्थानों में इन में से एक भी नहीं दी जाती।

– दिल्ली में सरकार के गुरु तेग बहादुर अस्पताल में कार्यरत 144 सफाईकर्मियों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दिल्ली सरकार द्वारा 1985 में डी टी सी में भर्ती किये 1685 संवाहक जनवरी 2008 में भी अस्थाई। दिल्ली में चौराहों और लाल बत्तियों पर पुलिस की जगह ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों द्वारा यातायात नियन्त्रण – रोज 12 घण्टे ड्युटी, साप्ताहिक अवकाश नहीं, महीने के 3000 रुपये। रोजगार की तलाश में राजधानी आने वाले लोगों का है बुरा हाल, मुश्किल हुआ पेट भरना, जीना मुहाल।

– गुड़गाँव औद्योगिक शहर में दूर-दूर से कामकाज के लिये आते लोगों को लगता है कि ज्यादा से ज्यादा मेहनत कर वे आर्थिक रूप से अपने पाँव पर खड़े हो जायेंगे। लेकिन यह जान कर हैरानी होगी कि महीन में एक हजार बचाना भी मुश्किल होता है। साधारण कमरे का किराया 1200-1500 रुपये..... अर्जुन नगर, कृष्णा कॉलोनी, राजीव नगर, सदर बाजार के पास, सोहना चौक के पास ऐसे सैंकड़ों थोड़े बड़े कमरे हैं जहाँ एक-एक कमरे में 20-25 मजदूर एक साथ रहते हैं।

–ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण खुद ठेकेदारी प्रथा को बढावा दे रहा है। स्वास्थ्य विभाग और जल आपूर्ति का जिम्मा पूरी तरह ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर सम्भाल रहे हैं.... सफाई का ठेका मुम्बई की कम्पनी को। नोएडा की औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत श्रमिकों का जम कर शोषण किया जा रहा है।

– दीवारों और पोस्टरों तक ही सीमित रह गये हैं नियम। खतरनाक उद्योगों में भी कम नहीं है बालश्रम..... 1986 में सरकार ने कानून द्वारा 58 कार्यों पर रोक लगाई। बीस लाख की आबादी वाले गाजियाबाद महानगर में आये दिन नियमों की धज्जियाँ उड़ाना आम हो गया है। कम खर्चे में अधिक लाभ देने वाली यह छोटू नाम की मशीन औद्योगिक विकास के नाम पर खुद को प्रणेता मानने वाले गाजियाबाद की पहचान बनता जा रहा है।

(दिल्ली से हाल ही में शुरू किये गये दैनिक ''आज समाज'', 276 ग्राउण्ड फ्लोर, कैप्टन गौड़ मार्ग, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली –110065, के 'कामगार समाज' पन्ने में उपरोक्त बातें हैं।)

कानून हैं शोषण के लिये छूट है कानून से परे शोषण की

नरायण डाइंग- साँई टैक्स प्रिन्ट मजदूरः ''प्लाट 4 सैक्टर-27 सी स्थित इन कम्पनियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। नरायण डाइंग में 12 घण्टे पर तीस दिन के 3510 रुपये देते हैं पर कागजों में 8 घण्टे पर 26 दिन के 3510 दिखाते हैं। साँई टैक्स प्रिन्ट में 12 घण्टे पर 26 दिन के हैल्परों को 2500 और कारीगरों को 3200-4000 रुपये देते हैं। नरायण में ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर साँई में यह नहीं हैं। साँई में डायरेक्टर गाली देते हैं और 12 घण्टे में एक चाय तथा लगातार 36 घण्टे रोकने पर रोटी के लिये 46 रुपये देते हैं। नरायण में चाय नहीं देते और 36 घण्टे की ड्युटी में रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। नरायण और साँई, दोनों कम्पनियों ने दिसम्बर की तनखा आज 16 जनवरी तक नहीं दी है।''

सीट्ज टैक्नोलोजीज वरकर : ''प्लॉट 38 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों की 8 घण्टे की ड्युटी है पर दो ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हम में हैल्परों की तनखा 3510 रुपये है पर बहुत देरी से देते हैं – नवम्बर का वेतन 29 दिसम्बर को जा कर दिया था और दिसम्बर की तनखा आज 19 जनवरी तक नहीं दी है।''

रेल मजदूर

22 जनवरी को सुबह 9 बजे इलाहाबाद में उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय के 11 विभागों के चार हजार वरकरों ने काम आरम्भ नहीं किया। हजारों रेल मजदूर महाप्रबन्धक कार्यालय पर एकत्र हो गये। घबरा कर साहबों ने स्टेशन से यूनियन नेता को बुलाया। महाप्रबन्धक से बात कर लीडर ने भाषण दिया :'' हम बात कर रहे हैं, न्याय दिलवायेंगे, काम शुरू करो''। मजदूर नहीं हटे तो नेता ने धमकायाः '' काम शुरू करो नहीं तो गैरहाजिरी लग जायेगी''। नेता मुर्दाबाद-दलालों को बीच में मत आने दो- हम मजदूर खुद तय करेंगे– महाप्रबन्धक सामने आयें .... के नारे लगने लगे और लीडर खिसक लिया।

मामला साइकिलें खड़ी करने पर एक युवा पुलिसवाले द्वारा रेल कर्मचारियों को डण्डे मारने का था। साइकिल स्टैण्ड तैयार नहीं हुआ है और महाप्रबन्धक ने इधर-उधर साइकिलें खड़ी नहीं करने देने का आदेश पुलिस को दिया था।

जान छुड़ाने के लिये बड़े साहब ने मामला एक अन्य साहब को भेजा.... रेलवे पुलिस के अनुभवी लोगों ने सहकर्मी होने की

बात कही और खेद प्रकट किया..... डण्डे मारने वाले को लाइन हाजिर की सजा.... एक बजे वरकरों ने काम शुरू किया।

युवा मजदूर

न्यू एलनबरी वर्क्स मजदूर : '' 14/7 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे एक हजार वरकर दिन की 12½ घण्टे और रात की 11½ घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। रोज 12½-11½ घण्टे काम,महीने के तीसों दिन इस काम के बदले में 3510 रुपये देते हैं। बहुत गुण्डागर्दी है — मैनेजर गाली देते हैं। छूटते समय लाइन लगानी पड़ती है, धक्का-मुक्की हो जाती है और गार्ड पिटाई कर देते हैं।

''न्यू एलनबरी में ट्रक, कार, जीप, स्कूटर, मोटरसाइकिल, ट्रैक्टर के छोटे से बड़े 125 प्रकार के गियर बनते हैं — टाटा और मारुति सुजुकी मुख्य ग्राहक हैं। गर्म तेल का काम है और गर्मियों में तो बहुत-ही बुरा हाल हो जाता है। ज्यादातर मजदूर 18-22 वर्ष आयु के हैं और एक लड़के से दो मशीनें चलवाते हैं। दस-बारह लड़कों के बीच एक सीनियर ऑपरेटर देखने के लिये रहता है। मैनेजर 100 हैं और उनकी रोज 10-12 घण्टे ड्युटी रहती है।

''12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3510 रुपयों के संग मुफ्त में दो बार चाय-मट्ठी, एक बार चाय और बहुत-ही खराब भोजन देते हैं। स्टाफ को 25 रुपये में बढिया खाना देते हैं। श्रम विभाग के लोग कम्पनी से बहुत रिश्वत लेते हैं और पुलिस रात को खाने-पीने फैक्ट्री में आ जाती है।''न्यू एलनबरी फैक्ट्री से निकालते नहीं। ई. एस.आई. व पी.एफ. के नाम से पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। नौकरी छोड़ने वाले का पी.एफ. निकालने का फार्म भरते ही नहीं — अधिकतर का फण्ड खा जाते हैं। फैक्ट्री में 8 घण्टे की ड्युटी वाले 140 स्थाई मजदूर ही बचे हैं और बाद में भर्ती किये ऐसे 250 मजदूरों को स्टाफ कहते हैं, वर्क मॉनिटर कहते हैं।''

बन्दी वाणी (13)

सम्पूर्ण संसार बन्दीगृह बन गया है। सरकारों के कारागारों में बन्द हमारे बन्धुओं पर तो जकड़ और भी अधिक है। यहाँ कैदियों से हमारा कोई सम्पर्क नहीं है — जेलों में बन्द लोगों की वाणी के प्रसार में कृपया सहायता करें। इधर 2 जनवरी के गैरी हालफोर्ड के जेल से हमें लिखे पत्र के अंश यहाँ दे रहे हैं। कैदी को पत्र लिखना कालकोठरी में दरारें डालना है –

GARY HALLFORD, T-58516, FOLSOM STATE PRISON,
1B-2B-31L, P.O. BOX 715071, REPRESA, CA 95671-5071, U.S.A.

'' नियम-कानून जरूरी हैं !'' जबकि एक भुक्तभोगी की यह दास्तान नियम-कानून के टेढे-मेढे हो कर दोहरेपन की अर्थहीन दलदल बनने का बयान करती है। नियम-कानून की बची-खुची वैधता को बेनकाब करती बात यह है :

कल (1 जनवरी को) फोलसम जेल में बन्द अफ्रीकी मूल के कुछ अमरीकी नागरिकों में फुटबाल के मैचों पर शर्त या ऐसी ही किसी छोटी-सी बकवास पर मामूली-सी खटपट हुई। अधिकारियों ने इस पर फोलसम जेल के सब बन्दियों को, चार हजार कैदियों को कालकोठरियों में बन्द कर दिया है! दवा जैसी चीजें भी रोक दी हैं!! और, अधिकारियों को ''खतरनाक ड्युटी'' के लिये अतिरिक्त पैसे मिलेंगे।

अमरीका सरकार के जिन श्रेष्ठ संवैधानिक अधिकारों की बातें की जाती हैं उनका अस्तित्व ही नहीं है अमरीका सरकार की जेलों में। न्यायालय जेल अधिकारियों को कठघरे में खड़े नहीं करेंगे इसलिये कारागारों में अजूबे न्याय का मूल सूत्र है : '' हर मामले में कैदी दोषी हैं जब तक कि निर्दोष सिद्ध न हो जायें।''

अमरीका सरकार के विशाल जेलतन्त्र में बन्दियों के बीच हिंसा को नियम-कानून तीन खानों में रखते हैं : छुटपुट, नस्ली, दँगा। दो कैदियों के झगड़े में गम्भीर चोट नहीं लगी हो तो वह छुटपुट के दायरे में रखा जाता है। अगर खटपट अलग रंग-नस्ल के दो बन्दियों के बीच हो तो उसे नस्ली समस्या के खाने में रख कर उन रंगों-नस्लों के सब कैदियों को कालकोठरियों में बन्द कर दिया जाता है। और, तीन लोग हों तो दँगा! थोड़े-से लोग एक-दूसरे पर चिल्ला रहे हों, धक्का दे रहे हों तो अधिकारी उसे दँगा करार दे कर जेल के सब बन्दियों को कालकोठरियों में बन्द कर देते हैं। हिंसा रोकने, हिंसा कम करने के दावे करते नियम-कानून वास्तव में हिंसा बढाने का काम करते हैं।

इस मामुली-से मामले में 1 जनवरी से अतिरिक्त बन्धन झेल रहे हम 4000 कैदियों में से अधिकतर का इस मामले से कोई लेना-देना नहीं है। फिर भी कईयों को इस मामले में अन्य सजायें भी दी जायेंगी।

सरकार एक नशेड़ी की तरह व्यवहार करती है। अधिक, और अधिक दमन सरकार के चरित्र में है। इस दुखदायी प्रहसन का विरोध कैसे करें ? (जारी)

क्या ज्ञान चाहिये ? क्या ऊँच–नीच के पक्ष वाले ज्ञान चाहियें? क्या आज का हावी ज्ञान चाहिये? कौनसा और कितना ज्ञान चाहिये?

मन करता है आतंकवादी बन जाऊँ

● ***युवा मजदूर :*** *छह महीने में तो ब्रेक कर ही देते हैं। नई जगह लगने में कई बार महीना बीत जाता है। खाली बैठे दस दिन हो जाते हैं तो निराशा बढने लगती है। मरने को मन करता है ... .. ''आत्महत्या पाप है'' कह कर अपने को रोकता हूँ।*

● ***मारुति सुजुकी को पार्ट्स सप्लाई करने वाली फैक्ट्री का मैनेजर :*** *पावर प्रेस का ज्यादा काम है। उँगलियाँ कटने की तो कोई गिनती ही नहीं। इन दो वर्ष में पहुँचे से 18 मजदूरों के हाथ कटे हैं। दस्तावेजों में दिखाना नहीं होता है इसलिये निजी चिकित्सकों से उपचार करवाया जाता है। यह सब देख कर बहुत दुख होता है। अपनी असहायता मुझे और भी पीड़ा पहुँचाती है।*

● ***सत्तर वर्षीय सेवानिवृत प्रोफेसर :*** *सुबह-सुबह अखबार मन खराब कर देते हैं। इतनी घिनौनी बातें। मन कहता है कि नेताओं और अफसरों को गोली से उड़ा दो।*

● ***जो कभी गाँववाले थे :*** *मुजेसर के एक और नौजवान ने इधर आत्महत्या कर ली। जिन गाँवों की जमीनों पर फरीदाबाद में कारखाने खड़े हैं उन गाँवों के निवासियों की बड़ी सँख्या नशे की गिरफ्त में है। कमरों से किराया बहुतों की आमदनी का मुख्य स्रोत है। दम्भ और नशे में चूर नौजवान अपने बड़े-बूढों की बात भी नहीं सुनते।*

● ***बीस वर्षीय मजदूर :*** *रोज 12 घण्टे ड्युटी है। माल की ज्यादा माँग होने पर प्रतिदिन 16 घण्टे काम। सप्ताह में, महीने में कोई छुट्टी नहीं। जबरन है, 12-16 घण्टे नहीं रुको तो नौकरी नहीं है। पैसे घण्टे के हिसाब से। घण्टा दूसरा हो चाहे पन्द्रहवाँ, दर एक ही। उत्पादन प्रतिघण्टा अनुसार निर्धारित करते हैं। नये पीस के लिये आरम्भ में अगर 10 मिनट समय रखते हैं तो उसे घटा-घटा कर 9-8-7-6 मिनट कर देते हैं। फिर प्लस-माइनस हैं, निर्धारित से कम उत्पादन पर पैसे काटते हैं..... लाइन इनचार्ज और मास्टर बात-बात पर डाँटते-फटकारते हैं। हम इसका विरोध क्यों नहीं करते? हम टारगेट हासिल करने, पार करने में क्यों भिड़ जाते हैं? लोग सोचते क्यों नहीं ? मुझे बहुत गुस्सा आता है। मन करता है साहबों को उड़ा दूँ। मन करता है आतंकवादी बन जाऊँ।*

✶ जो है उससे खुश नहीं हैं। बदलाव चाहते हैं।

— अपनी स्थिति में परिवर्तन के लिये हम में से प्रत्येक बहुत पापड़ बेलता-बेलती है। तन को तानने से मन को मारने तक क्या-क्या हम नहीं करते। चन्द लोग, इक्का-दुक्का व्यक्ति अपनी इच्छाओं में से कई को प्राप्त भी कर लेते हैं। लेकिन, मुड़ कर देखने पर वे बातें जिन्हें बहुत महत्वपूर्ण मानते थे वे वास्तव में गौण मिलती हैं। चौतरफा हालात बद से बदतर मिलते हैं..... हमारे प्रयास विफल हो रहे हैं।

— ''व्यवस्था ही खराब है'' एक सामान्य समझ बन गई है। अलग-अलग व्यक्ति की समस्याओं का समाधान नहीं निकल सकता की बात भी एक आम समझ बन गई है। बात समाज बदलने से ही बनेगी की बात भी एक सामान्य समझ बन गई है।

और, लगता है कि समाज बदलने के हमारे प्रयास एक ठहराव की स्थिति में आ गये हैं।

✶ वर्तमान से असन्तोष की अभिव्यक्ति जलसे-जुलूस, हड़ताल, पुलिस से टकराव, सशस्त्र विद्रोह में उल्लेखनीय तौर पर होती थी। यह तथ्य है कि दुनियाँ-भर में सौ वर्ष के दौरान सभा-हड़ताल-विद्रोह की सफलता ही इनकी असफलता साबित हुई। पूरे विश्व में कारखाने बढते आये हैं, मजदूरों की सँख्या बढती आई है, परिवार का आकार सिकुड़ता आया है, परिवार के पालन-पोषण के लिये पुरुष के संग स्त्री द्वारा नौकरी करना बढता आया है, मजदूरों के काम के घण्टे बढ रहे हैं, कार्य की तीव्रता बढती आई है, असुरक्षा बढ रही है....

असन्तोष बढता आया है, गुस्सा विस्फोटक हो गया है। लेकिन, संसार-भर में इनकी अभिव्यक्ति मीटिंग-हड़ताल-टकराव में बहुत-ही कम हो रही है। नेताओं के पीछे मजदूर कम ही दिखाई देते हैं।

✶ आज हमारा गुस्सा काफी-कुछ आत्मघाती राहों में फूट रहा है। अकसर हम खुद को काटते हैं, अपने निकट वालों को काटते हैं। और, हम में से इक्का-दुक्का आतंकवादी भी बन रहा-रही है।

अपने स्वयं के कदमों के निजी महत्व से हम अच्छी तरह परिचित हैं। कार्यस्थलों तथा निवासस्थानों वाले अपने जोड़ों-तालमेलों के व्यवहारिक महत्व हम सब के जाने-पहचाने हैं। इस विकट परिवेश में, हमारे विचार से, अपने स्वयं के और अपने जोड़ों के व्यापक महत्व के बारे में सोचने-विचारने की आवश्यकता है।

— एक व्यक्ति अनेक तालमेलों में शामिल होता-होती है। पुराने किस्म के कुछ तालमेल ढीले हो रहे हैं, टूट रहे हैं पर व्यक्ति के लिये नये तालमेलों में शामिल होना आसान हो रहा है। परिस्थितियाँ ऐसी बनी हैं, ऐसी अधिकाधिक बनती जा रही हैं कि एक जोड़ सहजता से कई जोड़ों से तालमेल बैठा सकता है। यह हमें मैं से, विभाग से, फैक्ट्री से, मोहल्ले से पार ले जा कर बड़े क्षेत्र प्रदान कर

सकते हैं। सहजता से हम विश्व-व्यापी तालमेलों तक जा सकते हैं।

— व्यवहारिक हित के दायरों के बाहर वाले तालमेल आवश्यक हैं और इन्हें बनाना मुश्किल भी नहीं है। हमारे ऐसे तालमेल जो हो रहा है उसे सहज ही जब-तब ठप्प कर सकते हैं। यह हमें साँस लेने की फुरसत प्रदान करेंगे। यह हमें बदहवासी से बचायेंगे।

— मण्डी और मुद्रा ने दुनियाँ को जबरन जोड़ा है। जबकि अपने तालमेलों के जरिये हम संसार के पाँच-छह अरब लोगों से अपनी इच्छा वाले जोड़ बना सकते हैं। वर्तमान से पार पाने के लिये अनुभवों और विचारों के आदान-प्रदान तो एक-दूसरे को मदद करेंगे ही करेंगे। विश्व में नई समाज रचना के लिये जारी मन्थन को हमारे यह जोड़-तालमेल गति प्रदान करेंगे।

माँगें हैं : जीवन्त जीवन, उल्लास, खुशी, प्रेम, आदर, सन्तोष

— एक तरह से कहें तो हमें अपने लिये, अपनों के लिये समय-समय-समय चाहिये। 12-16 घण्टे खटने को मजबूर हम लोगों की असल गरीबी अपने पास समय का अकाल है।

— गेट से लौटा दिये जाने पर, ब्रेक पर, खाली बैठने पर समय हमारे लिये काल बन जाता है। चिन्तायें बढाने वाला यह समय हम पर थोपा-लादा हुआ समय होता है, यह हमारा अपना समय नहीं होता।

— बारह-सोलह घण्टे के इस दौर में महीने-दो महीने में तीन-चार दिन लगातार छुट्टी करना तो जीवन को बचाये रखने मात्र के लिये आवश्यक है। आराम करने, तसल्ली से सोने, मिलने-जुलने, हँसने-बोलने की थोड़ी पूर्ति ही तीन-चार दिन लगातार छुट्टियों से हो पायेगी।

— लगातार काम हमें पगला रहा है। कारखानों-दफ्तरों का अधिकाधिक सुनसान होना जीवन्त जीवन के लिये एक प्रस्थान-बिन्दू है।

तालमेल से, मिलजुल कर छुट्टियाँ करना उल्लास के फूल खिलाना है।

दर्पण में चेहरा—दर—चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

फरीदाबाद में :

लार्सन एण्ड टूब्रो मजदूर : ''12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में रविवार के साप्ताहिक अवकाश के बाद 4 फरवरी को सुबह हम ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँचे तो गेट पर फैक्ट्री बन्दी की सूचना चिपकी पाई। सब कुछ सामान्य चल रहा था, कोई लफड़ा नहीं था, अचानक यह सब हुआ। कम्पनी ने उसी दिन हिसाब बना कर मजदूरों के घर भेज दिया।

''परतें खुलने लगी। कम्पनी ने स्टाफ को सोमवार को फैक्ट्री नहीं आने के लिये पहले ही कह दिया था। कम्पनी ने सरकारी विभागों में मजदूरों के विरुद्ध तोड़-फोड़, मार-पीट की शिकायतें कर उन्हें फैक्ट्री बन्द करने का कारण बताया था। कुछ भी हुआ ही नहीं था की बात सरकारी विभागों के सामने बार-बार ला कर मजदूर 7 फरवरी को फैक्ट्री में अलमारियों से अपना सामान निकाल सके।

''लार्सन एण्ड टूब्रो कम्पनी की स्विचगीयर फैक्ट्री यहाँ है। फैक्ट्री का क्षेत्र बहुत है पर अधिकतर काम बाहर करवाया जाता है। इसलिये इस समय मात्र 68 स्थाई मजदूर और स्टाफ के 50 लोग यहाँ काम करते थे। स्टाफ वालों को कम्पनी ने 4 फरवरी को हिसाब नहीं भेजा परन्तु उन्हें मुम्बई, अहमदनगर, कोयम्बेतूर जाने को कहा। और फिर... कम्पनी ने नोटिस लगाया कि जिन मजदूरों को नौकरी चाहिये वे सुपरवाइजरों के पद के लिये आवेदन करें!

'' कुछ समय पहले कम्पनी ने लार्सन एण्ड टूब्रो के मुख्यालय के लिये 40 करोड़ रुपये में एक इमारत यहाँ तैयार की है। स्विचगीयर फैक्ट्री इसके पीछे पड़ने लगी और गेट अलग-अलग बना दिये गये। मुख्यालय के लिये फैक्ट्री की बाकी जमीन लेने के लिये फैक्ट्री बन्द करने के वास्ते साहबों द्वारा यह प्रपंच किया गया।''

आर के प्रोफाइल्स मजदूर : ''प्लॉट 262-ओ सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12½ और 12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं — एक छोटे विभाग में सुबह 8½ से साँय 6 की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं.... 9½ घण्टे से जो अधिक होता है उसे ओवर टाइम कहते हैं। जिन 30-35 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उन्हें कम्पनी स्थाई मजदूर कहती है और उन में हैल्परों को 9½ घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये। जिन 50-55 की ई.एस. आई. व पी.एफ. नहीं हैं उन्हें कम्पनी कैजुअल वरकर कहती है और रोज 9½ घण्टे ड्युटी पर महीने के 2800 रुपये देती है। रबड़ का काम है और कार्बन विभाग में तो बहुत-ही गन्दा काम है। यहाँ बनते रबड़ के रोल दुबई, जमशेदपुर भेजे जाने के संग-संग बजाज, महिन्द्रा, स्वराज माजदा, डी टी सी को सप्लाई किये जाते हैं।''

एस्कोर्ट्स वरकर : ''पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी एस्कोर्ट्स के प्लान्टों में काम करते हम कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की पहली जनवरी की दिहाड़ी मारी गई।

कम्पनी ने 1 जनवरी को उत्सव मनाया जिसमें स्थाई मजदूरों को बुलाया और हमें आने से मना कर दिया। पिछले वर्ष के अनुभव के दृष्टिगत हम ने यूनियन प्रधान से बात की तब वे बोले थे कि तुम भी हमारे मजदूर भाई हो, चिन्ता मत करो, पहली जनवरी की दिहाड़ी मिलेगी। लेकिन जनवरी माह की तनखा हमें दी तो उसमें 1 जनवरी के पैसे नहीं थे। तनखा महीने पर देते हैं पर हमें दैनिक वेतन पर रखा बताते हैं — कम्पनी में साप्ताहिक अवकाश और माह के दूसरे शनिवार की छुट्टी के पैसे हमें नहीं देते। समान काम के लिये समान वेतन की बात तो दूर-दूर तक नहीं है, बोनस में भी दुभान्त है। स्थाई मजदूरों को 20% बोनस और कैजुअल वरकरों को 8.33% ही..... स्थाई को बोनस के पैसे नवम्बर 07 में दे दिये गये, हम कैजुअलों को आज 28 फरवरी तक किसी प्लान्ट में नहीं दिये हैं। एस्कोर्ट्स समूह की फैक्ट्रियों में काम करते ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को तो बोनस देते ही नहीं।''

ग्लोरियस इलेक्ट्रोनिक्स मजदूर : ''41 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 100 वरकर ***एल जी*** के लिये प्लास्टिक पार्ट्स बनाते हैं। कम्पनी ने स्वयं 3-4 को ही रखा है, बाकी सब मजदूर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं। हैल्परों की तनखा 2000 और कारीगरों की 2500 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।''

अल्पिया पैरामाउन्ट वरकर : ''प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में अधिकारियों ने 8 फरवरी को छापा मारा। कम्पनी को इसकी सूचना पहले ही थी इसलिये जिनकी तनखा 2200-3000 रुपये है उन्हें पैसे 6 फरवरी को ही दे दिये थे। अधिकारियों के सामने 3510-3640 रुपये वेतन वाले स्थाई मजदूरों को ही पैसे दिये। अल्पिया पैरामाउन्ट में 400 कैजुअल वरकर हैं जिनमें हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये है। चार सौ कैजुअलों में 23 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. रहती हैं। छह महीने 23 के एक समूह की तनखा से राशि काटते हैं, फिर बन्द कर देते हैं और दूसरे 23 के समूह के साथ यह करने लगते हैं। जिनके पैसे जब काटते हैं तब भी उन्हें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, 36 घण्टे लगातार रोक लेते हैं। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम। साप्ताहिक अवकाश के दिन रविवार को भी जबरन ड्युटी — रविवार को काम पर नहीं जाओ तो सोमवार की हाजिरी काट लेते हैं।''

लेआप हग्निस एपरेल्स मजदूर : ''13/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 तक प्रतिदिन ड्युटी है, महीने में 7-8 रोज रात 2 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और वह भी 3200 के हिसाब से। रात 8 बजे तक कम्पनी 3 चाय, एक समोसा, एक पैकेट बिस्कुट देती है और रात 2 बजे के लिये 30 रुपये रोटी के। फैशन के महँगे कोट, जैकेट, चप्पल, कमीज, स्कर्ट बनते हैं। स्टाफ समेत 250 लोग हैं — 180 को कैजुअल वरकर कहते हैं और इनकी ई.एस.आई. व, पी.एफ. नहीं। हैल्परों की तनखा 3300 रुपये।''

गुड़गाँव में :

पी एम पी मजदूर : ''प्लॉट185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 8½ की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे 6½ रुपये प्रति घण्टा देते हैं! प्लास्टिक मोल्डिंग का काम है और ***मारुति सुजुकी*** कारों की स्टीयरिंग बनती हैं। हैल्परों की तनखा 2450 रुपये है और 3-4 साल से लगातार काम कर रहों की भी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।''

समस्त क्लोथिंग वरकर : ''प्लॉट 13 सैक्टर-34 स्थित फैक्ट्री अचानक 20 जून 07 को बन्द कर दी गई। हम 500 मजदूरों को मई की तथा 20 जून तक की तनखा नहीं दी। पता चला कि मशीनें प्लॉट 819 उद्योग विहार फेज-5 में ले गये हैं। अपने वेतन के पैसे लेने हम वहाँ गये। डायरेक्टर सामान बेच कर चलते बने। डायरेक्टर अब शीतला मन्दिर के पास वाशिंग की फैक्ट्री चला रहे हैं पर श्रम अधिकारी कहते हैं कि उनका पता नहीं है — हम ने श्रम विभाग में शिकायत की हुई है।''

नौकरी ढूँढता मजदूर : ''25 फरवरी को दोपहर 12½ बजे के करीब प्लॉट 225 उद्योग विहार फेज-1 में ***गौरव इन्टरनेशनल*** फैक्ट्री गेट पर एक लड़की रो रही थी। यह देख कर इधर-उधर से 15-20 लोग एकत्र हो गये। लड़की ने बताया कि सुपरवाइजर की अश्लील बातों पर एतराज करने पर उसे फैक्ट्री से बाहर कर दिया है। तभी इनचार्ज आया और बोला कि घर जाओ, जब औरों को पैसे दें तब अपने पैसे ले जाना, किसी को यह बात बताना मत, जी एम साहब तक बात पहुँचाई जायेगी।''

रोलैक्स वरकर : ''प्लॉट 303 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों को तनखा 2554 रुपये देते हैं पर हस्ताक्षर 3510 पर करवाते हैं। ऑपरेटरों की तनखा 2950 और वेल्डरों की 3500 रुपये। वेतन देरी से — जनवरी की तनखा 15 फरवरी को देनी शुरू की। साहब गाली देते हैं।''

पूनम इण्डिया मजदूर : ''प्लॉट 840 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½से साँय 6 की शिफ्ट है पर रात 2 बजे तक जबरन रोकते हैं। नहीं रुको तो मारते हैं। हैल्परों को भर्ती के समय तनखा 2500 बताते हैं पर लगाते 2100 रुपये हैं। ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तनखा हर महीने देरी से — जनवरी का वेतन आज 26 फरवरी तक नहीं दिया है।''

कॉल सैन्टर

कोर बी पी ओ मजदूर : ''प्लॉट 238 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित चार मंजिला इमारत में हम 600 वरकर काम करते थे। ग्राहकों के नक्शेकदम कम्पनी ने 21 दिसम्बर से 1 जनवरी तक छुट्टियाँ की थी। पहली जनवरी को खबर फैली कि ***डिजिटल सिनर्जीज*** की सुश्री रश्मि जैन ने 31 दिसम्बर को सब जगह ताले जड़वा दिये हैं और चाबियाँ ले कर चली गई हैं।

''कोर बी पी ओ ने प्रति सीट (मेज, कुर्सी,कम्प्युटर, फोन) के हिसाब से जगह डिजिटल से किराये पर ली थी। यहाँ डिजिटल की तरफ से ***एस एल वी*** गार्ड और कोर की तरफ से ***ग्रुप फोर*** गार्ड थे। किसी तरह इमारत में घुसा कोर का जनरल मैनेजर अन्दर बन्द हो गया था और फोन से सूचना फैला रहा था। पहली जनवरी को एस एल वी के 30-35 गार्ड और ग्रुप फोर के 40-45 गार्ड एकत्र कर लिये गये थे। पुलिस आई और चली गई। एस एल वी गार्ड किसी को इमारत के अन्दर नहीं जाने दे रहे थे। अन्दर बन्द कोर का जी एम चाबी बनाने वालों को बुला कर ताले खुलवाने की कहता रहा। रात 3½ बजे कोर जी एम को स्ट्रेचर पर बाहर ला कर कल्याणी अस्पताल में भर्ती किया गया। बाद में सुनने में आया कि कोर ने गुण्डे ला कर जबरन घुसने की योजना बनाई थी और इसके लिये किसी को एक लाख रुपये भी दिये थे पर फिर यह हुआ नहीं। डिजिटल की रश्मि जैन के केन्द्रीय मन्त्री की रिश्तेदार होने की बातें।

''कोर कम्पनी ने 7 जनवरी को हम वरकरों की मीटिंग ली। समय लगेगा कह कर फिलहाल नौकरी ढूँढने को कहा। दिसम्बर का वेतन हमारे बैंक खातों में शीघ्र भेज देने की बात की। लेकिन भेजा नहीं। आज 25 फरवरी तक हमें दिसम्बर की तनखा नहीं दी है। नौकरी तो गई ही, अब साहब कहते हैं कि तनखा की उम्मीद कम है। वरकरों को लाने-ले जाने के लिये चार ट्रान्सपोर्टरों के जरिये रखी 85 गाड़ियों का 60 लाख रुपये किराया बकाया, खानपान देने वाले के 7 लाख रुपये बकाया..... कम्पनी का स्थानीय मुख्यालय कोर बी पी ओ (इण्डिया) प्रा.लि., 815-816 इन्टरनेशनल ट्रेड टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019 में स्थित है और मुख्यालय है :

COREBPOLTD.,16-19SOUTHAMPTONPLACE,HOLBORN, LONDON WCIA 2AJ, U.K. <www.corebpo.com>"

जनता का
ज्यादा राजनीतिक होना
जनता का
बेड़ा गर्क करता है।

रात को जागना

(यहाँ 'दि पीपल' के मार्च-अप्रैल 08 अंक से ली जानकारियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। सम्पर्क के लिये :

THE PEOPLE, P.O. BOX 218, MOUNTAIN VIEW, CA 94042-0218, USA. <www.slp.org>)

सूर्योदय से सूर्यास्त वाला प्राकृतिक दिन महत्व खोता जा रहा है। बढती रोशनी रात को रात नहीं रहने दे रही।

रात्रि के अन्धेरे में मानव शरीर सामान्य तौर पर मेलाटोनिन हारमोन का उत्पादन करता है। यह हारमोन शरीर में रसोलियाँ नहीं बनने देने में एक भूमिका अदा करता है। इसलिये शरीर में मेलाटोनिन की कम मात्रा कैन्सर की सम्भावना बढा सकती है।

रात को काम करने वालों, रात को जागने वालों में मेलाटोनिन कम होती है क्योंकि रोशनी शरीर में इसके उत्पादन को रोक देती है। पूर्ति के लिये ऊपर से मेलाटोनिन लेना समाधान नहीं है क्योंकि यह इस हारमोन के प्राकृतिक उत्पादन को बन्द करने की प्रवृति लिये है।

रात की पाली में काम करती महिलाओं में स्तन कैंसर अधिक पाया गया है। रात्रि शिफ्ट में काम करते पुरुषों में प्रोस्टेट ग्रन्थी का कैन्सर अधिक पाया गया है।

सूर्यास्त के बाद भी फैक्ट्रियों, हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों, मीडिया, होटलों में काम, ड्राइवरों-सेक्युरिटी गार्डों द्वारा काम विश्व-भर में सामान्य बात बन गई है। और ऐसा काम बढता जा रहा है। इधर यूरोप-अमरीका-आस्ट्रेलिया से भारत में स्थानान्तरित कॉल सेन्टरों, बी पी ओ का बढता कार्य रात को ही काम करने को लाखों की नियति बना रहा है। देर रात तक टी.वी. के जरिये प्रायोजित आनन्द-प्रायोजित पीड़ा का उपभोग दुनियाँ में महामारी बन गया है। टशन के तौर पर जागते हुये रात के दो बजाना..... खालीपन से भागने के लिये नाइट क्लब-नाइट लाइफ।

लाखों वर्ष के दौरान हमारा शरीर रात को सोने के लिये ढला है। कब सोते हैं यह महत्वपूर्ण है। कब जागते हैं और कब सोते हैं यह हमारे शरीर द्वारा अपनी मरम्मत करने पर प्रभाव डालते हैं। दिन में सोने पर भी रात्रि में जागने वालों की नींद पूरी नहीं होती. ....नींद की कमी शरीर की प्रतिरोध क्षमता घटा कर कैन्सर के खतरे बढा देती है।

हमारे शरीर की प्रकृति के विरुद्ध रात को जागना, रात्रि को काम करना हृदय रोग की आशंका भी बढाता है। अतिरिक्त थकावट तथा चिड़चिड़ापन रात को जागने से जुड़े हैं और यह स्वयं में सम्बन्धों को बिगाड़ना लिये हैं।

रोशनी हमारे जीवन का विस्तार नहीं कर रही। रात को जागना तन की पीड़ा व रोग और मन के अवसाद लिये है।

यह बातें भी पढ़िये

7 मार्च को दो सज्जन मजदूर लाइब्रेरी पहुँचे। खड़े-खड़े ही गुस्से में बोलने लगे : आप ही मजदूर समाचार निकालते हैं ?! आपने हमारी कम्पनी के बारे में झूठी खबर छापी है। हम आपके खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट लिखवायेंगे। अदालत में मामला दायर करेंगे। आपने हमारी कम्पनी को बदनाम किया है। सबूत दीजिये। जिस मजदूर ने आपको बताया उसका नाम बताइये। उस मजदूर की फोटो क्यों नहीं छापी....

बैठिये। पानी लेंगे ? कहाँ से आये हैं ?

गुड़गाँव से आये थे। बैठने पर भी गुस्सा कम नहीं हुआ:

''मजदूर जो कुछ भी कहेंगे वही आप छाप देंगे क्या ? मजदूर तो झूठ बोलते हैं। हो सकता है कि जिसने लिखवाया है वह अब हमारे यहाँ हो ही नहीं और कम्पनी की बदनामी करना चाहता हो। एक-दो बार अखबार में और छप जायेगा तो हमें कम्पनी बन्द करनी पड़ेगी। तब मजदूरों को रोटी आप खिलायेंगे ? नौकरी आप देंगे? गुड़गाँव में इस समय एक्सपोर्ट कम्पनियों के हजारों मजदूर सड़क पर हैं। आप उन्हें रोटी खिलाइये। उनकी नौकरी लगवाइये। उन फैक्ट्रियों को खुलवाइये.....

किस फैक्ट्री की खबर है ? क्या लिखा है उस में ? मजदूर समाचार के जनवरी व फरवरी अंकों में लिखा था : ''.... सुबह 9 से रात 9 ड्युटी.... हैल्परों की तनखा 2350 और कारीगरों की 3000-3500 रुपये। सौ से ज्यादा मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 30 के ही हैं।''

क्या-क्या गलत है ....

आप मजदूरों की ही बातें क्यों छापते हैं ? हमारी बातें भी छापिये : मजदूर कामचोरी करते हैं। मशीनें खराब करते हैं। तोड़फोड़ कर नुकसान पहुँचाते हैं। अर्जेन्ट माल को लटका देते हैं। ऐन मौके पर ओवर टाइम पर रुकते नहीं और बहाने बना कर छुट्टी कर लेते हैं। सरल काम को ठीक से करना सिखाने में भी 2-4-10 दिन लग जाते हैं और तभी छोड़ कर दूसरी जगह चले जाते हैं ....

हम छोटी फैक्ट्री वालों की परेशानियाँ बहुत हैं। मण्डी में होड़ बहुत ज्यादा है। चीन का माल बहुत सस्ता है। बड़ी कम्पनियों से यहाँ हम प्रतियोगिता नहीं कर सकते। क्वालिटी में उनका मुकाबला करना भारी पड़ता है। बैंकों से कर्ज लिया है। तैयार माल लेने वाली पुरानी पार्टियों को बनाये रखना है और नई पार्टियाँ बनानी हैं। कभी अर्जेन्ट माल के लिये मारामारी तो कभी काम कम होने का रोनाधोना। न किसी को रखना आसान है और न किसी को निकालना आसान। किसी से भी काम करवाना तो बहुत-ही मुश्किल है। पार्टियों को समय पर माल देने के लिये जनरेटरों का इस्तेमाल करना बहुत महँगा पड़ता है। पार्टियों से पेमेन्ट वसूलना.....

हर समय सौ झँझट रहते हैं। आपने हमारी कम्पनी के बारे में छाप कर परेशानियाँ बढा दी हैं। श्रम विभाग ने छापा मारा। उप श्रमायुक्त सख्ती से पेश आई और बोली कि मजदूरों को कम से कम 3510 रुपये वेतन तो दो ही। जिन्हें हम माल देते हैं वे कहने लगे हैं कि अखबारों में आने लगा है कि तुम मजदूरों को तनखा कम देते हो, हम तुम्हारा माल नहीं लेंगे। सरकारी अधिकारी-कर्मचारी तो हर समय लेने के फेर में रहते हैं। हम किस-किस को दें ? आपने हमें ई.एस.आई., पी.एफ., एक्साइज वालों की नजरों में ला दिया है। कितना टैक्स दें ! अखबार में अपनी बातें देख कर मजदूर भी भड़कते हैं। सोच-सोच कर रात को नींद नहीं आती.....

फैक्ट्री लगाने में बहुत फायदा है सोच कर मैंने नौकरी छोड़ी..... और मैंने वकालत छोड़ी......

क्या-क्या गलत है ? ड्युटी 12 घण्टे ....

4 घण्टे का ओवर टाइम देते हैं !

तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम नहीं का कानून है। आप तो एक महीने में ही 100 घण्टे से ज्यादा.....ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करने का कानून है। करते हैं क्या ?

सब कम्पनियाँ सिंगल रेट से ओवर टाइम की पेमेन्ट करती हैं। हम भी सिंगल रेट से देते हैं। दुगुनी दर से भुगतान करने पर कम्पनी चल ही नहीं सकती। डबल रेट से देने पर हमें बचेगा क्या ?

ई.एस.आई. 100 में 30 मजदूरों की ही

काम ज्यादा होने पर हम मजदूर भर्ती करते हैं और काम कम होने पर निकाल देते हैं। महीना-बीस दिन के लिये किसी की ई.एस.आई. करवाने का क्या फायदा ? फिर, मजदूर स्वयं कहते हैं कि ई.एस.आई. में अच्छी दवाइयाँ नहीं मिलती। जगह-जगह लम्बी-लम्बी कतारें लगानी पड़ती हैं। पूरा दिन खराब हो जाता है, दिहाड़ी मारी जाती है। डॉक्टरों के नखरे ऊपर से। ई.एस.आई.

होने से तो ना होनी ही भली....

100 में 30 मजदूरों की ही पी.एफ....

मजदूर खुद ही कहते हैं कि इतनी कम तनखा में उनका गुजारा मुश्किल से होता है इसलिये तनखा से पी.एफ. मत काटो। फण्ड का फार्म भरने, जमा करने, निकालने के लिये बैंक खाता हो.... कई झँझट हैं। इन लफड़ों से तो अच्छा है ई.एस.आई., पी.एफ. नहीं होना ताकि कम से कम तनखा तो पूरी मिले। इसलिये हम.....

लेकिन फैक्ट्री में काम कर रहे किसी मजदूर की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं होने का मतलब तो यह है कि वह मजदूर फैक्ट्री में होते हुये भी फैक्ट्री में नहीं है।

फैक्ट्री बन्द करने में क्या लगता है। हम एक दिन में कम्पनी बन्द कर दें। लेकिन हम चाहते हैं कि फैक्ट्री चलती रहे। हम मजदूरों को रोटी दे रहे हैं। उनके बच्चे इस कम्पनी के पीछे पल रहे हैं। हमें ऊपरवाला रोटी दे रहा है। हम यह सोच कर जैसे-तैसे फैक्ट्री चला रहे हैं कि हम भी कुछ लोगों को रोटी दे रहे हैं। इससे हमारी आत्मा को तसल्ली होती है।

फैक्ट्री रिपोर्ट

तेग बहादुर ओवरसीज वरकर : ''पहलादपुर से एफ-23 ओखला फेज-1, दिल्ली में लाई गई फैक्ट्री में डायरेक्टर पहुँची और मजदूरों से कागजों पर हस्ताक्षर करने को कहा। किस पर दस्तखत करवा रहे हैं यह वरकर पढने लगे तो मैनेजमेन्ट ने पढने नहीं दिया और बिना पढे हस्ताक्षर करने को कहा। इस पर एतराज बढे और खींचातान होने लगी। डेढ सौ मजदूरों ने मैडम और स्टाफ को घेर लिया। जिन दो-चार के हस्ताक्षर करवा लिये थे वे कागज वापस कर और इंग्लैण्ड से 18 मार्च को आ कर मैनेजिंग डायरेक्टर द्वारा मामला निपटाने की कह कर मैडम फैक्ट्री से निकल पाई। वर्षों से कम्पनी में काम कर रहे 150 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। मैनेजिंग डायरेक्टर चड्ढा 15 मार्च को ही फैक्ट्री पहुँच गये। नियम-कानून अनुसार फैक्ट्री चलाने के लिये ई.एस.आई. व पी.एफ. फार्म भरने की बात समझाने लगे तो साहब को सुन रहे मजदूरों ने उन्हें घेर लिया और वर्षों से किये काम का हिसाब माँगने लगे। डेढ सौ से बात नहीं हो सकती, पाँच को बात करने डी-120 भेजो कह कर किसी तरह साहब एफ-23 से निकले। बिना ई.एस.आई. व पी.एफ. जिन्हें काम करते 4 वर्ष से अधिक हो गये थे उन्हें एक महीना प्रतिवर्ष और 4 वर्ष से कम वालों को 15 दिन प्रतिवर्ष की तनखा हिसाब में देने को साहब तैयार हुये। श्रम विभाग के अधिकारी के सामने पैसे दे कर कम्पनी ने एफ-23 का मामला रफा-दफा किया।

'' तेग बहादुर ओवरसीज की डी-120 व 121 ओखला फेज-1 में मुख्य फैक्ट्री है और इसमें 200 मजदूरों के ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर 75 के नहीं हैं। ओवर टाइम का भुगतान कानून अनुसार दुगुनी दर से, 20 प्रतिशत बोनस, हिन्दू-मुस्लिम दोनों त्यौहारों पर साँझी छुट्टी, जिन 75 की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं उन पर यह लागू करने की माँगें मजदूरों ने मैनेजमेन्ट के सम्मुख रखी। मैनेजिंग डायरेक्टर द्वारा माँगें नहीं माने जाने पर 18 मार्च को अनुरोधों-दबावों के बावजूद एक भी मजदूर ओवर टाइम पर नहीं रुका। फिर हिन्दू त्यौहार पर सब मुसलमान मजदूरों ने भी छुट्टी की। मैनेजिंग डायरेक्टर ने सिख धर्म की कसम खाई और हिन्दू तथा मुसलमान धर्मों की दुहाई देते हुये सब मजदूरों की मीटिंग ली पर वरकरों ने साहब की बातों को अनसुना कर दिया। जाँच करने ई.एस.आई. अधिकारी फैक्ट्री आये तो मजदूरों ने उन्हें बहुत खरी-खरी सुनाई। ऐसे में एफ-23 से सब मजदूरों को निकालने के बाद मैनेजमेन्ट डी-120 व 121 में वैसा ही करने की जुगत भिड़ा रही है..... 31 मार्च को 5 दिन फैक्ट्री बन्द करेंगे; नियम-कानून से नये सिरे से चलायेंगे; फिर सब को रख लेंगे; माल की माँग बहुत है; अब तक का हिसाब ले लो की बातें कम्पनी की तरफ से हैं। कई मजदूर न्यायालयों के चक्करों के डर से तो कुछ मजदूर इस माहौल में इस हिसाब के साथ पीछे का हिसाब झटक लेने का मौका देख रहे हैं। और, साँय 5 बजे बाद श्रम विभाग के किसी अधिकारी के पास चुन-चुन कर मजदूरों को ले जा कर कम्पनी ने हिसाब देना शुरू कर दिया है।''

फरीदाबाद में :

ब्ल्यू फोरजिंग मजदूर : '' प्लॉट 10 सैक्टर-25, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 12 ठेकेदारों के जरिये रखे 250 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में जे सी बी के गियर बनाते हैं। बहुत गर्म और खतरनाक काम है। कई घड़ियाँ लगी हैं। पाँव बचा कर काम करना पड़ता है। दस्ताने एक दिन में ही फट जाते हैं पर देते सप्ताह में एक बार ही हैं। काम के लिये भारी दबाव रहता है, फोरमैन हर समय सिर पर खड़े रहते हैं। बस काम-काम-काम ..... भोजन अवकाश नहीं होता, जैसे-तैसे खाना खा कर काम में लग जाना पड़ता है। पीने का पानी खारा है। लैट्रीनें इतनी गन्दी रहती हैं कि मुँह पर कपड़ा बाँध कर जाना पड़ता है। चोट लगने पर प्रायवेट में उपचार करवा कर निकाल देते हैं यह कह कर कि यहाँ काम करना तुम्हारे बस का नहीं है। हैल्परों को 2400 और ऑपरेटरों को 2400-3000 रुपये तनखा ठेकेदार देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से। ब्ल्यू फोरजिंग की सैक्टर-25 में ही प्लॉट

12 और 13 में भी फैक्ट्रियाँ हैं और वहाँ भी ऐसी ही हालात हैं।''

स्टैन्डर्ड इलेक्ट्रिक वरकर : '' एन एच 1 एच/16 स्थित कम्पनी फिलिप लाइट, एल एण्ड डी स्विचगियर, रैलिसन केबल्स की थोक विक्रेता है। यहाँ वरकर सुबह 9 से रात 9 तक काम करते हैं, रात 11-12 तक रोक लेते हैं। साप्ताहिक अवकाश भी कभी-कभार ही। ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं देते। महीने के 3000-4000 रुपये देते हैं और बीमारी के कारण नहीं पहुँचने पर दिहाड़ी काट लेते हैं। कम्पनी के कर्ता-धर्ता आर. के. अग्रवाल भारत विकास परिषद, अग्रवाल महासभा, राजस्थान संघ, रोटरी-लायन्स क्लब आदि के पदाधिकारी हैं।''

पी सी एम गारमेन्ट्स मजदूर : '' संजय कॉलोनी सैक्टर-23 में नवचेतना अस्पताल के नीचे कब्र में स्थित फैक्ट्री में काम करते हम 150 मजदूरों में किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। सुबह 9 से रात 10 की रोज ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2000 और कारीगरों की 3000 रुपये। कम्पनी 13 घण्टे कार्य के दौरान एक कप चाय भी नहीं देती। हम अपनी परेशानियाँ डायरेक्टर से कहते हैं तो साहब गाली देता है।''

मकास ब्रेकशू ऑटोमोटिव मजदूर : ''प्लॉट 111 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 11 से 23 फरवरी की ले-ऑफ के बाद हम 25 को ड्युटी के लिये पहुँचे तो गेट पर कम्पनी बन्दी की सूचना चिपकी पाई। क्लच ऑटो समूह की इस कम्पनी का नाम पहले रेबेस्टोस था।

'' हम श्रम मन्त्री के घर गये। उन्होंने श्रम अधिकारी और श्रम उपायुक्त को लिखा। श्रम विभाग में 26 फरवरी, 4-12-14 मार्च की तारीखें पड़ चुकी हैं। तीन और 8 मार्च के बीच अपने प्रभाव का प्रयोग कर क्लच ऑटो अधिकारियों ने हम में से 9 को प्रतिवर्ष 40 दिन के पैसे अनुसार हिसाब दे दिया। श्रम उपायुक्त, श्रम अधिकारी, कम्पनी डायरेक्टर अनुज मेहता, क्लच ऑटो का परसनल मैनेजर आज 14 मार्च को फैक्ट्री आये और नौकरी भूल जाओ की बातें की। श्रम उपायुक्त ने हिसाब में कुछ पैसे बढाने की कह कर 19 मार्च की तारीख दी है।

''घाटे को कम्पनी बन्द करने का कारण बताया जा रहा है जबकि इन 3 वर्षों में बोनस 18 से 19 कर दिवाली 07 पर 20 प्रतिशत दिया गया। एस्बेसटोस पर पाबन्दी के कारण उत्पादन नहीं हो सकता की दलील थोथी है क्योंकि यहाँ फरीदाबाद में ही हैदराबाद इन्डस्ट्रीज में बड़े पैमाने पर एस्बेसटोस उत्पादन में प्रयोग किया जा रहा है।

'' मकास-रेबेस्टोस में भारी प्रदूषण में हम 40 स्थाई तथा 250-300 कैजुअल वरकर क्लच फेसिंग और ब्रेक लाइनिंग का उत्पादन करते थे। मैनेजमेन्ट ने दिसम्बर 06 में कैजुअलों को निकालना शुरू किया और नवम्बर 07 में वे 15-20 ही बचे थे। मार्च 07 से कम्पनी ने गुड़गाँव में टी के डब्लू और नोएडा में ब्रेकवैल फैक्ट्रियों से अपना कार्य करवाना आरम्भ किया। तभी से यहाँ कार्य ढीला — अप्रैल 07 में यहाँ से मशीनें उठाने की बातें हुई थी। कारणों का हमें ठीक से पता नहीं पर परिणाम है हमारी नौकरियाँ जाना।''

सेक्युरिटी गार्ड : ''सैक्टर 9-10 डिवाइड रोड़ पर कार्यालय वाली पैन्थर सेक्युरिटी कम्पनी भर्ती के समय 8 घण्टे ड्युटी पर महीने के 3640 रुपये बताती है पर वास्तव में 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3000-3500-4000 रुपये देती है। हस्ताक्षर 5500 रुपये पर करवाते हैं। वर्दी के 1100 और जैकेट के 500 रुपये लेते हैं — जूते नहीं देते। गाली देते हैं। करीब 500 गार्ड 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई.एस.आई., पी.एफ. और एच एस के नाम से हर महीने 6 हाजिरी काटते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरते।''

प्रणव विकास मजदूर : ''45-46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में रात 11¼ से अगले रोज सुबह 7¼ वाली शिफ्ट में भोजन अवकाश नहीं देते। रात को मात्र एक चाय। पूर्ण उपस्थिति के लिये कम्पनी प्रतिमाह 200 रुपये देती है पर एक दिन मात्र 5 मिनट की देरी पर यह 200 काट लेती है। सुपरवाइजर बदतमीजी करते हैं। पेन्ट शॉप में सिर पर गन्दी साड़ी बाँधनी पड़ती है और 2-3 रुपये का सस्ता मास्क जो प्रतिदिन देना चाहिये वह 15 दिन में देते हैं। पेन्ट बूथ की सफाई नहीं करवाये जाने के परिणामस्वरूप पेन्ट हमारे अन्दर जाता है।''

हरियाणा ग्लोबल वरकर : '' 5 बी नोरदर्न कम्पलैक्स, 21/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 80 पावर प्रेस ऑपरेटर 12 घण्टे की एक शिफ्ट में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। प्रेस ऑपरेटर की तनखा 2600 रुपये है पर हस्ताक्षर 3800 पर करवाते हैं। उपस्थिति कम दिखा कर ई.एस.आई. व पी.एफ. 2600 पर काटते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और कहते हैं कि पी.एफ. रोहतक में जमा होता है — नौकरी छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरते। हैल्परों की तनखा 2200 रुपये है और उन से हस्ताक्षर नहीं करवाते।'' ***डी पी ऑटो मजदूर :*** ''प्लॉट 228 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हम 150 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में सोनालिका, महिन्द्रा, पंजाब ट्रैक्टर्स के पुर्जे बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 1800 रुपये है पर हस्ताक्षर 3510 पर करवाते हैं। ऑपरेटरों का वेतन 2800-2900 रुपये। ई.एस.आई. कार्ड 150 में 4-5 को ही दिये हैं।''

सामान्य हैं फैक्ट्रियों में बेगार और बन्धुआ मजदूरी

भारत सरकार के उच्चतम (सर्वोच्च) न्यायालय का निर्णय: *संविधान के अनुच्छेद 23 के अनुसार राज्य अथवा केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम तनखा किसी मजदूर को देना बेगार लेना है। जिन मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम तनखायें दी जा रही हैं वे बन्धुआ मजदूर हैं। विधान-संविधान द्वारा बेगार तथा बन्धुआ मजदूरी प्रतिबन्धित हैं।*

●आई आई टी कानपुर, दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय यहाँ ज्ञान उत्पादन के प्रमुख केन्द्रों में हैं। यह तीनों भारत सरकार के संस्थान हैं।

— आई आई टी कानपुर के कुछ छात्रों ने 1999 में किये एक सर्वेक्षण में पाया कि संस्थान परिसर में कोई भी ठेकेदार सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी मजदूरों को नहीं दे रहा था।

— दिल्ली विश्वविद्यालय में 2004 में 20 स्थानों पर 1500 स्त्री-पुरुष मजदूर 28-30 करोड़ रुपये के निर्माण-मरम्मत कार्य में लगे थे। कुछ छात्रों, कर्मचारियों व अध्यापकों द्वारा गठित ''मजदूरों के अधिकार के लिये विश्वविद्यालय समुदाय'' ने पाया कि सब मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे गये थे और सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी मजदूरों को नहीं दे रहे थे।

— जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय परिसर में बेगार और बन्धुआ मजदूरी का विरोध उभरने पर विश्वविद्यालय प्रशासन ने जून 2007 में कुछ छात्रों को सजायें दी। जे एन यू परिसर में निर्माण कार्य, पुस्तकालय, माली, सफाई कर्मी, सुरक्षा गार्ड, नये भोजनालयों में कर्मी ठेकेदारों के जरिये रखे गये हैं और इन मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता।

आकाशवाणी यानी ऑल इण्डिया रेडियो पर ''मजदूर दिवस'' पहली मई 08 को दोपहर समाचार: दिल्ली में सरकार द्वारा निर्धारित दैनिक न्यूनतम वेतन 140 रुपये है पर आकाशवाणी संवाददाता ने जिन मजदूरों से बात की उन सब ने बताया कि 80-85 रुपये दिये जाते हैं।

●असीम निर्लज्जता अथवा डरावनी हकीकत परोस कर निष्क्रिय करने की साजिश या फिर डगमग वर्तमान में दरारें की चर्चा यहाँ नहीं करेंगे। ईंट-भट्ठों, पत्थर खदानों से जब-तब अजूबों के तौर पर पेश किये जाते बन्धुआ मजदूरों की बात भी यहाँ नहीं करेंगे। आईये एक नजर दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में फैक्ट्री उत्पादन पर डालें।

पहले नियम-कानून अनुसार ब्लॉक, सैक्टर, फेज वाले नियमित कारखाना क्षेत्र लेते हैं। ओखला औद्योगिक क्षेत्र दिल्ली में ऐसा ही स्थान है। गुड़गाँव में उद्योग विहार भी ऐसी ही जगह है। उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा दिल्ली से सटे प्रमुख उद्योग स्थल हैं। फरीदाबाद तो है ही कारखानों का शहर।

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा में कारखानों के लिये निर्धारित स्थानों पर लगी फैक्ट्रियों में काम करते कुल मजदूरों में से 70-75 प्रतिशत मजदूरों को आज दस्तावेजों में दिखाया ही नहीं जाता। इन 70-75 प्रतिशत मजदूरों को सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिये जाते। जिन मजदूरों के नाम कम्पनी तथा सरकार के दस्तावेजों में दर्ज किये जाते हैं उन में भी कईयों से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन पर हस्ताक्षर करवाये जाते हैं पर पैसे कम दिये जाते हैं। हफ्ता-दस दिन फैक्ट्री में काम के बाद निकालने अथवा छोड़ने पर किये काम के पैसे आमतौर पर नहीं दिये जाते। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा में फैले राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में कारखानों के लिये नियमित स्थानों पर पंजीकृत फैक्ट्रियों में 75-80 प्रतिशत मजदूरों को सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिये जाते।

दिल्ली और फरीदाबाद में ऐसे क्षेत्रों की भरमार है जो औद्योगिक उत्पादन के लिये निर्धारित नहीं हैं पर जहाँ बड़ी सँख्या में कारखाने हैं। आज फैक्ट्री उत्पादन का उल्लेखनीय हिस्सा इन अनियमित क्षेत्रों में होता है। ओखला, उद्योग विहार, नोएडा, फरीदाबाद में फैक्ट्रियों के लिये नीति-योजना बनाने वालों ने इन कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के निवास के लिये कोई भी स्थान निर्धारित नहीं किये हैं। ऐसे में अनियमित बस्तियों में निवास मजदूरों पर थोप दिया गया है और ..... और इन बस्तियों में रात-दिन वर्कशॉपों-फैक्ट्रियों का ताण्डव। खैर। तथ्य यह है कि अनियमित क्षेत्रों में होते औद्योगिक उत्पादन में कार्यरत 95-98 प्रतिशत मजदूर दस्तावेजों में अदृश्य रहते हैं। दिल्ली, फरीदाबाद में अनियमित क्षेत्रों में वर्कशॉपों-कारखानों में काम

करते 90-95 प्रतिशत मजदूरों को सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिये जाते।

> इस समय 8 घण्टे प्रतिदिन कार्य और साप्ताहिक छुट्टी पर अकुशल श्रमिक (हैल्पर) के लिये मासिक निर्धारित न्यूनतम वेतन उत्तर प्रदेश में 2699 रुपये, हरियाणा में 3535 रुपये, दिल्ली में 3633 रुपये हैं।

और, मजबूरी के जले पर नमक छिड़कने के लिये मानदेय। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन का भी आधा, तिहाई, चौथाई वेतन मानेदय के नाम से देने में सरकारें अगुआई कर रही हैं।

●बेगार सामन्ती प्रथा (भूदास प्रथा) का आधार थी। मेहनतकशों को अनेक बन्धनों में जकड़ा गया था। मेहनतकशों से उपज का एक हिस्सा, श्रम का एक भाग जन्मजात अधिकार के तौर पर किलों-महलों वाले वसूलते थे। मण्डी के ध्वजवाहकों ने मुफ्तखोरी के विरोध का नारा बुलन्द किया। व्यापारियों ने इस हाथ ले उस हाथ दे को स्वतन्त्रता का परचम घोषित किया। भूदासों का बड़ा हिस्सा दस्तकारों-किसानों में तब्दील हुआ। क्रूरता में, दमन-शोषण में सामन्तों को बहुत पीछे छोड़ते मण्डी के प्रतिनिधियों ने कई पुराने बन्धनों को तोड़ा तो कई को बनाये रखा और अनेक नये बन्धनों की रचना की। बेगार प्रथा का तख्ता पलटने वाले व्यापारियों का पराक्रम दासों के व्यापार और बन्धुआ मजदूरों के जरिये विश्व मण्डी के निर्माण में फलीभूत हुआ।

विश्व मण्डी मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन का आधार बनी। वर्ल्ड मार्केट मजदूरी प्रथा का आधार बनी। व्यापारियों के भ्रष्टाचार, क्रूरता, दास व्यापार, बन्धुआ मजदूरी की भर्त्सना करती उत्पादन की नई पद्धति ने कम विकास को इनका कारण बताया। भाप-कोयला आधारित मशीनों के जरिये अपने को स्थापित करती पद्धति ने प्रगति और विकास को हर मर्ज की दवा घोषित किया। हर बन्धन को काटती, प्रत्येक आसरे को ध्वस्त करती प्रगति-विकास की गाड़ी ने मजदूरों की स्वतन्त्र उपलब्धता को मजदूरों की स्वतन्त्रता के तौर पर महिमामण्डित किया। और, प्रगति-विकास के रथ ने पृथ्वी को इस कदर रौंदा है कि इसके सम्मुख विगत के दमन-शोषण-अत्याचार बहुत-ही फीके हैं।

●बन्धनों से मुक्ति और आसरों का ध्वंस मजदूरों की शोषण के लिये उपलब्धता से जुड़े हैं। बेगार और बन्धुआ मजदूरी से राहत की थोड़ी साँस भर चन्द क्षेत्रों में कुछ मजदूरों ने ली ही थी कि अधिकाधिक मेहनतकश अथाह दलदल में धँसने लगे।

भूदासों से किसानों-दस्तकारों में परिवर्तित समूह बेगार से मुक्त हुये। लेकिन निजी व परिवार के श्रम द्वारा मण्डी के लिये उत्पादन करने वाले किसानों-दस्तकारों के स्वतन्त्र होने के भ्रमों को व्यापारियों के दबदबे के दौर में ही अनेक बन्धनों ने झीना कर दिया था। और, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन तो दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत लिये है।

इन दो सौ वर्षो में मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन संसार-व्यापी हो गया है। संग-संग इन दो सौ वर्ष में दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत-सामाजिक हत्या का सिलसिला सम्पूर्ण पृथ्वी पर बढता आया है। मेहनतकशों की बढती सँख्या मजदूरों में परिवर्तित होती आई है। मजदूरों में बदलते तबाह दस्तकार-किसान और नित नई मशीनों द्वारा मजदूरों की माँग-आवश्यकता कम करना ! यह प्रगति-विकास की प्रक्रिया का परिणाम है।

इस प्रक्रिया ने आज हालात ऐसे बना दिये हैं कि जहाँ एक मजदूर की जरूरत है वहाँ एक सौ उपलब्ध हैं। यह स्थिति मजदूरों की मजबूरी इस कदर बढा देती है कि किन्हीं भी शर्तों पर काम करने को बढती सँख्या में मजदूर उपलब्ध हो जाते हैं। मजदूरों की बढती मजबूरी बढती दयनीयता तो लिये ही है, यह वर्तमान समाज व्यवस्था के लिये अत्यन्त घातक भी है। सब सरकारें, सब न्यायालय, सब ज्ञानी-विज्ञानी इस हकीकत से परिचित हैं पर इसके सम्मुख असहाय हैं।

बद से बदतर हो रहे हालात के सामने खड़े मजदूरों को इसलिये सरकार, न्यायालय, ज्ञानी-विज्ञानियों को किनारे छोड़ खुद सोचना होगा कि क्या करें।

(जानकारियाँ पी.यू.डी.आर. दिल्ली के प्रकाशन ''उजड़े हुये लोग : जे.एन.यू. में ठेकेदारी प्रथा और मजदूरों के शोषण पर एक रिपोर्ट'' से ली हैं। सम्पर्क: पी.यू.डी.आर. द्वारा शर्मिला पुरकायस्थ, 5 मिरांडा हाउस टीचर्स फ्लैट्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली—110007)

फैक्ट्री रिपोर्ट

लिलिपुट किड्स वीयर मजदूर : '' कम्पनी की ए-185, डी-3, डी-195 ओखला फेज-1, एक्स-59 ओखला फेज-2, तुगलकाबाद और बी-63 बदरपुर बोर्डर, दिल्ली स्थित फैक्ट्रियों में सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी तो पूरे वर्ष होती ही है, लगातार सुबह 9 से रात 12 बजे तक भी काम होता है। हाँ, रविवार को सुबह 9 से साँय सवा पाँच तक ही।

''19 मार्च को कम्पनी की बी-63 बदरपुर बोर्डर स्थित फैक्ट्री में कोई जाँच दल पहुँचा। कम्पनी की सब फैक्ट्रियों में सूचना फैली। सब फैक्ट्रियों में साँय 6 बजे छुट्टी कर दी जबकि रात 12 बजे छोड़ते थे। अगले दिन, 20 मार्च को सब जगह रात 8 बजे छुट्टी की। होली के दिन, 21 मार्च को सुबह 9 से दोपहर 1 बजे तक काम हुआ। और, 24 मार्च से सब पुराने ढर्रे पर। जबकि चर्चा थी कि जाँच दल कम्पनी को कह गया है कि सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन तो कम से कम दो और ओवर टाइम करवाते हो तो पैसे दुगुनी दर से दो अन्यथा फैक्ट्रियों पर ताले लगा देंगे.....

''19 अप्रैल को जाँच के लिये एक मैडम लिलिपुट किड्स वीयर की ओखला फेज-1 में ए-185 स्थित फैक्ट्री पहुँची। वह सुबह सवा नो से साँय 4½ तक फैक्ट्री में रही। चारों मंजिलों पर गई। सब लाइनों में घूमी। पूछताछ के लिये कुछ मजदूरों को कैन्टीन ले गई। न्यूनतम वेतन नहीं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से.. ... रोज 12 घण्टे कार्य पर 26 दिन के धागा काटने वाले पुरुष मजदूरों को 3000 और महिला मजदूरों को 3400 रुपये, पैकिंग वालों को 3200, प्रेसमैन को 3940, चैकर को 4500 रुपये और सिलाई कारीगरों को 18 रुपये प्रति घण्टा। ए-185 फैक्ट्री में 500 टेलर हैं पर अब भी 100 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। मैडम के दौरे का असर डी-3 फैक्ट्री में 19 अप्रैल को साँय 6 बजे छुट्टी में ही दिखा, बाकी सब जगह (ए-185 समेत) रात 9 बजे छुट्टी हुई।''

एक पत्र

भारत सरकार मजदूरों के लिये जो कुछ करने की घोषणायें करती है वे सब मीडिया तक ही रहती हैं। मीडिया वाले कहानियाँ इतनी बढा-चढा कर बना देते हैं कि मजदूरों को कुछ भी देने की जरूरत ही नहीं पड़ती। यही बात राज्य सरकार की है। आटा, दाल, चावल, तेल, सब्जी के भाव और न्यूनतम वेतन बेमेल हैं। और, सरकार द्वारा जो न्यूनतम वेतन निर्धारित है वह भी मजदूरों को मिले या न मिले, श्रम विभाग के लिये वेतन लागू हो जाता है। हर महीने श्रम विभाग के अधिकारी फैक्ट्री-फैक्ट्री जा कर अपना वेतन लेते हैं। सारी ट्रेड यूनियनें आँख बन्द कर सो रही हैं या अब उनके बस की बात नहीं है। आज सारी यूनियनें खत्म होने के कगार पर हैं। दोस्तो, अपना जीवनयापन हम कैसे करेंगे ? हमारा विचार है कि सब मिल कर एक नयी ज्योति पैदा कर सकते हैं। हम 20-20 की तादाद में एकत्र होने लगेंगे तो एक नया संसार बनने लगेगा। (खत हम ने छोटा कर दिया है।)

ई.एस.आई.

मजदूरों के कल्याण के नाम पर बनाई कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.) वास्तव में कम्पनियों को बरी करने के साथ-साथ भारत सरकार के लिये सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी भी है।

आमदनी अधिक और खर्च कम इस कल्याणकारी योजना का मूल मन्त्र है। वर्ष 2005-06 में भारत-भर से ई.एस.आई. ने 2410 करोड़ रुपये एकत्र किये थे और खर्च मात्र 1278 करोड़ रुपये किये। हरियाणा क्षेत्र में तो ई.एस.आई. और भी कमाल करती है। वर्ष 2005-06 में राज्य कर्मचारी बीमा निगम ने हरियाणा क्षेत्र से 121 करोड़ 62 लाख रुपये एकत्र किये और खर्च मात्र 41 करोड़ 65 लाख रुपये किये। और, अन्य विभागों की ही तरह ई.एस. आई. भी जो खर्च दस्तावेजों में दिखाती है उसका एक उल्लेखनीय हिस्सा रिश्वत आदि में जाता है। लेकिन तथ्य यह है कि कल्याणकारी ई.एस.आई. द्वारा वास्तविक लूट खुलेआम की जा रही है, दस्तावेजों में दर्शाई जाती है।

खर्च कम करने और मुनाफा बढाने के लिये कर्मचारी राज्य बीमा निगम का अचूक नुस्खा खर्च की सीमा बाँधना है। मजदूरों के कल्याण के नाम से एकत्र राशि में से हालात अनुसार चौथाई से आधी राशि खर्च करने की सीमा बाँध दी जाती है। बीमार मजदूरों की परेशानियाँ बढाना इसका एक परिणाम है। फरीदाबाद में ई.एस.आई. डिस्पैन्सरियों को एक उदाहरण के तौर पर लें। यहाँ खर्च कम करने के लिये 16 स्थानों पर चल रही डिस्पैन्सरियों को 8 स्थानों पर सीमित किया। कम स्थानों पर डिस्पैन्सरियाँ करना कर्मचारियों की सँख्या और कम करने का जरिया भी बना है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अपने स्वयं के नियमों के अनुसार फरीदाबाद में डिस्पैन्सरियों में 90 डॉक्टर, 90 फार्मासिस्ट, 90 क्लर्क, 180 चतुर्थ श्रेणी आदि कर्मचारी होने चाहियें। लेकिन अपने ही नियमों को अनदेखा कर ई.एस.आई. कारपोरेशन ने यहाँ 43 डॉक्टर, 43 फार्मासिस्ट, 36 क्लर्क, 60 चतुर्थ श्रेणी के पद निर्धारित किये हैं। और, इस समय फरीदाबाद में ई.एस.आई. डिस्पैन्सरियों में वास्तव में 32 डॉक्टर, 30 फार्मासिस्ट, 19 क्लर्क, 27 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत हैं ! ऐसी ही स्थिति अन्य कर्मचारियों के सन्दर्भ में है। और, रिकार्ड सोरटर तो किसी भी डिस्पैन्सरी में है ही नहीं !!

कतारों में खड़े रहें बीमार। धक्के और बदतमीजियाँ झेलें बीमार। मुनाफा बढाने में जुटी कल्याणकारी ई.एस.आई. ने फरीदाबाद में ठेकेदार के जरिये 70 लोगों को रख कर कल्याण की एक और नई शुरूआत कर दी है।

चक्रव्यूह मरने–मारने का

● स्वयं को दोष देना। अपने को खुद काटना। व्यक्ति का प्रतिदिन कई-कई बार मरना।

● आस-पास वालों को दोष देना। ईर्द-गिर्द वालों की टाँग खींचना। मनमुटाव और चुगली का बोलबाला।

● इस-उस समूह को दोषी ठहराना। समूहों का एक-दूसरे के विरुद्ध लामबन्द होना। अनेकानेक प्रकार के गिरोहों में टकरावों का बढ़ते जाना।

उपरोक्त को विश्व में वर्तमान की एक झलक कह सकते हैं। मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता समवेत स्वर धारण कर रही है।

क्या है मौलिक परिवर्तन ? कई पीढियों से हम इस प्रश्न से जूझ रहे हैं। अनगिनत प्रयास किये जा चुके हैं, अनेक कोशिशें जारी हैं। मन्थन, सामाजिक मन्थन आज विश्वव्यापी है। इस मन्थन में एक योगदान के लिये यहाँ यह चर्चा आरम्भ कर रहे हैं।

प्रकृति जटिल है। प्रकृति की अनबूझ पहेलियों ने हमारे आदिम पुरखों में अनेक देवी-देवता स्थापित किये थे। आदिम समुदायों की टूटन, मानवों में स्वामी और दास की उत्पत्ति ने प्रकृति से भी जटिल सामाजिक तानों-बानों की रचना आरम्भ की। पाँच-सात हजार वर्ष पहले शुरू हुई जटिलता आज ऐसी भूलभुलैया बन गई है कि हम में से कोई भी, कभी भी, कहीं भी खो सकती-सकता है।

कहाँ-कहाँ से बार-बार गुजरे, नये सन्दर्भों में गुजरे-गुजर रहे हैं : जीवन शाप-संसार मिथ्या-सन्यास, मरण का वरण-जन्म से मुक्ति, मोक्ष-स्वर्ग, जन्नत, बैकुंठ-.... विद्रोह, विप्लव, क्रान्तियाँ।

और, बद से बदतर होते हालात ने कुछ भी पवित्र नहीं छोड़ा है। जिन्हें समाधान सोचा था उन्हें समस्या पाया। नये समाधान और विकट समस्या निकले तो पुराने "समाधान" में लौटने की ललक....सब सद्इच्छाओं के बावजूद पन्थ, गुट, गिरोह मरने-मारने के चक्रव्यूहों की रचना करते, उन्हें पुष्ट करते लगते हैं।

ऐसे में इस-उस व्यक्ति अथवा यह-वह समूह की बजाय उस सामाजिक प्रक्रिया को केन्द्र में रख कर पड़ताल करना उचित लगता है जो हमें वर्तमान तक लाई है।

सब कुछ को फतह करने के फेर में सर्वस्व के विनाश की ओर अग्रसर इस सामाजिक प्रक्रिया का एक पहलू तेजी है। आइये तीव्र से तीव्रतर गति को थोड़ा कुरेद कर देखें।

रफ्तार की महिमामंडन के किस्से पुराने हैं। घोड़ों के बाद रेल भी अब पुरानी हो गई है। और, अन्तरिक्ष में ले जाने के लिये आवश्यक बाहरी गति से भी अधिक हमारे अन्दर की गति, हमारी आन्तरिक रफ्तार वर्तमान की प्रतीक है।

प्रश्न है : एक से दूसरे स्थान की दूरी कम समय में तय करना क्या हमारे जीवन को बेहतर बनाना है ? मन और मस्तिष्क की तीव्रता क्या जीवन्तता बढाती है ? और इन से जुड़े सवाल हैं : गति का उत्पादन कैसे होता है ? रफ्तार पैदा करने की कीमत क्या है?

सोचने-विचारने-मनन करने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में कुछ बातें यह हैं। बढती रफ्तार ने आज दुनियाँ मुट्ठी में ला दी है पर अगल-बगल के लोगों के बीच चौड़ी अथाह खाईयाँ बढ रही हैं। संसार-भर में जितने युद्ध हुये हैं उन सब में मारे गये लोगों की कुल सँख्या को सड़कों पर टक्करों में मरने वालों की तादाद चुनौती दे रही है। सड़कों की चपेट में मरने वालों की सँख्या हर वर्ष बढ रही है — वाहनों की बढती रफ्तार से भी तीव्र गति से मृतकों के आँकड़े बढ रहे हैं। कार्यस्थलों पर तीव्र से तीव्रतर गति जो अंग भंग और हत्यायें कर रही है उनके वास्तविक आँकड़े कम्पनियों तथा सरकारों की अति गोपनीय फाइलों में भी शायद ही हों। आज गति ने तन को अत्याधिक असुरक्षित बना दिया है। मन और मस्तिष्क की स्थिति तो और भी शोचनीय बन गई है। बढती रफ्तार की जरूरतें बचपन ही नहीं बल्कि शैशव काल को भी लील रही हैं। तीव्र से तीव्रतर होती गति वृद्धावस्था को बढाने के संग-संग युवावस्था में ही नाकारा बना रही है। तेज रफ्तार द्वारा अनिवार्य क्रिया इन्द्रियों पर नियन्त्रण बढाना कसता शिकंजा है, यह हमें किसी मुक्ति-मोक्ष में नहीं ले जा रहा। भोग के जरिये सन्तुलन बनाये रखने की सीमाओं से पार जा चुकी गति योग का सहारा ले कर चक्रव्यूह को और घातक बना रही है।

इस सिलसिले में गति का उत्पादन और भी विचारणीय है। बाहरी रफ्तार को पैदा करना पृथ्वी पर व्यापक फेर-बदल लिये है। इस प्रक्रिया में अनेक जीव योनियाँ नष्ट हो गई हैं, कई मिटने के कगार पर हैं और रोज कुछ जीव योनियाँ खत्म हो रही हैं। पृथ्वी पर अनेक रूपों-मिश्रणों में पदार्थ फैले हैं। इन्हें अशुद्ध करार दे कर इन से स्टील, ताम्बा, अल्युमिनियम, सीमेन्ट, यूरेनियम, पैट्रोल बनाने का ताण्डव शहरों के साथ जुगलबन्दी

में जो गुल खिला रहा है वे अपने आप में असहय हैं। और, गति जो गत अन्तरिक्ष की कर रही है उस पर गति के सारथी ज्ञानी-विज्ञानी भी दबी जुबान में चिन्ता जाहिर करने लगे हैं। रही मन की बात तो अनिश्चितता और असुरक्षा बढाती तीव्र गति आज हर व्यक्ति को असहाय बनाने के संग-संग बम में भी बदल रही है।

बढती सँख्या को फालतू बना कर कूड़े के ढेर में बदलती तीव्र गति ...... तेज रफ्तार जुटे हुओं के लिये ''अपना समय'' नहीं बढा रही। ''वक्त ही नहीं कट रहा'' के संग-संग '' किसी के पास समय नहीं है'' आम बात बन गई है।

कितनी गति, कैसी रफ्तार पर विचार करना बनता है। (जारी)

फैक्ट्री रिपोर्ट

बसन्त इण्डिया मजदूर : '' जी-4 बी-1 एक्सटैन्शन मोहन को ऑपरेटिव, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में काम करते 170 मजदूरों में किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर और मैनेजर गाली देते हैं, मारपीट करते हैं। हैल्परों की तनखा 2400-3500 रुपये। वेतन हर महीने देरी से — अप्रैल की तनखा आज 19 मई तक नहीं दी है।''

आर जी सी इन्डस्ट्रीज श्रमिक : सी-63/4 ओखला फेज-2,दिल्ली स्थित फैक्ट्री में ई.एस.आई. व पी.एफ. 30 स्टाफ और 70 स्थाई मजदूरों के ही हैं। ठेकेदार के जरिये रखे 350 वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, सिलाई कारीगर पीस रेट पर और बाकी सब मजदूरों को 8 घण्टे के 80 रुपये। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे जाते 6 महीने में ब्रेक वाले 65-70 मजदूरों की ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और तनखा 2800 रुपये।

'' आर जी सी फैक्ट्री में जेस्को, टोनाला, इन्जुआ, फ्लोट्स, निमुखी के लिये परिधान बनते हैं। कम्पनी वालों का मई-जुलाई में ओवर टाइम कम हो जाता है पर ठेकेदार के जरिये रखों का पूरे वर्ष 150-200 घण्टे प्रतिमाह ओवर टाइम। सुबह 9½ से रात 2 तक काम — महिला रात 2 बजे तक रुकने से इनकार करती है तो उसे नौकरी से निकाल देते हैं। स्थाई मजदूरों को ही गेट पास देते हैं — बाकी सब को एक फोन नम्बर। रात 2 बजे लौटने का प्रबन्ध महिला मजदूर भी स्वयं करें।

'' आर जी सी का मैनेजिंग डायरेक्टर रमणीक सिंह उप्पल रोज सुबह 8½ फैक्ट्री आता है और रात 8 बजे जाता है। स्टाफ के 30 लोगों के लिये कैन्टीन है पर 500 मजदूरों के लिये भोजन करने का स्थान भी नहीं है। ठेकेदार गाली देता है। जुलाई 07 में एक दिन स्थाई मजदूरों को छोड़ कर बाकी सब वरकरों को भोजन अवकाश से पहले फैक्ट्री से यह कह कर निकाला कि दिहाड़ी देंगे। दोपहर 2½ बजे जाँच वाले आये तो स्थाई के अलावा जो थोड़े रह गये थे उन्हें बाथरूमों में कर दिया।''

शार्क डिजाइन कामगार : ''बी-243 ओखला फेज-1, दिल्ली की बेसमेन्ट में फर्नीचर की फैक्ट्री है यहाँ कब्र में सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी के बाद, 11½ घण्टे काम करने के बाद के समय को ओवर टाइम कहते हैं। महीने में 10 दिन रात 11 बजे तक और 5 रोज रात 3½ बजे तक रोकते हैं। महीने में सिर्फ 2 दिन छुट्टी। रोज 11½ घण्टे पर 28 दिन के 4000-5500 रुपये देते हैं। और, जिसे कम्पनी ओवर टाइम कहती है उसके 12 घण्टे को एक दिहाड़ी मानती है। पौने दो सौ मजदूरों में एक की भी ई. एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। फैक्ट्री में पीने के पानी की बहुत दिक्कत है — ऊपर चल रही एक्सपोर्ट फैक्ट्री से बोतलों में लाते हैं और वो मना करते हैं। दो लैट्रीन, बहुत गन्दी, लाइन लगती है। हाथ-पैर धोने, नहाने के लिये मात्र एक नल। लकड़ी की चिराई, स्टील चमकाने, पेन्ट करने के कारण चारों तरफ बहुत गन्दगी रहती है। भोजन के लिये स्थान नहीं है, मशीनों की बगल में नीचे बैठ कर रोटी खानी पड़ती हैं। बेसमेन्ट में घुटन है, कब्र में साँस लेने में दिक्कत होती है।''

युवा मजदूर

एक्शन कन्स्ट्रक्शन इक्विपमेन्ट (ए सी ई) श्रमिक : ''दुधौला गाँव, पलवल में कम्पनी की नई फैक्ट्री से 150 ट्रैक्टर मण्डी में भेजे जा चुके हैं। रोज 12½ घण्टे की शिफ्ट में हम 70 मजदूर 5-6 ट्रैक्टर बनाते हैं। एक ने बीमार होने और दो ने शादी में जाने के लिये 28 अप्रैल की छुट्टी ली तो 29 अप्रैल से उन्हें ड्युटी पर नहीं लिया। इस पर 5 मई को हम सब फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। उत्पादन बन्द है और आज 7 मई को भी हम बाहर बैठे।

''ए सी ई कम्पनी ने स्वयं हमें भर्ती किया। एक महीना पूरा होने पर ए सी ई की वर्दी दी। गेट पास भी 25 अप्रैल तक ए सी ई के नाम से दिये। फिर अचानक कम्पनी हमें ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर कहने लगी। हमारे द्वारा काम बन्द करने के दूसरे दिन, 6 मई को पैन्थर सेक्युरिटी का एक बन्दा फैक्ट्री आया। बहुत आश्वासन दिये और अन्दर चलने को कहा तो हम ने निकाले हुये 3 को पहले लेने को कहा। अन्दर जा कर वह बाहर आया और बोला कि जो करना है करो, 3 को अन्दर नहीं लेंगे।

''दुधौला में ए सी ई फैक्ट्री में हमारे सम्मुख समस्या पर समस्या हैं। सुबह 9 से रात 9½ तक रोज जबरन रोकते हैं, रविवार को 8 घण्टे काम। रोज के ओवर टाइम के मात्र 60 रुपये और रविवार के 120। किसी दिन 2-3 घण्टे ही ज्यादा रोका तो उसके कोई पैसे

नहीं। फैक्ट्री मथुरा रोड़ से काफी दूर है और वरकर फरीदाबाद व पलवल से हैं। रात 9½ छूटने पर सुनसान क्षेत्र से पैदल मथुरा रोड़ पहुँचते हैं। हाथ देने पर जो ट्रक रुक जाते हैं उनसे लौटते हैं। रात 1 बजे घर पहुँचते हैं। पुलिस से परेशानी।

"ए सी ई ट्रैक्टर का सब काम फैक्ट्री में ही होता है, बस इन्जन चीन से आते हैं जिन पर नाम मिटा कर कम्पनी अपना छाप देती है। ट्राली पर रख कर सरकाते हुये उस पर काम होता है। सब जगह सब काम हाथों से — मात्र दो प्रेशर गन हैं। तनखा 3510-4000 रुपये। मात्र 3 पँखे हैं और धूप में भी काम करना पड़ता है। पीने का पानी गर्म। चोट लगने पर प्राथमिक उपचार भी गाँव जा कर मजदूर अपने पैसों से करवायें। स्टाफ के 60-70 लोग हर समय हमारे सिर पर खड़े रहते हैं — उनका काम बस गाली देने का है।

"5 मई को हम फैक्ट्री में नहीं गये तो टाइम ऑफिस वाले के बाद सी ई ओ जी. के. अग्रवाल आया और 3 को हफ्ता-दस दिन में लेने की कही। हमारे अन्दर नहीं जाने पर फिर परसनल हैड धमकाने आया : दारू पी कर ड्युटी करते हो, चोरी करते हो, आज से सब का गेट बन्द, लोकल हो कर दादागिरी करते हो, दो हजार में बाहर के रख लेंगे, पुलिस से मरोड़ निकलवा देंगे।

"हम दुधौला गाँव के लोगों से मिले। ए सी ई के बैक हो, सी एन सी, वैल्डिंग शॉप मजदूरों से मिले। दुधौला में हाई पोलीमर लैब व अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से बातें की। आज 7 मई को हम फैक्ट्री गये तो वहाँ पुलिस थी। हमें गेट पर नहीं बैठने दिया — कम्पनी की बदनामी होती है! हम एक खाली प्लॉट में बैठे तो वहाँ मैनेजमेन्ट के लोग धतीर थाने के ए एस आई को ले कर पहुँचे और बोले : पैसे वालों से नहीं लड़ सकते, समझौता कर लो, पकड़ कर अन्दर कर देंगे, तारीख भुगतते रहोगे.... हम में से एक ने तारीख भुगत लेंगे कहा तो ए एस आई उसे ले कर चलने लगा। हम सब साथ चले तो उसे छोड़ कर पुलिस वाला यह कह कर चला गया कि झगड़ा मत करना। स्टाफ के लोग आ-आ कर देख जाते हैं। एक अखबार वाला फोटो ले गया है। सी आई डी वाला रिपोर्ट ले गया है।

इल्पिया पैरामाउन्ट कामगार : "सैक्टर-59 पार्ट-बी झाड़सेंतली-जाजरू रोड़ स्थित फैक्ट्री में बरसों से काम कर रहे 80 कैजुअल वरकरों की तनखा 2500-3000 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और एक दिन छोड़ कर 36 घण्टे लगातार ड्युटी..... श्रम विभाग, श्रम मन्त्री, मुख्य मन्त्री को शिकायतें की।

"27 फरवरी को साँय 4 बजे श्रम विभाग की गाड़ी फैक्ट्री में आई। अधिकारी कार्यालय में गये और परसनल विभाग वाले कैजुअलों को बाहर निकालने लगे पर कई ने फैक्ट्री से निकलने से इनकार कर दिया। श्रम अधिकारी ने नाम लिखे, बातें सुनी और तनखा अपने सामने दिलवाने की कही।

"7 मार्च को श्रम अधिकारी इल्पिया पैरामाउण्ट फैक्ट्री आया तो कम्पनी ने पैसे की दिक्कत बता कर तनखा अगले दिन देने की कही। मैनेजमेन्ट ने 8 मार्च को 40 स्थाई मजदूरों को दिन की शिफ्ट में बुलाया और 80 कैजुअलों को रात की शिफ्ट में आने को कहा। श्रम अधिकारी ने 8 मार्च को अपने सामने जिन्हें तनखा दिलवाई वे स्थाई मजदूर थे..... पर कैजुअल वरकर फैक्ट्री गेट पर एकत्र हो गये थे। यह देख कर परसनल मैनेजर बोला कि कल आना, यह पैसे लो और जाओ चाय पीओ-समोसे खाओ, एक घण्टे बाद आना। मजदूर टले नहीं और श्रम अधिकारी फैक्ट्री से निकला तो घेर लिया। अगले दिन तनखा का आश्वासन। श्रम अधिकारी 9 मार्च को फैक्ट्री पहुँचा तो कम्पनी ने पैसे की दिक्कत बताई और फिर यही बात 10 मार्च को दोहराई तो श्रम अधिकारी ने धमकी दी। अन्ततः 11 मार्च साँय 5 बजे श्रम अधिकारी के सामने 80 कैजुअलों को 3510 रुप्ये तनखा दी और पे-स्लिप भी पर उसमें ई.एस.आई. व पी.एफ. नम्बर नहीं हैं। फरवरी माह के 200-300 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से 25 मार्च को अपने सामने दिलवाने की कह कर श्रम अधिकारी गया पर 25 को फैक्ट्री नहीं आया और 29 मार्च को कम्पनी ने 2500-3000 रुपये तनखा अनुसार ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से दिये।

"और फिर इल्पिया पैरामाउण्ट मैनेजमेन्ट ने कैजुअल वरकरों से हस्ताक्षर 3540 पर करवाये पर मार्च तथा अप्रैल की तनखायें 2500-3000 रुपये दी। एतराज पर मजदूर निकालने शुरू किये और चुन-चुन कर नई भर्ती आरम्भ की। रात 8½ बजे छूटने पर 15 अप्रैल को कुछ नये लोगो से मथुरा रोड़ पर किन्हीं का झगड़ा हुआ तब से कम्पनी ने उन्हें लाने-ले जाने के लिये वाहन का प्रबन्ध किया है। इस मामले में मैनेजमेन्ट ने कुछ स्थाई मजदूरों को पुलिस से गिरफ्तार करवा कर फैक्ट्री से बाहर भी किया हुआ है। इधर 12 मई को दो गाड़ियों में 10-12 लोग फैक्ट्री में आये। मैनेजर के कार्यालय में बैठ कर उन्होंने एक-एक कर कैजुअलों को बुला कर धमकाया — कम्पनी के कहे अनुसार चलो नहीं तो हाथ-पैर तोड़ देंगे।"

टेढापन
टेढेपन को बढाता है।
टेढेपन का उपचार
सीधापन है।

चक्रव्यूह मरने–मारने का: ऊर्जा, अधिक ऊर्जा (2)

✶स्वयं को दोष देना। अपने को खुद काटना। व्यक्ति का प्रतिदिन कई-कई बार मरना।

✶आस-पास वालों को दोष देना। ईर्द-गिर्द वालों की टाँग खींचना। मनमुटाव और चुगली का बोलबाला।

✶इस-उस समूह को दोषी ठहराना। समूहों का एक-दूसरे के विरुद्ध लामबन्द होना।अनेकानेक प्रकार के गिरोहों में टकरावों का बढ़ते जाना।

उपरोक्त को विश्व में वर्तमान की एक झलक कह सकते हैं। मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता समवेत स्वर धारण कर रही है।

क्या है मौलिक परिवर्तन? कई पीढियों से हम इस प्रश्न से जूझ रहे हैं।अनगिनत प्रयास किये जा चुके हैं, अनेक कोशिशें जारी हैं। मन्थन, सामाजिक मन्थन आज विश्व-व्यापी है। इस में एक योगदान के लिये यहाँ यह चर्चा कर रहे हैं।

ऊर्जा के कई रूप हैं। यहाँ हम काम के सन्दर्भ में ऊर्जा की बातें करेंगे।

चिड़िया काम नहीं करती। मनुष्य भी चिड़िया से भिन्न नहीं थे। सारतः यह काम है जिसने हमें अन्य जीव योनियों से अलग किया है। और, यह काम की प्रकृति रही है कि काम अधिक काम की माँग करता है।

काम के लिये ऊर्जा चाहिये। इसलिये ऊर्जा की माँग बढती जाती है। काम और ऊर्जा, अधिक काम-अधिक ऊर्जा एक चक्रव्यूह का निर्माण करते हैं।

आरम्भ में काम के लिए ऊर्जा की प्राप्ति माँसपेशियों के दोहन से हुई। बढते काम के लिये बढती ऊर्जा की पूर्ति लकड़ी-कोयला, गैस-तेल, जल-सौर-वायु के दोहन की राह परमाणु ऊर्जा में पहुँच चुकी है। पर्यावरण प्रदूषण तो संग-संग आया ही है, हालात प थ्वी पर जीवन मिटने के बन रहे हैं।

काम पर प्रश्न फिर उठायेंगे। कोयला, गैस-तेल, बाँधों से बिजली वाली ऊर्जा की चर्चा यहाँ नहीं करेंगे। ऊर्जा जो बढती आवश्यकता की पूर्ति कर देगी और जिसे साफ ऊर्जा के तौर पर प्रचारित किया जा रहा है उस परमाणु बिजली की वास्तविकता की एक झलक यहाँ देखिये। सामग्री मजदूर समाचार के मई 2006 अंक से ली है।

एटम बमों से अधिक खतरनाक हैं परमाणु बिजलीघर

झूठ बोलना और छिपाना सरकारों के चरित्र में है। अर्ध-सत्य सरकारों की सामान्य क्रिया का अंग है। आडम्बर और प्रतीक —दिन में मोमबत्तियाँ जला कर मृतकों को श्रद्धाँजलि और शान्ति के लिये प्रार्थनायें दमन-शोषण के तन्त्रों के कर्णधारों के कपट के संग-संग उनकी असहायता की भी अभिव्यक्ति हैं।

— 1914-1919 की महा मारकाट के बाद : और युद्ध नहीं ! 1939-45 की उससे भी महा मारकाट के बाद : आगे कोई युद्ध नहीं ! हीरोशिमा तथा नागासाकी में एटम बमों से हमले के बाद : फिर कभी नहीं .... एटम बम बनने ही नहीं देने, बन चुके एटम बमों को समाप्त करना ! और ..... और शान्ति/सुरक्षा के नाम पर एटम बमों, हाइड्रोजन बमों, भाँति-भाँति के परमाणु बमों के सरकारों द्वारा भण्डार बनाना। शान्ति ध्वज की वाहक भारत सरकार में सर्वसम्मति से उस व्यक्ति को राष्ट्रपति बनाया गया है जिसकी एटम बमों तथा उनके लिये वाहक वाहनों के निर्माण में अग्रणी भूमिका रही है। अमरीका-वमरीका सरकारों की बात छोड़िये, भारत सरकार द्वारा एटम बमों से युद्ध की तैयारी की एक झलक के लिये सेना के जनरलों के हाल ही में हुये सम्मेलन के बाद के प्रचार पर एक नजर डालिये : भारत सरकार ने बड़े पैमाने पर परमाणु और जैविक युद्धक कमान केन्द्रों की स्थापना को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुये स्वीकृति दे दी है ; 30 प्रतिशत टैंक परमाणु विकिरण के माहौल में काम करने के लिये तैयार किये जा रहे हैं; एटम बमों से युद्ध के लिये भारत सरकार की सेना ने अपनी योजना तथा रणनीति बनाने के उद्देश्य से कई स्तरों पर अभ्यास किये हैं ; सेना तीन विशिष्ट प्रक्षेपास्त्र युनिटों की स्थापना कर चुकी है ; सेना में परमाणु हथियार शामिल ; सेना को बड़े पैमाने पर परमाणु विकिरण रोधी पोशाकों की पूर्ति के लिये उनका निर्माण आरम्भ; जनरलों के सम्मेलन के अन्तिम दिन भारत के शीर्षस्थ परमाणु और जैविक वैज्ञानिकों ने जनरलों को परमाणु सुरक्षा कवच के इस्तेमाल तथा परमाणु कमान केन्द्रों की स्थापना के बारे में बारीकी से जानकारी दी ; वैज्ञानिकों ने जनरलों को परमाणु हथियारों की दिशा में भारत सरकार की प्रगति से अवगत कराया। (जानकारी 24. 4. 2006 के 'पंजाब केसरी' से)

— चिकित्सा के लिये, अनाज उत्पादन में वृद्धि के वास्ते, बिजली के लिये अनुसन्धान-प्रयोग-निर्माण उर्फ ''परमाणु ऊर्जा का शान्तिपूर्ण उपयोग'' सरकारों के एटम बमों के निर्माण के

लिये एक आवरण रहा है। लेकिन मण्डी-मुद्रा के दबदबे में तीव्र से तीव्रतर हो रहा पृथ्वी का दोहन मानवों के शोषण के लिये परमाणु ऊर्जा को अधिकाधिक उल्लेखनीय भूमिका में लाने लगा। परमाणु ऊर्जा से बिजली का निर्माण बेहद खतरनाक है, कई पीढियों तक घातक प्रभाव डालता है, परमाणु बमों का सतत विस्फोट-सा है (कानून अनुसार शोषण के समान है) परन्तु सरकारें तथ्यों को छिपाती रही और बढती सँख्या में परमाणु बिजलीघरों का निर्माण.... लेकिन 26 अप्रैल 1986 को चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर में हुये विस्फोट का यूरोप-व्यापी असर पड़ा। रूस, यूक्रेन तथा बेलारूस में पचास लाख लोग विकिरणों की चपेट में आये। पूरे पश्चिमी यूरोप में विकिरणों के धुँए का एक बादल बन गया था। एक लाख से अधिक कैंसर के अतिरिक्त मामले.... 1986 में सोवियत संघ के राष्ट्रपति रहे गोर्बाचोव ने अब, बीस वर्ष बाद ''प्रायश्चित'' के लिये विश्व की सशक्त सरकारों से अपील की है कि कम से कम 50 बिलियन डालर (करीब ढाई लाख करोड़ रुपये) की राशि वे चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर विस्फोट के पीड़ितों के लिये दें ताकि उनके लिये शुद्ध (विकिरण रहित) पानी और हवा का प्रबन्ध किया जा सके। यूरोप में 1986 के बाद परमाणु बिजलीघरों के विरोध ने व्यापक रूप लिया। परमाणु बिजलीघरों का कूड़ा-कचरा भी इस कदर खतरनाक है कि जर्मनी में लोग परमाणु बिजली घर के कूड़े-कचरे से लदी ट्रेन को अपने-अपने क्षेत्र से गुजरने से रोकने के लिये पुलिस से भिड़े..... चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर की घटना से सामने आये खतरों ने परमाणु बिजलीघर बन्द करने के लिये सरकारों पर दबाव बनाया और नये परमाणु बिजलीघरों के निर्माण पर लगाम लगी.... लेकिन फिर नये सिरे से ''साफ'' ऊर्जा की, परमाणु बिजलीघरों की वकालत खुल कर होने लगी है और भारत सरकार के राष्ट्रपति अग्रणी वकीलों में हैं। एटम बम व मिसाइल निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाने वाले यह वैज्ञानिक तथा शिक्षक भारत में इस समय परमाणु बिजलीघरों में बनती 2720 मेगावाट बिजली को बढा कर 50 हजार मेगावाट करने के लिये प्रचार अभियान में जुटे हैं।

उह कल्पना !

अन्तरिक्ष अभियान सरकारों के सैन्य अभियान हैं। यह अभियान कम्पनियों के औजार भी हैं। 'कोलम्बिया' अन्तरिक्ष यान से पहले 'चैलेन्जर' अन्तरिक्ष यान 1986 में ध्वस्त हुआ था। बाद में अमरीका सरकार के अन्तरिक्ष अभियान वैज्ञानिकों ने बताया था कि खुशकिस्मती से 'चैलेन्जर' द्वारा भेजे जा रहे सामान के तौर पर प्लूटोनियम को स्थगित कर दिया गया था। अगर.... अगर परमाणु कार्यक्रमों का वह कचरा अन्तरिक्ष यान के सामान में होता तो 'चैलेन्जर' का ध्वंस प्लूटोनियम को वायुमण्डल में बिखेर देता और इस प्रकार पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति की कैंसर से सम्भावित मृत्यु का एक प्रबन्ध कर जाता। अणु बम बनाना और अणु विद्युत उत्पादन अपने संग प्लूटोनियम जैसा खतरनाक कचरा लिये हैं। पृथ्वी पर इस कचरे को ठिकाने लगाना बेहद खतरनाक-बेहद महँगा पाने के बाद इसे अन्तरिक्ष में फेंकने का सिलसिला आरम्भ किया गया है। सम्भावनाओं का खेल खेलते वैज्ञानिकों ने लगातार दो अन्तरिक्ष यानों के ध्वंस की सम्भावना बहुत कम सोच कर 'चैलेन्जर' के तत्काल बाद वाले अन्तरिक्ष यान के सामान के तौर पर उस प्लूटोनियम को अन्तरिक्ष में भेजा। क्या 'कोलम्बिया' अन्तरिक्ष यान पर प्लूटोनियम जैसा कचरा था? अमरीका सरकार नहीं बतायेगी। दस-बीस वर्ष बाद मृत्यु की बारिश से हमें यान पर खतरनाक कचरा होने का पता चलना कैसा रहेगा? (फमस अक्टूबर 04 से)

और, बमों द्वारा सुरक्षा

मार्च 05 में अमरीका के टेक्सास प्रान्त में एक परमाणु बम लगभग फट गया था। यह बम जापान में हीरोशिमा नगर पर 1945 में गिराये एटम बम से सौ गुणा शक्तिशाली था। बाल–बाल टले इस महाविनाश के तथ्य को गुप्त रखा गया। बीस महीने बाद, फैक्ट्री में सुरक्षा के नियमों का उल्लंघन करने के आरोप में नवम्बर 06 में अमरीका सरकार ने परमाणु बम निर्माण करने वाली कम्पनी, बी डब्लू एक्स टेक्नोलोजीज पर 50 लाख रुपये का जुर्माना किया तब भयावह हालात की थोड़ी–सी जानकारी सामने आई है। परमाणु बमों के निर्माण वाली फैक्ट्री में काम करते तकनीकी वरकरों ने कार्य की खराब स्थितियों को लगभग हो गये विस्फोट के लिये जिम्मेदार ठहराया है। परमाणु बम बनाने वाली फैक्ट्री में प्रतिदिन 12 से 16 घण्टे कार्य करना अनिवार्य है, सप्ताह में 72–84 घण्टे एटम बम बनाने में खटना! अधिक बुरी सूचना यह है कि कम्पनी ने 2007 के लिये परमाणु बमों के उत्पादन के लक्ष्य में 50 प्रतिशत की वृद्धि की है। (फमस फरवरी 07 से)

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

फरीदाबाद में :

युनचेंग रोटोग्रेव्यूर मजदूर : ''प्लॉट 9 बी सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में प्रिन्टिंग रोलर बनते हैं और यहाँ काम करते 83 वरकरों में 34 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। एक रसोइया और 16 मैनेजर स्तर के चीन सरकार के नागरिक फैक्ट्री में ही बने वातानुकूलित कमरों में रहते हैं। पाँच मिनट देरी से पहुँचने पर आधे दिन के पैसे काट लेते हैं। एक दिन ड्युटी पर नहीं पहुँचने

पर तीन दिन ड्युटी किये के पैसे काट लेते हैं — फोन पर कारण बता देने के बाद भी। चौदह मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं, 3000-3200 रुपये तनखा। ओवर टाइम दिखाते ही नहीं जबकि महीने में 20 से 200 घण्टे होता है, भुगतान डेढ की दर से। भोजन के लिये स्थान नहीं, मशीनों के पास बैठ कर रोटी खाना। पीने का पानी साफ नहीं, ठण्डा नहीं। लैट्रीन गन्दी। हम मजदूरों द्वारा आवाज उठाने पर संसदीय सचिव के भाई के आदमी ने 12.11.07 को लिखित समझौता करवाया। दिवाली पर बोनस में 1000 रुपये दिये.... समझौता लागू करवाने के लिये हम मजदूरों ने दबाव डाला तो 13 जून को हमें जबरन फैक्ट्री से बाहर निकाल दिया। कम्पनी हमें हड़ताल पर बताने लगी — पुलिस और श्रम विभाग अधिकारी खुल कर कम्पनी के पक्ष में आ गये। एक बरखास्त, 4 निलम्बित, 3 वैसे ही बाहर कर दिये.... 24 जून से हम ने फैक्ट्री में काम शुरू कर दिया।''

एन.सी.बी. श्रमिक : '' मथुरा रोड़ पर गुडईयर फैक्ट्री के सामने केन्द्र सरकार की सीमेन्ट अनुसन्धान संस्थान है। यहाँ सन् 2001 तक कैजुअल वरकर संस्थान स्वयं भर्ती करती थी और तब 2500 रुपये मासिक वेतन देती थी। सन् 2002 से ठेकेदारों के जरिये वरकर रखने लगे और ठेकेदार दैनिक वेतन के हिसाब से महीने में तनखा देते हैं। संस्थान में शनिवार और रविवार की छुट्टी रहती है। इसलिये सुरक्षा गार्डों, माली और सफाई कर्मियों को छोड़ कर बाकी ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को महीने में 21-22 दिन के पैसे मिलते हैं। महीने में 2700-2800 रुपये तनखा बनती है जिसमें से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काट लेते हैं। होली-दिवाली की छुट्टियों की दिहाड़ी भी नहीं देते। संस्थान में सीमेन्ट व निर्माण सामग्री पर अनुसन्धान होता है और पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगलादेश, अफगानिस्तान से भी लोग प्रशिक्षण लेने आते हैं।''

ओरियन्ट फैन मजदूर : '' प्लॉट 11 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में आज, 18 जून को ***वॉल मार्ट*** के प्रतिनिधि आ रहे हैं इसलिये ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों को फैक्ट्री नहीं आने को कह दिया था। वॉल मार्ट वाले वर्ष में एक बार फैक्ट्री आते हैं तब ऐसा ही होता है। पिछले वर्ष यहाँ वॉल मार्ट के लिये दो लाख पँखे बने थे।

'' ओरियन्ट फैन फैक्ट्री में चार प्रकार के मजदूर हैं — स्थाई, कैजुअल, जॉब कार्ड वाले, बिना जॉब कार्ड वाले। जॉब कार्ड वाले थोड़े-से हैं और उन्हें भी ठेकेदारों के जरिये रखा है पर उनका ब्रेक नहीं होता, उन्हें सप्ताह में 18 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से देते हैं, 18 घण्टे से अधिक वाले ओवर टाइम को एक्स्ट्रा टाइम कहते हैं और उसके पैसे सिंगल रेट से। स्थाई मजदूर आमतौर पर पीस रेट पर हैं। कैजुअल वरकरों को ओवर टाइम व 'एक्स्ट्रा टाइम' के पैसे दुगुनी दर से। बिना जॉब कार्ड वाले ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 8 घण्टे के 90-130 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम-एक्स्ट्रा टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल की भर्ती के लिये 200-400 रुपये रिश्वत लेते हैं। जॉब कार्ड सिफारिशी को ही — 10 जून से लीडरों ने इस पर हँगामा किया है।

'' फैक्ट्री में वर्ष में 24 लाख पँखे बनते हैं। मध्य-जुलाई से अक्टूबर-अन्त तक काम कम रहता है, बाकी समय महीने में 100-175 घण्टे ओवर टाइम काम होता है। कम्पनी महीने में 72 घण्टे को ओवर टाइम कहती है और उससे ऊपर वाले समय को एक्स्ट्रा टाइम। कई शिफ्टें हैं : सुबह 6 से, 7 से, 7½ से, 8½ से, साँय 6 से, रात 8 से। ब्लेड विभाग, पेन्ट शॉप, एयर फ्लो विभाग, पैकिंग में 12-12½ घण्टों की शिफ्ट हैं।

'' ओरियन्ट फैन फैक्ट्री में कैन्टीन है। यहाँ 50 स्थाई मजदूरों को 50 पैसे में चाय और 3 रुपये में थाली देते हैं। कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 450 वरकरों को एक रुपये में चाय और 6 रुपये में थाली देते हैं।''

एस पी एल इन्डस्ट्रीज मजदूर : ''प्लॉट 47-48 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में पूरे वर्ष 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में काम होता है। मेनटेनैन्स वरकरों की तो वर्ष के 365 दिन 12 घण्टे ड्युटी रहती है। आमतौर पर मई-जुलाई के दौरान काम ढीला होता है तब शनिवार व रविवार की छुट्टी कर देते हैं और बाकी 5 दिन 12-12 घण्टे की शिफ्ट..... छुट्टी कम्पनी स्वयं करती है और ओवर टाइम के घण्टों में से शनिवार के 8 घण्टे घटा देती है, महीने में 32-40 घण्टे कम कर देती है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगस्त-मार्च के दौरान काम का ज्यादा दबाव होता है तब रविवार को भी छुट्टी नहीं और मजदूरों को 36 घण्टे भी लगातार रोकते हैं। फैक्ट्री में कपड़ों की रंगाई होती है और काम ज्यादा होता है तब रात को प्लॉट 47 और 48 के बीच की सड़क पर छह इन्च रसायन युक्त पानी भरा रहता है, डाइंग विभाग में भी पानी भर जाता है — बिजली के तार ऊपर पाइपों के सहारे ! रसायनों वाले पानी से पैर सड़ जाते हैं। दिन में पानी निकलवा देते हैं।

'' फैक्ट्री में भाप का काम है। तापमान 50-60 डिग्री रहता है, माल पकाने के लिये कभी-कभी 70-80 डिग्री भी। हर समय पसीने से तर रहते हैं। डाइंग विभाग में एक भी पँखा नहीं, रोटरी मशीनों पर एक भी पँखा नहीं। अन्दर-बाहर होते रहते हैं। फैक्ट्री में भोजन अवकाश है ही नहीं, भोजन करने के लिये स्थान भी नहीं है। मशीनें

चलती रहती हैं, एक-दूसरे को सम्भलवा कर बगल में नीचे बैठ कर रोटी खाते हैं। कैन्टीन थी..... बाहर कर दी है।

''प्लॉट 47-48 में मैनेजर-सुपरवाइजर-क्लर्क 100 हैं। स्थाई मजदूर के तौर पर 100 ऑपरेटर हैं और उन्हें भी स्टाफ कहते हैं। कैजुअल वरकर 300 हैं — 6 महीने में ब्रेक दिखा देते हैं जबकि वरकर काम करता रहता है, उसी विभाग में काम करता रहता है। मात्र यह करते हैं कि दूसरे विभाग में भर्ती दिखा देते हैं। तीन ठेकेदारों के जरिये 300 से ज्यादा मजदूर रखे हैं। फोल्डिंग विभाग देखें। यहाँ कम्पनी ने स्वयं 4 लोग रखे हैं — मास्टर, कम्प्युटर कर्मी, दो माल डिस्पैच वाले। ठेकेदार के जरिये 60 मजदूर रखे हैं। हैल्परों की साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3300-3500 रुपये। महीने में एक-दो हाजिरी ठेकेदार खा जाता है। तनखा देरी से, 20 तारीख के बाद। तीन मंजिल वाली शिवालिक प्रिन्ट्स फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस देते ही नहीं।''

गुड़गाँव में :

ऋचा एण्ड कम्पनी मजदूर : ''प्लॉट 239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ओवर टाइम के लिये जबरन रोकते हैं। सुबह 9 बजे शिफ्ट आरम्भ होती है और रात 11-12 तक, अगली सुबह के 6 बजे तक काम करवाते हैं। गाली देते हैं.......

और जर्मनी से एक मजदूर –

..... मर्सीडीज वाले परिसर में ही थिसेन-क्रुप फैक्ट्री में काम करने लगा हूँ। हम शीट मैटल का काम करते हैं, प्रेस शॉप में सब प्रकार के धातु के पुर्जे बनते हैं। हम मर्सीडीज के संग ऑडी, फॉक्स वैगन, स्कोडा, फोर्ड, रिनोल्ट कारों के पुर्जे भी बनाते हैं। हम मैटल ग्राइन्डिंग का कार्य करते हैं और आपूर्ति की स्थानीय लड़ी में हमारा विभाग प्रारम्भिक स्तर का है। आधिकारिक तौर पर हम जैड ए ए द्वारा रखे गये हैं पर थिसेन में अन्य जैड ए ए अस्थाई मजदूरों को दिया जाने वाला 94 सेन्ट प्रतिघण्टा वाला बोनस हमें नहीं दिया जाता क्योंकि मैटल ग्राइन्डिंग विभाग थिसेन ने जैड ए ए को कार्य करवाने के लिये दिया हुआ है। हम ठेकेदार के जरिये रखे भी गये हैं और नहीं भी रखे गये हैं! कर-पूर्व 6 $^{2}@_{5}$ यूरो प्रतिघण्टा हमारा वेतन है जो कि 800 यूरो प्रतिमाह से कम पड़ता है अगर हम प्रतिमाह दो सप्ताह रात पाली में काम नहीं करें। यदि मैं रोज बीस सिगरेट पीता हूँ (सब मजदूर यह करते हैं!) तो सिगरेटों पर मेरा खर्च 130 यूरो प्रतिमाह हुआ। अगर एक कप कॉफी और एक समय का भोजन कैन्टीन में लेते हैं तो यह महीने में 150 यूरो के हुये। काम सख्त है, ढेरों शोर — कान बन्द करने के लिये हमें प्लग मिलते हैं पर फिर भी शिफ्ट समाप्ति पर हमारे कान गूँजते रहते हैं। धातु की धूल बहुत रहती है — हमें मास्क मिलते हैं पर दो घण्टे बाद थूक काला निकलता है और कुछ मजदूरों की नाक से रक्त बहता है। एक शिफ्ट में हर मजदूर को 700 के करीब मैटल पार्ट्स ग्राइन्ड करने पड़ते हैं। भारी औजार के साथ कलाईयों को 8 घण्टे मोड़ने और घुमाने से हमारे जोड़ सूज जाते हैं। सूचना-पटल पर मैनेजमेन्ट प्रतिदिन का उत्पादन दर्शाती है और कहती है कि निर्धारित उत्पादन पूरा नहीं हुआ तो हमें शनिवार को भी आना होगा। ऐसा होने पर 13 दिन बिना किसी छुट्टी के हमें लगातार काम करना होगा क्योंकि तब हम शनिवार को दोपहर 2 बजे तक काम करेंगे और फिर रविवार को रात 10 बजे हमारी रात पाली आरम्भ होती है जो कि आगामी शनिवार की सुबह 6 बजे तक रहती है। हम लोगों ने तालमेल से शनिवार को काम करने से इनकार कर दिया है। काम बुरा है इसलिये कुछ लोग तो दो दिन में छोड़ जाते हैं। मैं लगा तब विभाग में हम 20 थे और अब हम 12 हैं। जैड ए ए मैनेजर और थिसेन का एक इंजिनियर अक्सर इर्द-गिर्द खड़े रहते हैं और हमारे द्वारा प्रति पीस लिये जाते समय को लिखते रहते हैं ताकि शिफ्ट के टारगेट को बढा सकें। अधिकतर मजदूर युवा हैं, बीस-बाइस वर्ष के हैं और अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। अधिकतर ने प्रशिक्षण लिया है पर उन्हें अच्छी नौकरी नहीं मिली. .... मैकेनिक बनने के लिये तीन वर्ष सीखने के बाद अब वे दिन में, रात में सैंकड़ों बार 30 सैकेन्ड वाली क्रिया दोहराते हैं और हताश-निराश हैं। हर शिफ्ट में हर एक द्वारा किया उत्पादन लिख कर मैनेजर को देने का प्रावधान है। कुछ मजदूर 300 पीस तो कुछ 1200 पीस एक शिफ्ट में तैयार करते हैं फिर भी दो शिफ्टों के लोगों ने अलग-अलग सँख्या नहीं लिखने और औसत लिखने का निर्णय किया। यह चर्चाओं के बाद हुआ — ''फिर तो मैं उसके लिये काम करता हूँ क्योंकि वह इतनी बार सिगरेट पीने जाता है'' आदि बातों के बाद अन्ततः हम ने निर्णय किया कि अलग-अलग सँख्या नहीं देंगे। समय की गणना करने वालों के आने पर हम ने पशुओं की आवाजें निकालनी भी शुरू कर दी हैं क्योंकि हमें लगता है कि हम चिड़ियाघर में हैं — वैसे भी शोर रहता है और हम मास्क पहने होते हैं। यह आश्चर्य की बात है पर जब मैं इन युवाओं और इनके गुस्से को देखता हूँ तो अक्सर मुझे गुड़गाँव में डेल्फी फैक्ट्री में पश्चिम बंगाल के युवा मजदूरों के बारे में सोचना पड़ता है जिनसे हम उनके कमरों पर मिले थे। और मुझे लगता है कि एक पराई दुनियाँ के प्रति भावनाओं तथा प्रतिक्रियाओं का एक जैसा होना मेरे मस्तिष्क के भ्रम नहीं हैं। मैं आशा करता हूँ कि यहाँ काम के दौरान मैं थिसेन मजदूरों के सम्पर्क में आऊँगा.......... (1 यूरो = 68 रुपये)

बद से बदतर होते हालात में

आज बड़ी सँख्या में मजदूर दो महीने यहाँ तो चार महीने वहाँ काम करने और रोज 12-16 घण्टे की ड्युटी करने को मजबूर हैं। किसानों और दस्तकारों की बढती सँख्या मजदूरों में बदल रही है। जहाँ एक मजदूर की जरूरत है वहाँ पचास लोग पंक्ति में खड़े हैं। और मित्रो, लक्षण तो निकट भविष्य में मजदूरों-मेहनतकशों की स्थिति और बिगड़ने के दिखते हैं। अस्थाई मजदूरों-कैजुअल वरकरों की सँख्या बढेगी। ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखने की प्रथा और बढेगी।

ऐसे में क्या करें ? क्या-कुछ कर सकते हैं ? यह प्रश्न प्रत्येक के सम्मुख हैं, यह सवाल हम सब के सामने हैं।

सब जो कर सकें

ऐसे कदमों की चर्चा काफी होती है जो आज सामान्य मजदूर के बस के नहीं हैं। इसलिये होता बहुत-ही कम है। इसका एक दुष्परिणाम हमारे द्वारा स्वयं को दोष देना और विलाप करना है। '' न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी'' वाली दलदल से निकलना प्रारम्भिक महत्व का है।

कदम तय करते समय यह ध्यान में रखना जरूरी है कि हर एक मजबूरियों से घिरी-घिरा है। फर्क मात्र यह है कि किसी की थोड़ी ज्यादा मजबूरी हैं तो किसी की थोड़ी कम मजबूरी हैं। एक-दूसरे को पीड़ित मान कर, सह पीड़ित मान कर चलना आवश्यक लगता है। कदम स्वयं में बहुत-ही मामूली-से.... तिनकों समान। तिनकों से बनाया घोंसला सुरक्षा का मजबूत कवच बनता है। और, हर चिड़िया आसानी से तिनके उठा-जोड़ सकती है।

हर जगह जो कर सकें

बदलते किराये के कमरे और अस्थाई नौकरियाँ हमारे लिये हकीकत का मुखर पहलू है। इसलिये आज पहली नजर में ही इस अथवा उस फैक्ट्री में स्थिति की बजाय एक क्षेत्र में हालात से हमारा वास्ता है। ऐसे में कदम तय करते समय यह देखना जरूरी है कि कदम ऐसे हों जो जगह-जगह पर उठाये जा सकें।

घर और पक्की नौकरी नहीं होना बेशक पीड़ा को बढाते हैं। परन्तु यह हमें एक नई धार भी देते हैं। हलाल करती, तिल-तिल जलाती कई बेड़ियों से हम मुक्त भी हो गये हैं। आज स्थाई मजदूरों में जो डर हैं उनके नाममात्र डर ही कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों में बचे हैं। ''बहुत-ही मजबूर'' और ''कोई परवाह नहीं'' का साथ-साथ होना! निराशा और आशा साथ-साथ!!

दोस्तो, '' पता लगते ही निकाल देंगे'' की वास्तविकता हर जगह हमारे लिये ऐसे कदम आवश्यक बना देती है जो नजर में नहीं आयें। निशाना बनने से बचना बहुत-ही छोटे-छोटे कदमों की अनिवार्यता लिये है। वहीं, '' खोने के लिये है ही क्या'' वाली हकीकत इलाके-दर-इलाके उथल-पुथल लिये है..... और नई समाज रचना का आधार है।

हर समय जो कर सकें

तीन साल-पाँच साल वाले तौर-तरीके आज साहबों के मनमाफिक हैं। कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूर और मौत की देहली पर खड़े दस्तकार-किसान हर पल बेचैन हैं। वर्षों की बात छोड़िये, मजदूरों-मेहनतकशों के लिये आज एक-एक पल भारी है। मात्र बचे रहने के लिये भी हर समय कदम उठाना मजदूरों-मेहनतकशों के लिये बेहद जरूरी है।

हर समय कदम .... पागल हो क्या ? इतने दबावों से घिरे हैं, इतने तनाव में रहते हैं कि कदम उठाने में निहित अतिरिक्त तनाव से बचने की कोशिश ही करते हैं। कोई कदम उठाया हुआ है तो उसे जल्दी-से-जल्दी खत्म करने की फिराक में रहते हैं। मित्रो, हमारे विचार से, यहाँ बात '' कदम'' के प्रचलित अर्थ से जुड़ी है। नेताओं वाले कदमों की बात छोड़िये। अपने अनुभवों, चर्चाओं और सोच-विचार द्वारा हमें ऐसे कदम ढूँढना-तय करते रहना है जो हर समय उठाये जा सकें। हालात तनी बन्दूकों के सम्मुख कदम उठाने के बन रहे हैं.... बहुत-ही सरल, बहुत-ही सहज कदम जो हर समय उठाये जा सकते हैं उनकी जरूरत हमारे लिये बढती लगती है।

हर समय विरोध करने से बचने के मजदूरों-मेहनतकशों के प्रयास बदतर होते हालात में घुटन को बढाते हैं, स्थिति विस्फोटक बनती जाती है। ऐसे में यहाँ-वहाँ, जब-तब धमाके होने ही हैं.... और, सरकारों के हाथों में ''आतंकवाद'' का अस्त्र-शस्त्र अधिक धारदार हो जाता है।

मित्रो, जनता में बढती बेचैनी से आज संसार में हर सरकार आतंकित है। मजदूरों-मेहनतकशों की हलचलों में वृद्धि से निपटने के लिये दुनियाँ-भर की सरकारें अपनी गिरोहबन्दियाँ

बढा रही हैं। सब सरकारें "आतंकवाद" के खिलाफ एकजुट हो रही हैं.....

साम-दाम-दण्ड-भेद सरकारों का मूल मन्त्र है। अस्थिर होती सरकारें और भी कुटिल हो जाती हैं। थोड़ा पीछे जायें तो रूस के सम्राट ने 1905 में अपने चाचा का कत्ल करवा कर बेहद दमन को जायज ठहराने के लिये "आतंकवाद" में प्राण-प्रतिष्ठा की थी। इधर विश्व-भर में जिस आतंकवाद की चर्चा है उसका मुण्डन-संस्कार इटली सरकार के खुफिया विभागों ने चालीस वर्ष पहले भीड़ में बम विस्फोटों से किया था। आज सरकारों तथा उनके खुफिया विभागों की कारस्तानियाँ बढ गई हैं, और बढेंगी....

इधर—उधर के लोग

दस्तकारों-किसानों की तबाही से बने मजदूर आज किसी क्षेत्र में सीमित नहीं हैं। विश्व-भर में आज मजदूर फैले हैं और भारी तादाद में हैं।

सरकारों द्वारा बनाई सीमाओं में मजदूर सैंकड़ों मील इधर से उधर आ-जा रहे हैं। सरकारों द्वारा बनाई सीमाओं के पार हजारों मील मजदूर आज इधर से उधर आ-जा रहे हैं।

विभिन्न स्थानों के लोग जगह-जगह एक-दूसरे के सम्पर्क में आ रहे हैं। एक जगह, एक जैसे हालात से कुछ समय साथ-साथ जूझते हैं। फिर नई जगह, नये लोग....

मजबूरों, पीड़ितों का यह मिलना इच्छा से मिलना नहीं होता। पराई जगह, अजनबी लोगों से घिरे होना "अपनों" की चाहत बढाता है। कई बार यह "अपने" बहुत संकीर्ण दायरे बनते हैं और "दूसरे"-"अन्य" को विरोधी-शत्रु मान कर साहबों के हथियार बन जाते हैं। परन्तु बात इतनी ही नहीं है।

जगह-जगह से लोगों का एक स्थान पर आना और फिर अन्य स्थानों को चल देना मजदूरों के अनुभवों तथा विचारों का आदान-प्रदान व फैलाव लिये है। भाषा व अन्य अवरोधों को लाँघ कर साँझे कदम उठाने की आवश्यकता पुराने "अपनों" के स्थान पर नये "अपनों" की माँग कर रही है। स्वयं को मजदूर के तौर पर, स्वयं को मनुष्य के तौर पर देखना.....

दोस्तो, बद से बदतर होते हालात में इस दुनियाँ की जगह नई दुनियाँ बनाने की जरूरत बढ रही है। अपने लिये बेहतर आज और सुन्दर कल के लिये आईये अपने प्रयास बढायें।

फैक्ट्री रिपोर्ट

फरीदाबाद में :

सेन्डेन विकास मजदूर : " प्लॉट 65 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे हम 600 मजदूर काम करते हैं — स्थाई मजदूर 65 हैं और कैजुअल वरकर कोई नहीं है। हमें जून की तनखा में महँगाई भत्ते के 50 रुपये ही दिये जबकि 76 रुपये देय हैं तथा जनवरी से मई की डी.ए. की राशि दी ही नहीं। और, पहली जून से कम्पनी ने हमारे लिये कैन्टीन में थाली 35 रुपये में कर दी है! इससे पहले हमें थाली 15 रुपये में देते थे। स्थाई मजदूरों को पहली जून से थाली 5 की जगह 10 रुपये में की है। स्थाई मजदूरों की तनखा 12000-18000 रुपये है जबकि हम में हैल्परों को जून की तनखा 3560 रुपये और आई टी आई कियों को 3820 रुपये दी।

" सेन्डेन विकास फैक्ट्री में लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है सुबह 6½ बजे काम आरम करने वाले आमतौर पर साँय 7 तक काम करते हैं। सुबह 9 वाले रात 9½-10½ तक और दोपहर 3 वाली शिफ्ट को अगले रोज सुबह 4½-5½-6½ तक रोकते हैं। महीने में हमारा 150 घण्टे तक ओवर टाइम हो जाता है और इसका भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से करते हैं। लगातार 15 घण्टे काम करवाते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। हमें वर्दी देते हैं पर जूते नहीं देते और फैक्ट्री में प्रवेश के लिये जूते अनिवार्य हैं। ठेकेदारों में सुपिरियर कम्पनी ने तो दो साल से काम कर रहों को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये है और छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरती।"

हरिओम प्रिसिजन टूल्स श्रमिक : "20 इन्डस्ट्रीयल एरिया (ढाँढा कम्पलैक्स) स्थित फैक्ट्री में 8 महिला और 30 पुरुष मजदूर काम करते हैं। पावर प्रेस चलाती 2-3 महिला मजदूरों की तनखा 2400-2500 और बाकी की 1900-2000 रुपये। पुरुष हैल्परों की तनखा 2000-2400 और ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये। ई.एस.आई. 10 मजदूरों की ही, पी. एफ. किसी की नहीं। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं — मई में एक बन्दे के दोनों अँगूठे कटे और फिर जिसकी तीन उँगलियाँ पहले ही कटी थी उसका एक अँगूठा कट गया। फैक्ट्री में 14 पावर प्रेस हैं और उन पर मात्र 3 पँखे हैं — मजदूर सुबह से रात तक पसीने में भीगे रहते हैं। कहने पर जवाब मिलता है — ' जहाँ पँखे हैं वहाँ जाओ'। महिला व पुरुष मजदूरों के लिये मात्र एक टॉयलेट है और वह भी अक्सर गन्दे पानी से भर जाता है। ड्युटी सुबह 6½ से रात 9 तक। जब काम कम होता है तब 7 बजे छोड़ देते हैं पर तब चाय-मट्ठी नहीं देते। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

शुभ कम्पोनेन्ट्स श्रमिक : " 30 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8½ की शिफ्ट है और फिर पूरी रात रोक लेते हैं जिसके बाद फिर पूरे दिन की ड्युटी के बाद रात 8½ बजे

छूटते हैं। महीने में 12-13 बार इस प्रकार लगातार 36½ घण्टे फैक्ट्री में काम करवाते हैं। जबरन रोकते हैं। कोई छुट्टी नहीं। महीने में 250-275 घण्टे ओवर टाइम और उसके पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2000-2200 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। डाई फिटरों को 3500-4000 रुपये। फैक्ट्री में 10 पावर प्रेस हैं और उँगली कटती रहती हैं। चालीस से अधिक मजदूरों में 2 की ही ई.एस.आई. है, बाकी स्टाफ वालों की होगी। उँगली कटने पर निजी चिकित्सकों के पास कभी सैक्टर-22 में तो कभी एन एच-5 में भेज देते हैं। फैक्ट्री में मारूति सुजुकी का काम होता है और कम्पनी ने दूसरी फैक्ट्री सैक्टर-58 में बना ली है।''

डी एस बुहिन वरकर : ''प्लॉट 88 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 22 स्थाई मजदूर तथा 200 कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर कैजुअल हो चाहे ठेकेदारों के जरिये रखे, तनखा 2400 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ठेकेदारों के जरिये रखे ऑपरेटरों की तनखा 2800-3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।''

हिन्दुस्तान विद्युत प्रोडक्ट्स कामगार : '' 12/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 180 स्थाई मजदूरों की 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे 200 से ऊपर वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 12 घण्टे रोज काम पर 30 दिन के 4000 रुपये। स्थाई मजदूरों के साथ कम्पनी का त्रिवर्षीय समझौता सितम्बर 06 में निर्धारित था पर 23 महीने बीतने के बाद भी नहीं किया है।''

ए.पी. प्रोसेस मजदूर : ''प्लॉट 103 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्परों को 12 घण्टे के 110 रुपये और कारीगरों को 130 रुपये। फैक्ट्री में कपड़ों की रँगाई होती है और बॉयलर में तेल लगे कपड़े तथा लखानी शूज का कबाड़ जला कर भारी प्रदूषण फैलाते हैं।''

गुड़गाँव में :

कँचन इन्टरनेशनल वरकर : '' प्लॉट 872 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में हम 150 थे, अब 40-50 बचे हैं। जो तनखा पर हैं उन्हें अप्रैल, मई और जून की तनखायें आज 29 जुलाई तक नहीं दी हैं। सिलाई कारीगर पीस रेट पर और पैसे सप्ताह पर, शनिवार से शनिवार देते थे पर इधर 8 हफ्ते का भुगतान नहीं किया है। मकान मालिक और राशन देने वाला दुकानदार परेशान करते हैं पर कम्पनी है कि काम करो, पैसे मत माँगो..... ज्यादा कहने पर मारने दौड़ते हैं। नौकरी छोड़ने-हिसाब माँगने पर मना कर देते हैं।'' ***सेक्युरिटी गार्ड :*** पीरागढी, दिल्ली में कार्यालय वाली प्रिमियम सेक्युरिटी कम्पनी यहाँ गुडगाँव में गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के 4500 रुपये। काम करते तीन महीने हो जाते हैं तब ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू करते हैं।''

सीमा ओवरसीज मजदूर : '' बी-2/46 मोहन कोऑपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, बदरपुर, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूरों में 5-6 ही कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और बाकी सब को चार ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्परों की तनखा 2000-2200 रुपये, कुछ 10-12 वर्ष पुरानों की 4500 रुप्ये। रोज सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और रात 12, 2 बजे, सुबह 4 तक रोक लेते हैं। महीने में 150 घण्टे तक ओवरट टाइम और भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। मैटल पॉलिश विभाग में काम करते 52 मजदूरों में 4-5 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।''

सोना प्रिन्टिंग प्रेस श्रमिक : '' एफ-86/1 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 4000-7000 रुपये। हैल्पर ऑपरेटर का काम भी करते हैं। फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूरों में 150 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। छपाई विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी विभागों में 12 घण्टे की एक शिफ्ट। काम ज्यादा होता है तब सब मजदूरों को 36 घण्टे लगातार रोक लेते हैं और रोटी के लिये 40 रुपये देते हैं। बारह घण्टे की ड्युटी में 3 घण्टों को ओवर टाइम कहते हैं और 4 घण्टों के पैसे देते हैं पर डबल की बजाय सिंगल रेट से।''

बीमार करती दवा

संसार में दवाईयों की खपत तीव्र गति से बढ रही है। विश्व में थोक में औषधि निर्माण का एक प्रमुख क्षेत्र भारत है।

एक अध्ययन में औषधि निर्माता फैक्ट्रियों के निकट वाले गाँवों में कैन्सर की दर दूर वाले गाँवों से ग्यारह गुणा ज्यादा पाई गई है।

..... और बीमार करता भोजन

फैक्ट्री में माल की तरह मुर्गी-सूअर-गाय को तैयार करना इनके माँस को विषैला बनाने की सम्भावना को बहुत बढा देता है।

(जानकारी ''सोशलिस्ट स्टैन्डर्ड'' के अगस्त 08 अंक में Stan Cox की पुस्तक, Sick Planet : Corporate Food and Medicine की समीक्षा से।)

काम होगा तो मिलेंगे ही।
मिलना तो बिना काम के होता है।

दैनिक जीवन की कुछ सहज बातें

● बात प्यास से शुरू करते हैं। लगता है पृथ्वी पर जल से-जल में ही जीवन आया है। हमारे शरीर के लिये पानी बहुत महत्वपूर्ण है। प्यास लगना शरीर की जल के लिये पुकार होती है। प्यास बुझाने में जो आड़े आयें उन से पार पाने के प्रयास सहज क्रिया हैं। झिझकें नहीं, कुछ पेय प्यास को मारते हैं, तन में जल की कमी करते हैं, इन से बचना बनता है।

● भूख के जरिये शरीर दर्शाता है कि भोजन की आवश्यकता है। बिना भूख भोजन करना शरीर को परेशान करना है। और भूख लगने पर नहीं खाना....... यह ध्यान में रखने की जरूरत है कि शरीर प्रतिदिन औसतन तीन लीटर तेजाब बनाता है। इसलिये भूख लगने पर भोजन नहीं करना पेट में घाव व अन्य रोगों को दावत देना है। ''भूख नहीं है पर फिर भी भोजन करो'' और ''भूख लगी है पर रुको, समय होने दो'' वाली बाधाओं को पहचानने की आवश्यकता है।

● पेशाब करने जैसी बात आज कितने गुणा-भाग लिये है यह चिन्तन की बात है। पेशाब के लिये अनुमति ? पेशाब के लिये स्थान ? पेशाब करने के लिये पैसा? पेशाब शरीर से अनावश्यक व हानिकारक तत्वों को बाहर निकालने का सहज साधन है। पेशाब रोकना शरीर का सन्तुलन बिगाड़ने के संग पथरी का खतरा लिये है।

● और, अब गन्दी कही जाने वाली टट्टी। हर व्यक्ति के शरीर में हर समय टट्टी रहती है..... भोजन-पाचन-निकास शरीर की सहज क्रिया है। टट्टी को लज्जा की वस्तु बनाना, टट्टी के लिये समय निर्धारित करना, टट्टी लगने पर रोकना तन और मन, दोनों के लिये आफत हैं। राहत के लिये स्कूल-दफ्तर-फैक्ट्री-बस-लोकल ट्रेन की तानाशाही में दरारें डालने के प्रयासों के संग-संग सोच बदलना भी आवश्यक है।

● पसीने से परहेज, ए सी की कामना रोगों का भण्डार है। पसीना शरीर की सफाई का एक महत्वपूर्ण जरिया है। पाउडर-क्रीम और एयरकन्डीशनर से बचना बनता है।

● सूर्योदय और सूर्यास्त दिन व रात की सीमायें हैं और शरीर रात को सोने के लिये ढला है। रात को अन्धेरे में नींद स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक है। रोशनी नींद के लिये हानिकारक है। रात को नींद में बाधक मजबूरियों आदि की पड़ताल आवश्यक है।

● थकान सन्देश होता है विश्राम के लिये। आराम की जरूरत महसूस हो उस समय स्वयं को हाँकना लफड़े लिये है। यूँ भी विश्राम जीवन में रंगत लाता है।

● जीव अवस्था अनुसार तन की महक लिये रहते हैं। यह महक तन-मन की सहज क्रिया का परिणाम होती है। सम्बन्धों में यह महकें एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। साबुन-इत्र-अन्य रसायन इन महकों को मिटाते, छिपाते, बदलते हैं इसलिये इन से बचना चाहिए।

● चिड़िया घौंसले में कम ही रहती हैं। मनुष्य का स्वभाव भी इमारतों के अन्दर रहने का नहीं है। बाहर खुले में जितना विचरण कर सकें अच्छा है। प्राण-साँस के लिये खुले में रहने से बेहतर कुछ नहीं है। और फिर, सीमेन्ट-स्टील-पेन्ट की इमारतें तो वैसे भी बीमारी का घर हैं।

● अधिक समय खड़े रहना और अधिक समय बैठे रहना, दोनों ही स्थितियाँ हमारे अस्थिपंजर को विकृत कर देती हैं। रीढ की हड्डी का तो बाजा ही बज जाता है। बन्दर के बच्चे हमारे लिये उदाहरण होने चाहियें। वैसे हमारे शिशु भी कोई कम नहीं हैं। महत्वपूर्ण प्रश्न हैं : कार्यस्थलों और टी वी रूमों का क्या करना चाहिये ?

● मनुष्यों ने दीर्घकाल तक बिना वस्त्रों के सहज जीवन व्यतीत किया है। यूँ भी, बिना वस्त्रों के शरीर सुन्दर है। वस्त्र एक बोझ तो हैं ही फिर भी, वस्त्र पहनने ही हैं तो कम-से-कम कष्ट देने वाले कपड़े पहनें।

● सामान्य तौर पर इच्छा-पसन्द-उमंग जीवन की तरंग हैं। कई रंगों का होना जीवन को सहज ही आनन्ददायक बनाता है। एकरूपता कैसी भी हो, उससे उकताना-बिदकना स्वाभाविक है। यह बात गाँठ में बाँधने वाली है कि बारम्बार एक ही तरह से पैर की दाब देना, एक ही ढँग से हाथ चलाना, एक ही प्रकार का बोलना-चालना नीरसता की कुँजी है। मुहावरा पुराना है पर कोल्हू का बैल बने जीवन में फच्चर डालना उमंग के लिये जगह बनाना है।

● जीवन में बचपन, युवावस्था, वृद्धावस्था स्वाभाविक हैं। इन के अपने-अपने दौर और खासियतें हैं। बचपन को सिकोड़ना, युवावस्था को लम्बा करना, वृद्धावस्था से भय खाना और उसे नकारना-छिपाना सब के लिये आफत ही आफत लिये हैं। अपने बच्चों के बचपन को छीनने से बचने के कुछ प्रयास तो कोई भी कर सकती-सकता है। ठीक है ना ?

● सामान्य तौर पर तो सहज क्रियाओं में बाधा पड़ने पर ही हम बीमार पड़ते हैं। विश्राम उपचार के बेहतरीन तरीकों में है। शरीर को समय दीजिये। तन और मन की सुनिये। लाखों-करोड़ों वर्ष का अनुभव है जीवन को स्वयं को ठीक करने का। जहाँ तक हो सके दवाओं से बचें। दवाईयाँ अक्सर एक पहलू पर ध्यान केन्द्रित कर उपचार के दौरान अन्य बीमारियाँ संग लिये हैं।

सम्बन्धों और मन की कुछ सहज बातें आगे फिर कभी।

कालपी से –

2 अक्टूबर 1975 ई. को गठित किये गये झांसी डिवीजन जल संस्थान में उ.प्र. के 4 जिले (झांसी, ललितपुर, महोबा, जालौन) शामिल हैं। शुरू से ही इसमें पम्प चालकों का शोषण एवं उत्पीड़न किये जाने की परम्परा चली आ रही है। 40-45 दिन काम करने पर 1 महीने का वेतन दिया जाता है। कोई साप्ताहिक अवकाश नहीं देते हैं। साप्ताहिक अवकाश के दिन काम करने के लिये मात्र 15 रु. प्रति सप्ताह की दर से अधिकतम 75 रु. मासिक का भुगतान दिया जाता है। कहने को तो एक यूनियन भी है किन्तु अधिकारी उसे ''अमान्य'' करार देते हैं फिर भी यूनियन के अध्यक्ष को ''सन्तुष्ट'' रखते हैं।

लिपिक वर्ग मनमानी करता है। अधिकारी वर्ग उन पर अंकुश नहीं लगा पाते क्योंकि लिपिक वर्ग अधिकारियों का विश्वासपात्र एवं राज़दार होता है। छोटे कर्मचारियों का शोषण एवं उत्पीड़न होता है। यदि कोई पम्प चालक कोर्ट जाता भी है तो अधिकारी कोर्ट के आदेशों तक की अवहेलना करते हैं। न्याय का लाभ भी प्रायः छोटे कर्मचारी नहीं प्राप्त कर पाते हैं।

अखबारों में विस्तार से समाचार छपते हैं फिर भी श्रम विभाग संज्ञान नहीं लेता है। मजदूरों से प्राप्त होती सैंकड़ों शिकायतों पर श्रम विभाग कार्रवाई नहीं करता। — रहमान, कालपी

नोएडा से : ***एम ए डिजाइन मजदूर :*** ''सी-26 सैक्टर-63 नोएडा स्थित फैक्ट्री में नये वरकर को काम करते कुछ समय हो जाता है तब कम्पनी उस पर ई.एस.आई. व पी.एफ. के प्रावधान लागू करती है। जितेन्द्र नाम का एक मजदूर 10.12.2007 को भर्ती किया गया था पर उसकी ई.एस.आई. व पी.एफ. 24.3.2008 से लागू की। जितेन्द्र 11 अगस्त को फैक्ट्री में कार्य कर रहा था जब दोपहर को उसे कार्यालय में बुलाया गया। अधिकारियों ने अँग्रेजी में एक फार्म पर हस्ताक्षर करने को कहा तो जितेन्द्र ने जो लिखा था उसे समझाने की कही। कम्पनी अधिकारी बस दस्तखत करने की कहते रहे तो जितेन्द्र ने फार्म माँगा ताकि हस्ताक्षर करने से पहले किसी पुराने मजदूर से फार्म में जो लिखा है उसे समझ सके। अधिकारी इस पर नाराज हो गये और गुस्से में गार्ड बुला कर जितेन्द्र को फैक्ट्री के बाहर निकाल दिया। साँय 6½ बजे शिफ्ट समाप्ति पर जितेन्द्र हमें गेट के बाहर मिला। कम्पनी के इस अन्याय-अत्याचार के खिलाफ हम ने जितेन्द्र को समर्थन व सहायता का आश्वासन दिया और उसे रोज आने के लिये कहा। जितेन्द्र 12 अगस्त से प्रतिदिन फैक्ट्री पहुँच रहा है और सुबह ड्युटी जाते समय, दोपहर भोजन अवकाश के दौरान, तथा साँय छूटने के समय हम सब जितेन्द्र से मिलते हैं। फैक्ट्री में चाय पहुँचाने वाले को मैनेजमेन्ट ने जितेन्द्र को दुकान पर नहीं बैठने देने को कहा। वह थोड़ा हट कर खड़ा होने लगा और हम उस से रोज तीन बार मिलते रहे। हमारे मिलने-जुलने का कम्पनी पर इतना असर पड़ा कि मैनेजमेन्ट ने पुलिस का सहारा लिया। सादी वर्दी में एक पुलिस वाला 27 अगस्त को आया और हाथ-पैर तोड़ने की धमकी दे कर जितेन्द्र को वहाँ दिखाई नहीं देने को कहा। कम्पनी के अन्याय-अत्याचार के खिलाफ जितेन्द्र का फैक्ट्री गेट पर आना जारी है और फैक्ट्री के अन्दर काम कर रहे हम लोग मैनेजमेन्ट की लगाम खींचने के उपायों पर आपस में चर्चा .....

घूमने की छुट्टी

मैं पिछले दो-तीन साल से आउटलुक ग्रुप की टूरिस्ट गाइड किताबों में लिखने का काम कर रहा हूँ। अलग-अलग जगहों के बारे में अपने अनुभव और जानकारी वहाँ जा कर लिखने होते हैं। कहाँ जाना है, किस प्रकार का लेख चाहिये, सम्पादक तय करते हैं; खर्चा कम्पनी की तरफ से। कुछ-कुछ अपनी इच्छा से लिखने का मौका होता है। एक लेख के लिये पाँच से दस दिन का काम हो जाता है, 4-6 हजार रुपया मिलता है। कुछ हिसाब से पैसा बहुत कम है, कुछ हिसाब से काफी है। इस से और लिखने के अन्य छुट-पुट काम से मेरा काम चल जाता है। घूमने का शौक भी है।

यह गाइड किताबें 30-40 हजार रुपये महीना से ज्यादा कमाने वालों के काम की हैं। इन के हिसाब से घूमने के लिये दो-तीन हजार रुपये दिन का खर्च कम-से-कम चाहिये। ज्यादा से ज्यादा की सीमा नहीं — लाखों में खर्च होता है। आजकल ऐसे घूमने वाले काफी लोग हैं — वरकर, मैनेजर, दुकानदार, सभी कैटेगरी में। अधिकतर लोग अपनी रोज़ाना ज़िन्दगी से ''छुट्टी'' के मौकों के इंतज़ार में रहते हैं। कुछ का कहना है कि वह जीते ही ऐसी '' छुट्टियों'' की खातिर हैं — मन, दिमाग, शरीर भूल कर रोज़ाना की ज़िन्दगी ; और उस ज़िन्दगी को भुलाने के लिये (अन्यथा मन-दिमाग-शरीर से कुछ रिश्ता बनाये रखने के लिये) छुट्टी ! घूमना ज़रूरत भी है, लोगों की इच्छा भी है, घूमने का

फैशन भी है, इस में होड़ भी है।'' तुम वहाँ गये हो ?'', ''मैंने अभी तक वह जगह नहीं देखी.... काश !''

मैंने अब ऐसी काफी जगह देखी हैं। इन पर्यटक-स्थलों पर रहने-खाने-घुमाने के तरह-तरह के होटल और कम्पनियाँ चलते हैं। कुछ लोग ऐसे व्यवसाय सिर्फ पैसा कमाने के लिये करते हैं ; कुछ कम-से-कम कहते हैं कि पैसा कमाने के साथ-साथ कुछ अच्छा काम भी कर रहे हैं ; और कई लोग दिल से मानते हैं कि पैसा तो कमा रहे हैं पर साथ ही पर्यावरण/ स्वास्थ्य/ धर्म/ परंपरा/वन्य-जीवन/आदि के लिये काम भी कर रहे हैं। काफी लोग जो होटल-कम्पनियाँ चलाते हैं, यह अच्छा मानते हैं कि वह रोज़गार उपलब्ध करा रहे हैं।

पर्यटन उद्योग में कई प्रकार के वरकर काम करते हैं — रसोई, सफाई, रेस्टोरेन्ट, गाइड, सेक्युरिटी, मालिश, आफिस के काम आदि। अमूमन देखा है कि वरकरों को 1½, 2, 2½ ,3 हजार दिया जाता है। यानी घूमने वालों के एक दिन का कम-से-कम खर्च, या उससे भी कम, मजदूरों की महीने की तनखा। होटल और सरकारें कितना कमाते हैं, उस से तुलना भी नहीं करेंगे। काम के समय अजीब हैं , अनन्त भी। किसी पर्यटक को सुबह चार बजे उठ कर चिड़िया देखने जाना है, तो तब चाय चाहिये। कुछ को देर रात तक शराब की चुस्कियाँ लेनी हैं, और भोजन उसके भी बाद। छुट्टी में किसी प्रकार का खलल पसंद नहीं। ग्राहक अतिथि है, अतिथि देवता है या अतिथि ग्राहक है, ग्राहक से कमाई है, सब उसकी मर्जी से होना चाहिए। समय पर, अदब से और मुस्कुराहट के साथ हर चीज़ पेश हो। आखिर इतना पैसा किस लिये खर्च किया है। अधिकतर पैसा सरकारों, कम्पनियों, मैनेजरों के हिस्से जाता है। सब से ज्यादा भुगतना वरकरों के हिस्से आता है। — अमित, दिल्ली

आठवीं कक्षा छात्र

किसी से भी बात करने के लिये मेरे टाइम टेबल में समय नहीं है

(केन्द्रीय विद्यालय में आठवीं कक्षा में पढते 13 वर्षीय छात्र के लिये अगस्त माह में तीन दिन लगातार छुट्टी विशेष समय था। इलाहाबाद में इस बच्चे से हुई बातचीत के अंश देखिये और सोचिये।)

अध्यापक कहते हैं कि अब हम बड़े हो गये हैं, प्रतियोगिता बहुत है, लाखों-करोड़ों में अपनी जगह बनानी है इसलिये मेहनत करें। हमें समय के समुचित उपयोग वाली सी डी दिखाई गई और पुस्तकालय अध्यक्ष ने प्रत्येक को सलाह दी। टाइम टेबल हम ने स्वयं बनाये। अब हम बच्चे नहीं रहे, अपना भविष्य हम खुद देख सकते हैं।

मेरी समय-सारणी अनुसार सुबह 4 बजे उठना पर बिस्तर छोड़ने में 4½ हो ही जाते हैं। पढ़ना 4½ से 5½ तक। फिर विद्यालय जाने के लिये तैयार होना। बस 6½ बजे स्टॉप पर आती है और वहाँ पहुँचने में 5 मिनट लगते हैं। हमारे स्कूल में बस 7 बज कर 25 मिनट पर पहुँचती है। सुबेदारगंज से केन्द्रीय विद्यालय, मनौरी बीस किलोमीटर से अधिक दूर है और जाते समय बस अन्य स्कूलों में बच्चों को छोड़ते हुये अन्त में हमें उतारती है। हमारे स्कूल में छुट्टी अन्य विद्यालयों के बाद होती है इसलिये लौटते समय वहाँ से बच्चे पहले उठा कर बस हमें सीधे लाती है। विद्यालय में गुण्डागर्दी बहुत है — नौवीं से बारहवीं वालों द्वारा कुछ ज्यादा ही।

स्कूल सुबह 7½ से दोपहर एक चालीस तक। बस दो दस पर आती है और मैं दो पचास पर घर पहुँचता हूँ। कपड़े बदल कर तीन-साढे तीन तक भोजन। अध्यापकों द्वारा दिया कार्य 3½ से 5½ के दौरान करना। वैसे मेरे टाइम टेबल में यह समय ट्युशन के लिये है पर अभी उसका प्रबन्ध हुआ नहीं है।

साँय 5½ से 7, डेढ घण्टा मैंने खेल अथवा विश्राम के लिये रखा है। ***मैं खेलता नहीं क्योंकि हारने व जीतने में, दोनों में गड़बड़ है। जीतने पर दूसरे को चिढाना शुरू कर देते हैं। हारने वाले झगड़ा कर लेते हैं, लड़-मरने को तैयार हो जाते हैं। हारने पर टीम वाले ही एक-दूसरे को दोष देते हैं। खेल वाली मस्ती होती ही नहीं। एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं।***

7 से रात 9 बजे तक पढाई। अगर अध्यापकों द्वारा दिया काम पूरा हो गया है तो कक्षा से आगे चलने के लिये अतिरिक्त पढते हैं। अध्यापक के पढाने से पहले पढते हैं ताकि कक्षा में ठीक से समझ में आये। फिर भोजन कर सो जाता हूँ — अगले रोज सुबह 4 बजे उठने के लिये।

माँ-पिता-बहन-भाई से बात करने का समय टाइम टेबल में है ही नहीं। बात कर ही नहीं पाते। घर में समय नहीं है, कक्षा में बात करो तो अध्यापक डाँटें। चुप रहने वाली बात ही रहती है। चुप रहते-रहते साइलेन्ट हो जाते हैं, लैटर बॉक्स में पड़ी चिट्ठियों की तरह हो जाते हैं जो साथ-साथ रहती हैं पर एक-दूसरे से बात नहीं करती, न ही एक-दूसरे से मतलब रखती, बस अपनी-अपनी मंजिल तक पहुँचने का इन्तजार करती रहती हैं।

कुछ बातें जातियों की

गण-कबीला-ट्राइब-क्लैन को सामाजिक संगठन का एक स्वरूप कहा जाता है। मिलते-जुलते रूप में यह मनुष्यों के बीच विश्व-भर में रहे हैं। काफी क्षेत्रों में, बड़ी आबादियों में इनका उल्लेखनीय प्रभाव आज भी देखा जा सकता है।

गण को रक्त-सम्बन्ध से जोड़ा गया। स्त्री और पुरुष के यौन सम्बन्ध कहीं गण के अन्दर ही तो कहीं गण के बाहर ही मान्य रहे। कहीं-कहीं गण के अन्दर और गण के बाहर, दोनों प्रकार के सम्बन्ध सामान्य रहे। हावी-प्रभावी जो बना वह गण के अन्दर ही सम्बन्ध था। किसी को गण में सम्मिलित करने के अनेक तरीके रहे हैं। और, किसी को गण से बाहर करना बहुत बड़ी सजा।

गण के अन्दर और भी गठन हुये जिनमें गोत्र की महत्ती भूमिका रही है। गोत्र को निकट रक्त-सम्बन्ध माना गया और पिता का गोत्र बच्चों का गोत्र बना। वैसे, अगर रक्त की बात करनी ही है तो बच्चों में रक्त माँ के गर्भ में ही बनता है। गण के अन्दर परन्तु गोत्र के बाहर विवाह की प्रथा स्थापित हुई। एक गोत्र वालों के बीच रिश्ते दादा-पिता-बुआ-भाई-बहन-पुत्री-पुत्र वाले। एक गोत्र के लोगों की सँख्या लाखों में होने, दूर-दराज फैले होने पर भी गोत्र वाले नर और नारी के बीच शादी नहीं। सगोत्र विवाह अमान्य। विवाह के बाहर यौन सम्बन्ध अमान्य।

जटिलतायें अनेक हैं और काफी कुछ बदला है पर फिर भी विश्व-भर में विवाह की गण-गोत्र व्यवस्था आज भी उल्लेखनीय है।

आईये अब बात भारतीय उपमहाद्वीप की करें। यहाँ आज भी गण-गोत्र का बोलबाला विवाहों में साफ-साफ देखा जा सकता है। और लगता है कि गणों की पर्यायवाची जातियाँ हैं। गण और जाति शब्द एक ही सामाजिक गठन के लिये.....

गण और वर्ण उच्चारण में निकट लगते हैं परन्तु वास्तव में इनके अर्थ बहुत भिन्न हैं। वर्ण चार हैं और इन्हें अनेक नियमों-उपनियमों के जरिये स्थापित करने के प्रयास हुये। जबकि, गण-जाति उपमहाद्वीप में ही हजारों की सँख्या में हैं। फिर भी, चर्चाओं में अकसर वर्ण और जाति को गड्डमड्ड कर दिया जाता है। आज यहाँ प्रभु वर्ग की मुख्य भाषा, अँग्रेजी में "कास्ट" शब्द का प्रयोग जाति और वर्ण, दोनों के लिये किया जाता है। यह गण-जाति तथा वर्ण के अर्थों को और उलझा देता है।

वर्ण को स्थापित करने के प्रयास समाज में ऊँच-नीच पैदा होने के उपरान्त हुये। वर्ण का अस्तित्व चन्द हजार वर्ष से अधिक का नहीं है। जबकि, गण-जाति रूपि गठन वर्ण के, ऊँच-नीच के अस्तित्व में आने से हजारों वर्ष पहले के हैं।

आईये अब एक नजर गण-जाति पर समाज में हुये, हो रहे व्यापक परिवर्तनों के सन्दर्भ में डालें। बात थोड़ा पहले से आरम्भ करते हैं।

दीर्घकाल तक गण-जाति मौज-मस्ती की अवस्था में रही। उल्लास का बोलबाला रहा। प्रकृति द्वारा उपलब्ध कन्द-मूल भोजन के मुख्य स्रोत थे। पूरक के तौर पर छिटपुट शिकार। समय के साथ कुछ क्षेत्रों में विभिन्न कारणों से इस-उस प्रकार की विशेषता प्राप्त करने की दिशा में कदम बढे। कोई गण मछली पकड़ने में विशेषज्ञ बने तो किन्हीं गणों ने मिट्टी से खेलने में महारत हासिल की। गण-जाति को धन्धे-पेशे से जोड़ने के बीज पड़े। और, भारतीय उपमहाद्वीप में तो गण-जाति को धन्धे-पेशे से जोड़ने वाले यह बीज विराट वृक्ष बने। गण-जाति की जड़ों को धन्धे-पेशे के इस आवरण ने ढँक दिया। गण-जाति और धन्धे-पेशे एक-दूसरे से जुड़े हुये पेश होने लगे। वैसे, एक ही पेशे में, एक ही धन्धे में अनेक गण-जाति, कई गण-जाति रहे। किसान जातियाँ.....

समाज में होते व्यापक परिवर्तनों के संग धन्धों के महत्व बदलते रहे हैं। कल जो बहुत महत्वपूर्ण थे, आज वे गौण हो गये। उत्तम खेती और अधम नौकरी-चाकरी उलट-पलट गये हैं। एक समय किसी गण-जाति से जुड़ा जो पेशा- धन्धा श्रेष्ठ कहा जाता था वह अन्य समय में अधम की श्रेणी में आ गया।

और अन्त में, कुछ बात ऊँच-नीच की। ऊँच-नीच का सम्बन्ध वर्ण से है। समाज में स्वामी और दास बनने-बनाने के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप में वर्ण व्यवस्था की रचना द्वारा ऊँच-नीच को संस्थागत रूप देने के प्रयास हुये। हजारों गण-जाति ऊँच-नीच वाले चार खानों में फिट किये गये। कई गण-जाति जो इन चार खानों में से निचले में ठूँसे नहीं जा सके वो "बाहर-अन्य-दूसरे" करार दिये गये। परिवर्तन-आवश्यकता "बाहर" वालों को "अन्दर" लाये और शक्ति-सत्ता ने गण-जाति की वर्ण-श्रेणी में कई उलट-फेर किये। शुद्र शिवाजी का राजतिलक करने से इनकार.... सत्ता ने मराठों को शुद्र से क्षत्रिय

की श्रेणी में पहुँचाया।

एक गण-जाति में अनेक प्रकार के विभाजनों द्वारा "नये" गण-जाति अस्तित्व में आते रहे। हिन्दू मनिहार और मुसलमान मनिहार, खटीक और बकरे काटने वाले खटीक। कह सकते हैं कि स्थान बदलने से, धर्म परिवर्तन से, नये धन्धे-पेशे अपनाने से गण-जाति वाले सामाजिक गठन में कुछ परिवर्तन तो आये ही परन्तु गण-गोत्र की जड़ पर चोट नहीं पड़ी। इधर व्यक्ति को इकाई बनाना विगत के सम्बन्धों के तानों-बानों पर प्रहार है, गण-जाति की जड़ पर भी चोट लगता है।

इच्छा-अनिच्छा से परे नये लोगों के संग आना सामान्य बनता जा रहा है। अकेलेपन, नये प्रकार के अकेलेपन ने पीड़ा में भारी वृद्धि की है। नये मेल-मिलापों के लिये तड़प और प्रयास बढ रहे हैं। नये समुदायों के उदय की वेला है।

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

फरीदाबाद में :

स्टार वायर मजदूर : "21/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में तीन हजार से ज्यादा मजदूर और पाँच-छह सौ स्टाफ वाले हैं। मात्र 85 मजदूर स्थाई हैं। ठेकेदार 82 थे, अब 55 हैं और इनके जरिये रखे तीन हजार मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2300-2400 तथा ऑपरेटरों की 3510 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। लोहे का काम है, चोटें हर समय लगती रहती हैं। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी जाती, कोई मुआवजा नहीं। चावला कॉलोनी से डॉ. पी.सी. गुप्ता फैक्ट्री में आते हैं और उन्हीं के यहाँ इलाज होता है। वाल्व स्टील विभाग में ही 10-12 मजदूरों के हाथ कटे हैं। महीने में 100 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। कैन्टीन में 5 रुपये में थाली, खाना सही नहीं। फैक्ट्री में सेना का काफी साजो-सामान बनता है।"

बाटा कामगार : " 32 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 1968 में भर्ती हुआ तब 1600 से ज्यादा स्थाई मजदूर थे जो बढते-बढते 2600 हो गये थे। फिर कम होते-होते आज यहाँ 350 से कम स्थाई मजदूर बचे हैं। स्थाई मजदूरों की स्थिति इतनी कमजोर हो गई है कि एक दिन तबीयत खराब होने पर एक घण्टे का गेट पास माँगा तो पर्सनल विभाग ने नहीं दिया। जनरल मैनेजर अमर नन्दी से मिला तो साहब बोला, 'मैं आपके गेट पास के लिये यहाँ नहीं बैठा। चालीस की जगह अस्सी वर्ष की सर्विस हो तो भी हमें कोई मतलब नहीं है।' हालात यह हो गये हैं कि 40-42 वर्ष नौकरी करने के बाद सितम्बर में सेवानिवृत हुये तीन मजदूरों को कम्पनी ने दशहरे की मिठाई देने से इनकार कर दिया।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज श्रमिक : " प्लॉट 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12 सितम्बर को कार्य करते समय एक सिलाई कारीगर को बिजली का झटका लगा। मशीन में करन्ट। अलार्म बजाने पर कोई नहीं आया। इस पर सिलाई कारीगरों की सेक्युरिटी गार्डों से धक्का-मुक्की हुई। अगले रोज, 13 सितम्बर को सुबह-सुबह कार्यस्थल से मैनेजमेन्ट ने 3 वरकरों को गेट पर बुलाया। कम्पनी का स्टाफ गेट पर था और ग्रुप फोर सेक्युरिटी कम्पनी ने गाड़ी भर कर लोग बुला रखे थे। बाहर बुलाये तीन मजदूरों की पिटाई — एक का सिर फटा, एक का हाथ टूटा। पता लगते ही 1000 सिलाई कारीगर काम छोड़ कर फैक्ट्री से बाहर आ गये। आज, 15 सितम्बर को भी सिलाई कारीगरों ने काम आरम्भ नहीं किया है, फैक्ट्री के बाहर हैं।"

ब्रॉन लैब वरकर : " 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूर और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 200 वरकर काम करते हैं। ठेकेदार एच आई एस एस (दत्ता) के जरिये रखे 80 मजदूरों को कैजुअल वरकर कहते हैं। इनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और तनखा 3510 रुपये — जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं दिये हैं। बाकी तीन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, हैल्परों की तनखा 2000-2500 रुपये और 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

मल्टी टेक श्रमिक : " प्लॉट 3 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12 घण्टे की एक शिफ्ट में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 10-15 पुराने मजदूरों की ही। पावर प्रेस हैं — एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते और प्रायवेट में इलाज करवा कर निकाल देते हैं। हैल्परों की तनखा 2300 और ऑपरेटरों की 2500-3000 रुपये। जरूरत पड़ने पर कम्पनी 100-200 रुपये भी नहीं देती। मैनेजर गाली देता है।"

गुड़गाँव में :

इनकास इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 142 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 35 स्थाई मजदूर, 10-12 कैजुअल वरकर तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूर चमड़े के थैले और जैकेट बनाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. सिर्फ 35 स्थाई मजदूरों के हैं। कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये। फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 की शिफ्ट है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट। बोनस नहीं देते — दिवाली से कुछ पहले सादे कागजों पर हस्ताक्षर करवा कर निकाल देते हैं। जनरल मैनेजर गाली बहुत देता है।"

एस एण्ड आर एक्सपोर्ट श्रमिक : " प्लॉट 298 उद्योग विहार

फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की सुबह 9 से रात 8 तक की ड्युटी — 11 घण्टे प्रतिदिन पर महीने के 3510 रुपये देते हैं। इसी दौरान के लिये चेकरों को दो घण्टे ओवर टाइम देते हैं पर पैसे सिंगल रेट से। भोजन अवकाश के दौरान और छुट्टी होने उपरान्त 15-30 मिनट जबरन बोझे ढुआते हैं, गाली देते हैं और मना करने पर अगले रोज से फैक्ट्री नहीं आने की कहते हैं। भोजन अवकाश से एक घण्टा पहले कम्पनी गार्डों के जरिये पानी-पेशाब बन्द कर देती है। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने, निकालने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते।''

लक्ष्मी इम्ब्राइड्री वरकर : ''प्लॉट बी-35 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्परों को 2000-2200 और ऑपरेटरों को 3800-4200 रुपये। ......''

डेंगु का धन्धा

डेंगु एक वायरल बीमारी है। यह एडीज मच्छरों के जरिये फैलती है।

डेंगु होने पर 80 प्रतिशत मामलों में सामान्य-सा बुखार होता है। किसी प्रकार के उपचार की आवश्यकता नहीं होती। ताप कम करने के लिये शरीर पर ठण्डी पट्टियों की जरूरत पड़ती है। यदि बुखार ठण्डी पट्टियों से नियन्त्रण में नहीं आये तो पैरासिटामोल की गोली लाभदायक होती है।

डेंगु होने पर कुछ रोगियों को बुखार के संग शरीर पर लाल चकत्ते दिखने लगते हैं। शरीर ठण्डा होता है और रक्तचाप भी थोड़ा कम हो जाता है। डेंगु के इस प्रकार के मरीज 18 प्रतिशत के करीब होते हैं। इन मामलों में भी किसी प्रकार के इलाज की आवश्यकता नहीं होती। ठण्डी पट्टियाँ और जरूरी होने पर पैरासिटामोल की गोली पर्याप्त हैं। हाँ, ऐसे रोगियों को रक्त में प्लेटलेट की गिनती करवा लेनी चाहिये।

डेंगु के 98 प्रतिशत मामलों में किसी प्रकार के उपचार की आवश्यकता नहीं होती।

मात्र 2 प्रतिशत मामलों में डेंगु भयानक रूप लेता है। रक्त में खून को जमाने वाले जो कण (प्लेटलेट) होते हैं उनकी बहुत-ही कमी हो जाती है। मरीज के मुँह, नाक इत्यादि से खून रिसने लगता है। कुछ रोगियों में रक्तचाप 90 एमएम से भी कम हो जाता है। शरीर की क्रियायें धीमी पड़ जाती हैं। रक्त रिसने वाले और ब्लड प्रेशर लगातार गिरने वाले मरीज को अस्पताल में दाखिल करने की आवश्यकता होती है। यह रोगी भी लगातार देखभाल से ठीक हो जाते हैं। सरकारी अस्पतालों के लिये रक्त से प्लेटलेट अलग करने की मशीन रखना आसान है।

..... डेंगु का मौसम आते ही निजी चिकित्सालयों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। ना चलने वाले प्रायवेट अस्पतालों में भी दाखिले के लिये बिस्तर मिलना मुश्किल हो जाता है। बुखार के हर मरीज को डेंगु सम्भावित की श्रेणी में रखा जाता है। सरकारी तन्त्र जहाँ डेंगु होने पर भी ''डेंगु नहीं'' कहता है वहीं निजी चिकित्सक सामान्य डेंगु को भी भयानक डेंगु की श्रेणी में रखते हैं। दो प्रतिशत को अस्पताल में भर्ती की आवश्यकता होती है, सौ प्रतिशत को भर्ती किया जाता है। दो प्रतिशत को जिस उपचार की जरूरत होती है वह उपचार सौ प्रतिशत पर लागू किया जाता है। डेंगु के 98 प्रतिशत रोगी कटने वाले मुर्गे बनते हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2006 में निजी चिकित्सकों/प्रायवेट अस्पतालों ने डेंगु से फरीदाबाद में ही 50 करोड़ रुपये का व्यवसाय किया। एक करोड़ में जो हो जाये उसे 50 करोड़ में करना अच्छा धन्धा है।

डेंगु को रोकने का सरल उपाय एडीज मच्छरों को अपने इर्द-गिर्द पैदा नहीं होने देना है। पानी को ढक कर रखना और तालाबों में एडीज मच्छरों के लारवा को खा जाने वाली मछलियाँ रखना पर्याप्त हैं। मच्छरों को मारने वाली दवाईयों का प्रयोग अन्य नुकसान संग लिये होता है।

रोमानिया में मजदूर

अधिक वेतन के लिये रोमानिया में जन्मे मजदूर यूरोप के अन्य क्षेत्रों में जा रहे हैं। बड़ी सँख्या में लोग स्पेन और इटली जा रहे हैं। दस प्रतिशत रोमानियाई नागरिक यूरोप के अन्य क्षेत्रों में काम कर रहे हैं।

रोमानिया में कार्यरत 73 प्रतिशत कम्पनियाँ मजदूरों की कमी का रोना रो रही हैं। मीडिया लोगों के बाहर जाने के दुष्प्रभावों के दैनिक प्रचार में जुटा है। ''बाहर'' बदतर होती कार्यस्थितियों, पीछे रह जाते परिजनों के लिये सामाजिक हादसे, एशिया से मजदूरों की बाढ आने के खतरे की बातें रोमानिया में टी वी-समाचार पत्रों-पत्रिकाओं की मुखर सामग्री बने हैं।

चीन, फिलिपीन्स, बंगलादेश, भारत से मजदूर लाये जाने लगे हैं। अभी यह प्रयोग के स्तर पर है। और, रोमानिया में मजदूरों के नये रंग-रूप हलचलों को नये आयाम प्रदान कर रहे हैं।

✶ जनवरी 07 की बात है। वीयर कम्पनी द्वारा चीन से लाई गई 400 महिला मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। सिलाई कारीगरों ने यह कदम वेतन वृद्धि और बेहतर कार्यस्थितियों के

लिये उठाया था। हड़काने पहुँचे डायरेक्टर को मजदूरों ने घेर लिया। डायरेक्टर के शब्द : '' कार्य करने की बजाय वे भोजन करने वाले छुरी-काँटों से मुझ पर पिल पड़ी। मैंने पुलिस और सेक्युरिटी बुलाई। मेरे अपने देश में, मेरी अपनी फैक्ट्री में, जिन्हें मैंने सब रियायतें दी हैं उन महिला मजदूरों का आक्रमण बिलकुल स्वीकार्य नहीं है !''

✶ फिलिपीन्स में एक एजेन्सी ने 26 से 52 वर्ष आयु वाली महिला सिलाई कारीगर रोमानिया में काम करने के लिये मई 08 में भर्ती की। फीस और यात्रा के एक लाख रुपये हर मजदूर से लिये।

तनखा 16-17 हजार रुपये और दुगुनी दर से ओवर टाइम बताया गया था। पहले महीने में मजदूरों ने 33-34 हजार रुपये का काम किया। परन्तु भोजन व निवास का खर्च काट कर उन्हें मात्र 9-10 हजार रुपये दिये गये। दूसरे महीने भी यही बात। इन महिला मजदूरों में से कई नामिबिया, ताइवान, ब्रुनेई में फैक्ट्रियों में काम कर चुकी थी। रोमानिया में यह सप्ताह में 6 दिन सुबह 6½ से साँय 6 तक काम कर रही थी। कम्पनी ओवर टाइम के पैसे दे ही नहीं रही थी ! एक कमरे में 8 रहती थी और भोजन बहुत खराब था। नाश्ता, दोपहर का भोजन और कमरे का किराया मिला कर 7 हजार रुपये के। रात के भोजन का प्रबन्ध मजदूरों द्वारा स्वयं। तीसरे महीने में फिलिपीन्स से लाई गई महिला मजदूरों ने ओवर टाइम बन्द कर दिया। जगह-जगह शिकायतें की। बौखलाई मैनेजमेन्ट ने 6 मजदूरों को रोमानिया से निष्कासित करवाया। फिलिपीन्स से रोमानिया में फैक्ट्री में काम करने लाई गई महिला मजदूरों का विरोध जारी है। कम्पनी ने मजदूरों से पार पाने के लिये पीस रेट आरम्भ किया है — 250 के स्थान पर 500 पीस निर्धारित किया है !

✶ भारत से मई 07 में 43 मजदूर रोमानिया में एक धातु फैक्ट्री में काम करने के लिये ले जाये गये। समझौता 10 घण्टे रोज और सप्ताह में 6 दिन काम पर कर-पूर्व 23-24 हजार रुपये प्रतिमाह का था। लेकिन कम्पनी हफ्ते में 60 घण्टे की जगह 115-130 घण्टे काम लेने लगी। मजदूरों को नाम की जगह नम्बर दे दिये गये और नम्बर से बुलाये जाते। भारत से रोमानिया में काम करने गये मजदूरों ने इस सब का विरोध किया। जगह-जगह शिकायतें करने के बाद इन मजदूरों ने अक्टूबर 07 में मीडिया के लिये खुला पत्र जारी किया। कम्पनी मानसिक यन्त्रणा पर उतर आई। और फिर, जनवरी 08 के आरम्भ में कम्पनी ने 30 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया। कम्पनी ने आरोप लगाया कि यह मजदूर 20 दिसम्बर 07 से कार्य के लिये नहीं पहुँचे थे..... जबकि इस दौरान छुट्टियों में फैक्ट्री बन्द थी !

✶ बंगलादेश से 500 सिलाई कारीगर रोमानिया में काम करने भेजे गये। फीस और यात्रा के डेढ लाख रुपये प्रत्येक मजदूर से एजेन्सी ने लिये।

सप्ताह में 40 घण्टे कार्य पर महीने में 16-17 हजार रुपये और ओवर टाइम दुगुनी दर से की बात थी। बंगलादेश से रोमानिया पहुँचे मजदूरों ने सप्ताह में 60 घण्टे काम किया। प्रत्येक मजदूर के 33-34 हजार रुपये महीने में बने पर कम्पनी ने मात्र 9-10 हजार रुपये दिये। ओवर टाइम के पैसे कम्पनी ने दिये ही नहीं और भोजन व निवास के 6 हजार रुपये काट लिये। एक कमरे में 9 लोग त्रिस्तरीय चारपाइयों पर सोते हैं और भोजन से पेट नहीं भरता। यह मजदूर पहली बार बंगलादेश से बाहर निकले थे — अनेक तरीकों से कम्पनी का विरोध आरम्भ किया। कम्पनी हर समय धमकी देती : वापस बंगलादेश ! निवास फैक्ट्री के अन्दर था और यह-वह डर दिखा कर कम्पनी बाहर नहीं जाने देती। इन सिलाई कारीगरों ने बंगलादेश से रोमानिया आ कर निर्माण कार्य में लगे मजदूरों से तालमेल बैठाया। स्थानीय लोगों के बीच बातें पहुँची और उनकी सहानुभूति मिली। दो महीने फैक्ट्री में बन्द रखने के बाद रविवार को छुट्टी के दिन कम्पनी को इन्हें शहर में घूमने जाने देना पड़ा। कम्पनी की समस्या यह भी है कि बाहर निकले मजदूरों में से कई अन्य जगह चले जाते हैं। इसलिये बन्द रखो ! बाहर से लाये जाते मजदूर पाबन्दियों को धत्ता बता कर मौका मिलते ही रोमानिया से यूरोप के अन्य देशों में चले जाते हैं। कम्पनी पासपोर्ट और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज अपने पास रखती है फिर भी..... (सम्पर्क के लिये

< ana.cosel@web.de > और
< antoniamautempo@gmx.net >)

आज चीन में

आजकल विश्व-भर में चीन की बहुत चर्चा है। चाहे उद्योगपति हो या नेता, मजदूर हो या छात्र, चीन को लेकर उत्सुक्ता हम सब के मन में है। हम सब जानना चाहते हैं कि चीन में क्या हालात हैं। महज 50 सालों में चीन सरकार ने कैसे इतनी तरक्की कर ली कि आज वह अमरीका सरकार को चुनौती दे रही है। तीन महीने पहले मैं इसी कौतूहल के साथ चीन गया था। दो महीने वहाँ रहने और उनके साथ काम करके वहाँ के लोगों से मैंने बहुत कुछ जाना। अगले महीने से मैं अपने अनुभवों के बारे में लिखूँगा। — अ

इन सौ वर्षों में

व्यवस्था, संकट, मन्दी, महामन्दी भारी-भरकम शब्द हैं। इनकी व्याख्या का प्रयास हम यहाँ नहीं करेंगे। लेकिन इधर इन शब्दों की चर्चा कुछ ज्यादा ही है। और, जब-जब ऐसा हुआ है तब-तब इन सौ वर्षों में सत्ता ने, सरकारों ने हथियारों तथा सैनिकों की वृद्धि में अत्यन्त तीव्रता लाई है। नतीजे रहे हैं :

●1914-1919 की महा मारकाट जिसे पहले महायुद्ध कहते थे और अब प्रथम विश्व युद्ध कहते हैं। इस दौरान ढाई करोड़ लोग तो युद्ध में ही मारे गये।

●1939-1945 वाली और भी बड़ी मारकाट जिसे द्वितीय विश्व युद्ध कहते हैं। इसमें पाँच करोड़ लोग युद्ध में मारे गये।

ऊँच-नीच, लूट-खसूट, अमीर-गरीब की स्थितियों में युद्ध तो लगातार चलते ही रहे हैं। इधर 1890 से संकट की जो बातें आई उन्होंने युद्धों की सँख्या व तीव्रता को बढाया और शिखर था 1914-19 का महायुद्ध। और, 1929 की महामन्दी ले गई 1939-45 के दूसरे विश्वयुद्ध में। उन दौरानों में जो अनुभव हुये उन्हें जानने, समझने तथा उन पर मनन कर आज क्या-क्या करें और क्या-क्या नहीं करें यह तय करना आवश्यक है। इधर फिर संकट और मन्दी की हावी चर्चा ने इसे हमारे लिये अर्जेन्ट बना दिया है।

— मण्डी-मुद्रा के दबदबे में बेरोजगारी तो रहती ही है, संकट-मन्दी के दौर में बेरोजगारी बहुत बढ जाती है।

— मजदूरों-मेहनतकशों के लिये तो संकट-मन्दी सीधे-सीधे जीवन-मरण का प्रश्न खड़ा कर देते हैं। असंतोष बहुत बढ जाता है। मजदूरों को, किसानों को बाँधे रखने के प्रचलित तौर-तरीके नाकाफी साबित होते हैं।

— सत्ता के इर्द-गिर्द के लोगों की अनिश्चितता -अस्थिरता के संग-संग असुरक्षा व उसकी भावना बढ जाती हैं। सत्ता के शिखर पर बैठे लोगों पर ''कुछ करो'' के लिये दबाव तेजी से बढता है।

— जेलें बढाई जाती हैं, पुलिस बल में भारी वृद्धि की जाती है, और सेना सर्वोपरि स्थान लेने लगती है।

— सरकारें तथा कम्पनियाँ आज मण्डी-मुद्रा की प्रतिनिधि हैं। इसलिये संकट-मन्दी की मार से मण्डी-मुद्रा को बचाने के लिये सरकारें तथा कम्पनियाँ अनेकानेक हथकण्डे अपनाती हैं। मजदूरों, किसानों, दस्तकारों को शिकार बनाने के लिये पापड़ बेले जाते हैं। मजदूरों-किसानों के विरोध-विद्रोह को दबाने के लिये निर्मम दमन के संग-संग लोक लुभावने नारे उछाले जाते हैं। मेहनतकशों में से ही कुछ को ''अन्य'' बताया जात है, ''शत्रु'' कहा जाता है।

— सरकारें तथा कम्पनियाँ संकट-मन्दी की मार को अन्य सरकारों व कम्पनियों पर धकेलने के लिये गिरोह बनाती हैं। और, मजदूरों-मेहनतकशों को दबाने-पुचकारने में सफलता आगे ही दो महायुद्धों को जन्म दे चुकी है।

आज अन्तरिक्ष तक युद्ध-क्षेत्र और युद्ध के लिये क्षेत्र बन गया है। एटम बमों और प्रक्षेपास्त्रों के भण्डार तो हैं ही। ऐसे में हमारे लिये सर्वोपरि महत्व की बात तो यह है कि सरकारों के गिरोहों के बीच तीसरा विश्व युद्ध नहीं हो। इसके लिये जरूरी है कि मजदूरों-मेहनतकशों के असन्तोष, विरोध, विद्रोह हर जगह बढें।

✶ सरकारों और कम्पनियों पर भरोसा बर्बादी की राह है। कुर्बानी की घातकता दर्शाने के लिये उदाहरणों की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। आज उँगली माँगने वाले कल पहुँचा माँगेंगे, परसों पूरा हाथ और फिर धड़। शहीद को दूर से सलाम! हर कदम पर और जहाँ तक हो सके - जिस प्रकार का हो सके विरोध करना बनता है। ताकत के बल पर इस-उस जगह कम्पनियाँ अपनी शर्तें थोप देती हैं तो भी हमारी सहानुभूति अधिक चोट खाये मेहनतकशों के प्रति होनी बनती है। छँटनी जैसी चीजों के लिये मौन सहमति-स्वीकृति खतरनाक है। पीट दिये अथवा पिट गये पर हँसना, मजाक उड़ाना अपनी बारी नजदीक लाना है। सरकार और बैंकों पर भरोसा करके अमरीका में जो डूब गये, सड़क पर आ गये उन से यह सीख लेना बनता है कि जहाँ तक हो सके बैंकों से अपने पैसे निकाल लें, बैंकों में पैसे जमा नहीं करायें। पेट काट कर दो पैसे बचाना और उन्हें कम्पनियों के शेयरों में लगा कर डुबाना..... दरअसल समस्या पैसों पर भरोसे में है। अनेकानेक समस्याओं से पार लगाने के लिये पैसों पर भरोसा किया जाता है। इस सन्दर्भ में यह याद रखने की आवश्यकता है कि साठे-क वर्ष पहले जर्मनी में, जापान में थैला भर कर पैसे ले जाना और मुट्ठी में सब्जी लाना सामान्य हो गया था। इधर विश्व के कई क्षेत्रों में स्थानीय मुद्रा थैले-मुट्ठी वाली स्थिति में आ गई है। आज की अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा, डॉलर के साथ कब यह हो जाये किसी को पता नहीं — विशेषज्ञ मौन हैं। वास्तव में रुपयों-पैसों पर भरोसा करना सरकारों पर भरोसा करना है। और, विश्व-भर में सरकारें

डगमगा रही हैं...... इसलिये भरोसा आपस में ! थोड़ा ठहर कर देखिये कि इतनी सारी जलन-चुगली के बावजूद हम अभी भी एक-दूसरे पर कितना भरोसा करते हैं, कितनी प्रकार के भरोसे करते हैं। हाँ, भरोसे तो चाहिये ही चाहियें — आपस में भरोसा बढाना बनता है।

✶बढती बेरोजगारी बढती सँख्या में सेक्युरिटी गार्ड, पुलिसकर्मी, सैनिक की नौकरी लाती है। इनकी भर्ती मेहनतकशों की कतारों से होती है। मेहनतकशों में से किसी को ''अन्य-दूसरे-शत्रु'' बना कर अपने गुस्से का टारगेट बनाना गर्त की राह है। गार्ड का रुख और गार्ड के प्रति रुख महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। बढिया गार्ड बनने के फेर में नहीं पड़ना.... सिपाही को शत्रु नहीं लेना। दोनों तरफ से खानापूर्ति, महज खानापूर्ति और आपस में टकराव से बचना बनता है। सशस्त्र संघर्ष और विद्रोह की स्थिति में भी आपस में मरने-मारने से बचना बनता है। वर्दी वाले मेहनतकश बच कर निकलना खूब जानते हैं, इसे बढाने की आवश्यकता है। प्रेरणा 1914-19 और 1939-45 के सैनिकों से लेनी चाहिये। बरसों खन्दकों-मोर्चों पर रहे 95 प्रतिशत सैनिकों ने गोली ही नहीं चलाई या फिर गोली हवा में चलाई और बमों को निर्जन स्थानों पर डाला। हक्की-बक्की सरकारों और जनरलों ने वीरों के, शहीदों के किस्से गढे तथा चन्द सिरफिरों को महिमामंडित किया। और फिर, युद्ध के दौरान 1917 में रूस में सिपाहियों ने बन्दूकें जनरलों की ओर मोड़ कर नई समाज रचना के लिये हालात बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इस समय संकट-मन्दी की बात हो रही है पर यह प्रक्रिया इधर हर समय चल रही है। बात डर-भय की नहीं है, डर को बढाने की नहीं है। हम तो यूँ भी दिन में सौ बार मन को मारते हैं, रोज ही कई-कई बार मरते हैं। पर फिर भी जीवन की लालसा है! इसलिये जीवन को सिकोड़ती-संकीर्ण बनाती-दुखदायी बनाती ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी, मण्डी-मुद्रा को दफा करना है....

फैक्ट्री रिपोर्ट

फरीदाबाद में :

ए पी इंजिनियरिंग वर्क्स मजदूर : '' प्लॉट 79-80-81 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में कपारो और मारुति सुजुकी की शीट मैटल कम्पोनेन्ट्स का काम होता है। सी एन सी मशीनों पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी जगह 12 घण्टे की एक शिफ्ट। फैक्ट्री में 250 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 25 की ही हैं। पावर प्रेस 70 हैं और सब मैकेनिकल हैं — महीने में एक-दो एक्सीडेन्ट हो जाते हैं। ज्यादा हाथ कटने पर पीछे की तारीख से ई.एस.आई. करवा देते हें। उँगली का पोर कटने पर कोई ई.एस. आई. नहीं, मजदूर प्रायवेट में स्वयं उपचार करवायें और दवा के पैसे कम्पनी से लेते समय चार गाली सुने। हैल्परों की तनखा 2200 रुपये, प्रेस ऑपरेटरों की 2400 और सी एन सी ऑपरेटरों की 3000-3200 रुपये। जिन 25 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उन्हें देते 2700-2850 रुपये हैं पर हस्ताक्षर 3510 और 3640 पर करवाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे 2700-2850 में से काटते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। डायरेक्टर सुभाष पाहवा बहुत गाली देता है, थप्पड़ मार देता है।''

लखानी फुटवीयर कामगार : ''प्लॉट 266 सैक्टर-24 स्थित कम्पनी के II प्लान्ट में अब मोल्डिंग विभाग के 160 मजदूर ही 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। एक महीने पहले तक पूरी फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी — महिला मजदूरों की 10 घण्टे दिन की। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर की बजाय डेढ की रेट से। फैक्ट्री में 550 पुरुष और 350 महिला मजदूर एडिडास और रीबोक के लिये जूते बनाते हैं। एडिडास के प्रतिनिधि महीने में एक दिन फैक्ट्री आते हैं। उस दिन फैक्ट्री चमका दी जाती है और मजदूरों को दो घण्टे के लिये मास्क, दस्ताने, चश्मे दिये जाते हैं। साहब कहते हैं, 'कोई पूछे तो कहना कि ओवर टाइम नहीं है, तीन शिफ्ट हैं।' फैक्ट्री में काम का दबाव बहुत ज्यादा है और परसनल वाले तथा सुपरवाइजर लैट्रीन-बाथरूमों में छापे मारते हैं, अन्दर घुस जाते हैं, बदतमीजी करते हैं।''

गुड़गाँव में :

ऋचा ग्लोबल मजदूर : ''प्लॉट 232 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में पीने के पानी की परेशानी है और बोतल में पानी अन्दर ले जाने नहीं देते। महिला मजदूरों को भोजन अवकाश के समय फैक्ट्र से निकलने नहीं देते। बिना कोई पत्र दिये स्थाई मजदूरों को निलम्बित करते हैं और निलम्बन भत्ता नहीं देते। छुट्टी देते ही नहीं और एक दिन छुट्टी करने पर एक दिन वापस भेज देते हैं। ड्युटी करते 7-8 महीने होने से पहले ही इधर इस्तीफे लिखवा लेते हैं। और, जिन मजदूरों को काम करते 2 वर्ष हो गये हैं उन्हें अकेले-अकेले एक कमरे में बुलाते हैं जहाँ जनरल मैनेजर, वकील व पुलिसवाला बैठे होते हैं। जबरन इस्तीफा लिखवाते हैं — मजदूर के इनकार करने पर किसी मामले में फँसा देने की धमकी देते हैं, एक महिला मजूर के जनरल मैनेजर ने थप्पड़ मारा।''

हरियाणा इन्डस्ट्रीज श्रमिक : ''प्लॉट 318 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 300 पावर प्रेसों पर 2500 मजदूर मारुति सुजुकी कारों के पुर्जे बनाते हैं। यहाँ

से 20 गाड़ी (407 टाटा) गाड़ी माल रोज मारुति फैक्ट्री जाता है। मजदूरों को 8 घण्टे के 90 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। उँगली रोज कटती रहती हैं और महीनें में 2-3 बन्दों के हाथ कट जाते हैं। कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती, उपचार के पैसे नहीं देती, मजदूर खुद प्रायवेट में इलाज करवायें। फैक्ट्री में जो 150 स्थाई हैं वो सब सुपरवाइजर हैं और बाकी को 6-7 महीने में निकालते रहते हैं। हैल्परों से पावर प्रेस जबरन चलवाते हैं और माल खराब होने पर गाली, मारपीट, नौकरी से निकाल देना। मुख्य द्वार के अन्दर चार द्वार — तीन में पावर प्रेस और एक में पैकिंग। जाँच के लिये आने वाले अधिकारी कार्यस्थलों पर नहीं आते, दफ्तर में ही बैठ कर चले जाते हैं और..... और उस समय 500 मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर निकाल दिया जाता है। सौ रुपये प्रतिमाह ड्युटी के हिसाब से दिवाली पर मजदूरों को बोनस देते हैं। फैक्ट्री में रात की ड्युटी के दौरान मैनेजमेन्ट लैट्रीन-बाथरूम में ताला लगा देती है। कोई छुटी नहीं, महीने के तीसों दिन काम।''

इन्डीगो एक्सपोर्ट वरकर : '' प्लॉट 574-75 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 1 बजे तक जबरन रोक लेते हैं और भोजन के पैसे नहीं देते। फैक्ट्री में बीमार पड़ने पर भी छुट्टी नहीं देते और साँय 6 बजे चले जाओ तो पूरे दिन की दिहाड़ी काट लेते हैं। ड्युटी के लिये 5 मिनट देरी से पहुँचने पर वापस भेज देते हैं। तनखा देरी से — कम्पनी द्वारा स्वयं भरती को सितम्बर की तनखा 18 अक्टूबर को दी और ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को आज 21 अक्टूबर तक नहीं दी है। पैसे माँगने पर गाली देते हैं। फैक्ट्री में बच्चों के कपड़े बनते हैं और माल दुबई जाता है। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा है और उस से कम देने पर निकाल देते हैं। वैसे भी 2-4 महीने में ब्रेक कर ही देते हैं। फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूरों में 2-4 पुराने वरकरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।''

विशाल मेगामार्ट मजदूर : '' कम्पनी की कई बड़ी दुकानें हैं और प्लॉट ए-244 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 2200-2500 मजदूर सिले-सिलाये वस्त्र तैयार करते हैं। जबरन ओवर टाइम करवाने हैं, भुगतान सिंगल रेट से और ऐसे में भी 500 रुपये बनते हैं तो 200 देते हैं। हैल्परों की तनखा 3510 रुपये — जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं देते। तनखा से ई.एस.आई. व पी. एफ. के 500 रुपये काटते हैं और फिर 250 रुपये अलग से काटते हैं। फोटो खिंचवाते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे मुश्किल से। निकालने पर किये काम के पैसों के लिये चक्कर कटवाते हैं। सितम्बर की तनखा 18 अक्टूबर को दी।''

आज चीन में

कोई परिचित नहीं हो पर जेब में कछ पैसे हों तो नये देश या शहर में टैक्सी चालक अच्छे गाइड साबित होते हैं। लेकिन चीन में टैक्सी चलाने वाले अधिकतर लोग अँग्रेजी नहीं समझते और मुझे अन्य भाषा के तौर पर अँग्रेजी ही आती है। इसलिये चीन में चीजें जानने के लिये मुझे दूसरे जरियों का प्रयोग करना पड़ा। तीन महीने मैं शंघाई में रहा और मैंने काफी कुछ नया सीखा व जाना। छोटी-छोटी बातें कितना कुछ बता देती हैं। हर कदम पर मुझे वहाँ के लोगों ने मदद की।

चीन के बारे में भारत में कई धारणायें बनी हुई हैं। कुछ सच हैं, कई गलत। मुझे डराया गया था कि वह लोग साँप, चूहे, मेंढक खाते हैं। बिलकुल सही है। साँप और चूहे तो मैंने नहीं खाये, लेकिन मेंढक का स्वाद उत्कृष्ट था। हफ्ते में दो बार मैं मेंढक खाने लगा था।

खैर। मेंढक के अलावा चीन कई पैमानों पर बिलकुल भारत जैसा ही है। शंघाई से 300 किलो मीटर दूर एक प्रदेश है, गुइज़्हौ। जिस दिन मैं चीन पहुँचा, गुइज़्हौ में दंगे हो रहे थे। बात यह थी : वहाँ के किसी नेता के रिश्तेदार ने एक लड़की के साथ दुर्व्यवहार कर उसकी हत्या कर दी थी और स्थानीय प्रशासन दोषी को बचाने में मदद कर रहा था। दो महीनों तक गुइज़्हौ के लोग सरकारी दमनचक्र का सामना करते रहे थे। मुझे लगा मैं भारत की खबर पढ रहा हूँ। शंघाई पहुँचने के एक हफ्ते बाद एक और घटना हुई। एक कैदी ने वहाँ पुलिस थाने में 6 पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी। बाद में कैदी ने बताया कि पुलिस ने उसे झूठे मुकदमे में मात्र इसलिये फँसा रखा है क्योंकि उसने उन्हें घूस देने से इनकार कर दिया था। पुलिस ने उसके आरोपों को बेबुनियाद बताया। खैर, अगले दिन शंघाई में उस व्यक्ति के समर्थन में हजारों लोग सड़कों पर उतर आए थे।

चीन में एक पार्टी की सरकार है, कम्युनिस्ट पार्टी की। पार्टी बहुत ताकतवर है और अकेला इन्सान पार्टी या सरकार की निंदा नहीं कर सकता-सकती। लेकिन उतना ही भय पार्टी को लोगों से भी है। शंघाई, हांगकांग, बीजिंग में आए दिन प्रदर्शन होते रहते हैं। लोग कभी प्रदूषित हवा के खिलाफ आवाज उठाते हैं तो कभी सड़कों पर खिलौनों की बिक्री पर पाबन्दी के खिलाफ। मजबूरन सरकार को लोगों की कुछ बातों को मानना ही पड़ता है।

अगले अंक में चीन के ताजा घटनाक्रम, वहाँ की औद्योगिक और खासतौर पर मजदूरों की स्थिति पर मैं अपने अनुभव बताऊँगा। — अ

धन्धा दवा का

यहाँ हम अँग्रेजी, यानी ऐलोपैथिक दवाईयों की ही चर्चा करेंगे। इस समय करीब 13 हजार दवाईयाँ हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इन में से 257 को ही आवश्यक घोषित किया है।

ऐलोपैथी का मूल सूत्र है : दवाई एक जहर है। कम से कम और बहुत-ही सावधानी से दवा लेनी-देनी चाहिये।

और आज सूत्र है : '' बीमारी एक तो दवाई कम से कम छह दो।'' एक दवा बीमारी पर नियन्त्रण के लिये। दूसरी दवा बीमारी के लक्षणों को सीमित करने के लिये। और, इन दवाईयों के दुष्प्रभावों को कम करने की दवा.... ऐलोपैथी के अपने मापदण्ड के अनुसार जो दवा दी जा रही हैं उन में 60 प्रतिशत अनावश्यक हैं, 40 प्रतिशत ही आश्यक हैं।

अधिक दवा देने का मुख्य कारण दवा का धन्धा है। दवा कम्पनियाँ स्कीमों के जरिये लालच और खुली रिश्वत का बड़े पैमाने पर प्रयोग करती हैं। गया वह जमाना जब डॉक्टरों को स्वयं जाँचने के लिये दवा के सैम्पल दिये जाते थे।

दवा के उत्पादन की लागत से तीन-चार गुणा राशि दवा के प्रचार-प्रसार के लिये खर्च की जाती है। दवा पर जो मूल्य अंकित होता है उसके एक तिहाई या इस से भी कम कीमत पर दवा कम्पनियाँ इन्हें थोक में खरीदने वालों को देती हैं।

एक और गोरखधन्धा जेनेरिक दवा तथा पेटेन्ट दवा का है। जेनेरिक और पेटेन्ट दोनों एक ही दवा होती हैं लेकिन उनके मूल्य में बहुत ज्यादा फर्क होता है। किसी दवा की जेनेरिक गोली एक रुपये में मिलती है तो उसी दवा की पेटेन्ट गोली दस से पचास रुपये में मिलेगी। जिक्र कर दें, जेनेरिक दवा बनाने वाली कम्पनियाँ भी भारी मुनाफा कमाती हैं।

और फिर, नकली दवा अपने आप में एक बहुत बड़ा धन्धा है। भारत में करीब तीस प्रतिशत दवाओं के नकली होने का अनुमान है।

यहाँ की एक और बात करें। दवा के परीक्षण के लिये मनुष्यों पर किये जाते प्रयोग भी भयावह हैं। कम्पनियों को परीक्षण करने वाले सस्ते मिलते हैं, डॉक्टरों का भाव यहाँ यूरोप-अमरीका की तुलना में बहुत कम है। और, जिन पर परीक्षण किये जाते हैं उनकी असहायता तो और भी ज्यादा है। जिन पर परीक्षण किये जाते हैं उन्हें बताया तक नहीं जाता कि उन पर दवा का परीक्षण किया जा रहा है। इस सब का एक बहुत-ही दुखद परिणाम हाल ही में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में 400 बच्चों की मृत्यु रहा है।

एक कथन है : ऐलोपैथी के शब्द कोष मैटिरिया मैडिका में वर्णित सभी दवाईयों को अगर महासागर में डाल दिया जाये तो मानव जाति का बहुत कल्याण होगा और मछलियों को बहुत नुकसान होगा।

अन्त में : वायरल बीमारियों को नियंत्रित करने वाली कोई दवाई नहीं है। शरीर अपनी प्रतिरोधक क्षमता का उपयोग कर वायरल बीमारियों का उपचार करता है।

सरकारी निर्माण

भटिण्डा छावनी निर्माण मजदूर : ''बहुत बड़ी भटिण्डा छावनी में तीन स्थानों पर कई हजार दुमंजिला और तिमंजिला मकान फौजियों के परिवारों के लिये डेढ वर्ष से बन रहे हैं। निर्माण कार्य में यूँ तो कई जगहों के मजदूर हैं पर अधिक सँख्या छत्तीसगढ, उड़िसा और बिहार से मजदूरों की है। बड़े ठेकेदारों ने बिलासपुर, रायगढ, बोलंगीर, कटिहार से 15-30 के समूहों में इक्ट्ठी टिकट कटवा कर मजदूर लाने के लिये लोग रखे हैं। ईंट-गारा, मिट्टी, पत्थर, लोहा ढोने वाली महिला मजदूरों को कुली कहते हैं और इन्हें 8 घण्टे के 65-70 रुपये देते हैं। साल-भर पहले 4-5 हजार महिला मजदूर थी, अब काम पूरा होने वाला है और इस समय 1-1½ हजार हैं। यही कार्य पर थोड़ा ज्यादा वजनदार काम करते पुरुष मजदूरों को बेलदार कहते हैं और इन्हें 8 घण्टे के 70-80 रुपये देते हैं। बच्चे भी निर्माण कार्य में हैं : 10-16 वर्ष की लड़की को कुली कहते हैं और 8 घण्टे काम के 45 रुपये देते हैं, 10-16 वर्ष के लड़के को बेलदार कहते हैं और 8 घण्टे के 50 रुपये देते हैं। चिनाई मिस्त्री को 8 घण्टे के 110-120 रुपये और यह भी 2-3 हजार थे, अब 900-1000 हैं। जमादार लोग प्रतिमाह कुली से 100 में 2 रुपये, बेलदार से 5, और मिस्त्री से 10 रुपये कमीशन लेते हैं। अन्य कारीगर कार्य-अनुसार आते-जाते रहते हैं और कई लोग बड़े ठेकेदारों से अलग-अलग काम के ठेके लेते हैं। छत डालने (शटरिंग), लिपाई, प्लम्बर, बिजली, रंग-रोगन, टाइल, फर्श के ठेके लेने वाले 100-120 रुपये दिहाड़ी पर मजदूर रखते हैं। ठेके वाले कार्यों में रोज 12-14 घण्टे काम। निर्माण मजदूरों के निवास के लिये 5 X 7 फुट के कमरे, ऊँचाई 6 फुट और ऊपर टीन की चद्दर। चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं, एम्बुलैन्स नाम की चीज नहीं। निवास स्थल पर नंगे तार — बिजली ने मजदूरों के दो बच्चों की जान ले ली। बगल की नहर में मजदूरों के दो बच्चे डूब कर मरे। इधर छावनी में निर्माण कार्य पूरा होने को है और गुरु गोविन्द सिंह भटिण्डा रिफाइनरी में जोर पकड़ रहा है — मजदूरों के लिये हालात वहाँ भी ऐसे ही हैं।''

आईये अपने आप से कुछ बातें करें

अपने आप से बात करने के लिये समय चाहिये। और यहाँ मरने की फुर्सत नहीं है।

पर बात इतनी ही नहीं लगती। वास्तव में खुद से बात करने में डर लगता है। स्वयं से बात करने से बचने के लिये भागमभाग में लगे रहते हैं। कोशिश करते हैं कि खाली न हों। काम ढूँढते हैं, चिन्तायें ढूँढते हैं, गुस्सा-भड़ास की वजहें ढूँढते हैं-निकालने के जरिये ढूँढते हैं।

कारण ? हर समय प्रत्येक का अत्यन्त नाजुक सन्तुलन में होना, सन्तुलन बिगड़ने की स्थिति में होना।

ऐसा काफी समय से है। बल्कि, अनिश्चितता-अस्थिरता-असुरक्षा बढ़ती आई है।

●सड़क ही लें। सड़कें बढ़ती आई हैं। वाहनों की सँख्या और रफ्तार बढते आये हैं। भारत सरकार के क्षेत्र में ही अब प्रतिदिन 400 लोगों की सड़कों पर हादसों में अकाल मृत्यु हो रही है। और, गति-वाहन-सड़क-तनाव की चपेट में यहाँ हर रोज 5000 लोग बुरी तरह घायल हो रहे हैं। एक सड़क ही सब कुछ बिगाड़ने के लिये पर्याप्त है। सड़क कैसे छोड़ें ?

●फरीदाबाद में फैक्ट्रियाँ लें। इन में हर रोज पावर प्रेसों पर 200 मजदूरों की उँगलियों के पोर, पूरी उँगलियाँ, अँगूठे, पहुँचे से हाथ कटते हैं। फैक्ट्री कैसे छोड़ें ? नौकरी कैसे छोडें ?

बहुत-ही बच कर चलते हैं। तन की तब ऐसी दुर्गत है। मन का तो और भी बुरा हाल है।

डर और लालच के छोटे-से अखाड़े में हम बींध दिये गये हैं। डर और लालच के संकीर्ण दायरे में हम स्वयं को हाँकने लगे हैं। हालात का बद से बदतर होना इसका परिणाम है।

कुछ करने से क्या होगा ?

इस सन्दर्भ में आईये अपने कल, आज, और आने वाले कल को देखने का प्रयास करें। जो बीत गया उससे सबक लेना आसान होता है। पहले स्वयं को धोखा देने के लिये प्रयोग की गई दलीलें लें — यह आज भी व्यापक स्तर पर इस्तेमाल हो रही हैं।

अपने तन और मन के खिलाफ जाने के लिये ''पापी पेट'' की दलील दी गई। कहा कि बच्चों के लिये जलालत झेल रहे हैं। और, अचूक बाण : यह सब ''जिम्मेदारियाँ निभाने के लिये'' कर रहे हैं।

नकारते रहे हैं हम तथ्यों को। मुँह चुराते रहे हैं वास्तविकता से। ''मेरे''-''हमारे'' साथ ऐसा नहीं होगा का स्वपन बार-बार धराशायी होने पर भी स्वपन बना रहा है।

हम जो करते रहे हैं उसका असर पड़ा है — पर वह नहीं जो हम चाहते थे। पेट-बच्चों-जिम्मेदारियों की स्थिति और विकट हो गई है। हम जो करते रहे हैं उससे दोहन-शोषण पृथ्वी के गर्भ से अन्तरिक्ष तक फैल गया है। और तीव्र गति ने हमारी दुर्गत कर दी है।

इसलिये प्रश्न : ''क्या फर्क पड़ता है?'' नहीं है। बल्कि हमारे लिये सवाल यह हैं : ''हम जो कर रहे हैं उससे कितना और कैसा फर्क पड़ेगा ? हम जो कर रहे हैं वह नहीं करें तो क्या और कैसा फर्क पड़ेगा ? हम जो परिवर्तन चाहते हैं उनके लिये क्या-क्या कर सकते हैं ?''

छुट्टी-छुट्टी-छुट्टी

तन के लिये अच्छी, मन के लिये अच्छी, जीवन के लिये अच्छी है छुट्टी ! और आज छुट्टी अपने संग भय-आशंका लिये है।

कितना हिसाब लगाते हैं हम एक दिन की छुट्टी के लिये। दिहाड़ी टूटने की बात। एक दिन की छुट्टी पर दूसरे दिन वापस भेज दिये जाने का भय। नौकरी से निकाल दिये जाने का डर। बहुत-ही मजबूरी में छुट्टी करते हैं। सोचते हैं कि छुट्टी करने में नुकसान ही नुकसान है, मजदूर को नुकसान है।

लेकिन तथ्य और ही कुछ बयान करते हैं। यह कम्पनियाँ हैं जो चाहती हैं कि मजदूर छुट्टी नहीं करें। पूर्ण उपस्थिति के लिये कम्पनियाँ पुरस्कार राशि देती हैं। और, अनुपस्थिति के लिये सजा के प्रावधान। हाँ, कम्पनियों को जब जरूरत नहीं होती तब जबरन छुट्टी करती हैं। जबरन छुट्टी सजा है, यह छुट्टी नहीं होती।

आईये मजबूरी में छुट्टी और जबरन छुट्टी के संकीर्ण दायरे से बाहर निकलने की कोशिश करें। तन कहे तब छुट्टी करना। मन कहे तब छुट्टी करना। साथी कहे तब छुट्टी करना....... उल्टी गँगा सीधी होने लगेगी।

विशाल कम्पनियों के दिवालिया होने, बड़े-बड़े बैंकों के बैठ जाने, दूसरों के भविष्य की गारन्टी देने वाली बीमा कम्पनियों के दिवालिया होने के इस दौर में अपने आप से बातें करना और भी जरूरी हो गया है। यह समय नये सिरे से प्रश्न करने का है। कम्पनी-बीमा-बैंक-सरकार पर भरोसे के स्थान पर नये भरोसों को स्थापित करने का वक्त है यह।

फैक्ट्री रिपोर्ट

फरीदाबाद में :

वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइजेज मजदूर : ''31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 1000 से ऊपर वरकर हैं — अधिकतर को ठेकेदारों के जरिये रखा है। सैकेन्ड प्लान्ट की प्रेसशॉप में 250 से 600 टन की 18 बड़ी पावर प्रैस और 50 से 100 टन की 10 छोटी पावर प्रेसों पर 200 मजदूर काम करते हैं — सब वरकर ग्लोबल ठेकेदार के जरिये रखे हैं। जहाँ छोटे पुर्जे बनते हैं उस जनरल प्रेस शॉप में मुश्किल से 8-10 स्थाई मजदूर हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। मेरे सामने पावर प्रेसों पर दो मजदूरों के पहुँचे से हाथ कटे और एक वरकर की दो उँगली कटी — कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी, प्रायवेट में इलाज करवाया। फैक्ट्री में मारुति सुजुकी के सब मॉडलों और होण्डा कार के पुर्जे बनते हैं। साहब लोग गाली देते हैं।''

टेकमसेह प्रोडक्ट्स मजदूर : ''38 किलोमीटर पत्थर, मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में रेफ्रिजिरेटरों के कम्प्रेसर बनते हैं। केल्विनेटर से व्हर्लपूल ने फैक्ट्री ली और 2500 मजदूरों की छँटनी करने के पश्चात 1997 में कम्प्रेसर डिविजन टेकमसेह कम्पनी को दी थी। तब वर्तमान स्थल के संग इन्डस्ट्रीयल एरिया में भी जगह थी और 1420 स्थाई मजदूर थे। सन् 2000 में तालाबन्दी और सरकार से कुछ विभाग बन्द करने की अनुमति ले कर कम्प्नी ने 500 स्थाई मजदूरों की छँटनी की तथा पूरा कार्य वर्तमान स्थल पर स्थानान्तरित किया। कथित वी आर एस के तहत जिन 50 मजदूरों ने इस्तीफे नहीं दिये उन्हें हैदराबाद फैक्ट्री भेजा। पुनः 2004 में कम्पनी ने 'स्वैच्छिक सेवा निवृति योजना' लागू की और 900 स्थाई मजदूरों में से 280 नौकरी से निकाला। अब फिर वी.आर.एस.! कम्पनी ने 1 नवम्बर को नोटिस लगाया कि 15 नवम्बर तक कम से कम 150 स्थाई मजदूर इस्तीफे देंगे तो योजना लागू होगी। इस वर्ष में कम्पनी ने लेमिनेशन विभाग बन्द किया, वायर वाइन्डिंग बन्द किया, टूल रूम बन्द किया... मैनेजमेन्ट मशीनें बाहर ले जाने लगी तो मजदूरों ने रोका। यूनियन ने 'किसी की नौकरी नहीं जायेगी' का श्रम विभाग में समझौता होने की कह कर मशीनें जाने देने को कहा। मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच दीर्घकालीन समझौता हुआ। अति कुशल श्रमिकों को लाइन पर माल चढाने-उतारने में लगाया गया, बार-बार स्थान बदले गये। ऑफ सीजन आरम्भ होते ही सब कैजुअल वरकर निकाल दिये। और, दो महीने बाद वी.आर.एस...... पहले सप्ताह मैनेजमेन्ट ने दबाव नहीं डाला। इस्तीफों की सँख्या बहुत कम। फिर 10 नवम्बर को अधिकारियों के दल सूचियाँ ले कर विभागों में जाने लगे, नाम बताने लगे और बोले कि 50 वर्ष आयु से ऊपर वाला कोई मजदूर फैक्ट्री में नहीं रहेगा। साहबों को 13 नवम्बर तक प्रभाव नजर नहीं आया तो धमकाने लगे। 'इस्तीफे लिखो या चेन्नै, हैदराबाद, सिलवासा, सिलीगुड़ी जाओ अन्यथा निलम्बित हो'। साहब लोग 15 नवम्बर को रात 9 बजे तक फैक्ट्री में रहे : '15 नवम्बर तक तुम्हारा है, फिर कम्पनी की मर्जी — कुछ भी हो सकता है!' इस सब के बावजूद कम्पनी न्यूनतम निर्धारित सँख्या के निकट तक भी नहीं पहुँच पाई। तब साहब लोग सोमवार, 17 नवम्बर सुबह 10 बजे तक का समय दे कर गये.... फैक्ट्री टेकमसेह कम्पनी के नियन्त्रण में आने के बाद स्थाई मजदूर एक-तिहाई हो रहे हैं और उत्पादन चार गुणा हो गया है। हैदराबाद फैक्ट्री में तो वी आर एस का और भी बुरा हाल है — 14 नवम्बर तक मात्र 9 मजदूरों ने फार्म भरे थे।''

गुड़गाँव में :

विवो ग्लोबल वरकर : '' प्लॉट 413 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में दिवाली पर बोनस नहीं दिया। पूछा तो बोले कि कम्पनी घाटे में चल रही है। जबकि, कम्पनी घाटे में हो तब भी एक महीने की तनखा के बराबर बोनस देने का कानून है। दिवाली पर मिठाई का डिब्बा भी नहीं दिया — साहब बोले कि कम्पनी चेयरमैन की माँ मर गई है। फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9½ से रात 9-10 बजे तक है। इस दौरान चाय के लिये कोई समय नहीं देते। भोजन के लिये पैसे नहीं देते। एक-डेढ लाख रुपये तनखा ले रहे साहब अपने कानून बनाते हैं, सुबह 9½ की जबह 8½ आने को कहते हैं। सिलाई कारीगरों की तनखा में से ठेकेदार का कमीशन काटते हैं। काम ज्यादा होने पर साहब लोग कमीशन पर फैब्रिकेटर से बनवाते हैं और काम कम होते ही बिना फण्ड दिये निकाल देते हैं। कोई जाँच आने पर बिना कार्ड वालों को पैसे मिलेंगे कह कर फैक्ट्री से निकाल देते हैं और तनखा में से उस दिन के पैसे काट लेते हैं।''

एवरग्रीन इन्टरनेशनल मजदूर : ''प्लॉट 756 उद्योग पिहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम 30 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2500 और कारीगरों की 3000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। अक्टूबर की तनखा 20 नवम्बर को जा कर दी।''

रांगी इन्टरनेशनल श्रमिक : ''प्लॉट 98 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में धागा काटने वाले मजदूरों की तनखा 2400 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जो तनखा है वह भी नहीं देते, बहुत माँगने पर 100-200 रुपये खर्चा के पकड़ा देते हैं। सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें 27 नवम्बर तक नहीं दी तो

हम धागा काटने वाले 35 महिला व पुरुष मजदूरों ने 28 नवम्बर को छुट्टी कर ली। आज, 29 नवम्बर को फैक्ट्री गेट पर 'धागा काटने वाले चाहियें' का बोर्ड लगाया है।''

ग्राफ्टी एक्सपोर्ट कामगार : ''प्लॉट 377 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी गेट पास नहीं देती — रात 2 बजे छूटने पर रास्ते में पुलिस बहुत परेशान करती है। सुबह 9½ से रात 8 बजे तक को कम्पनी ड्युटी कहती है और उसके बाद के समय को ओवर टाइम। रोज 10½ घण्टे पर हैल्परों को महीने के 3586 रुपये। साढे दस घण्टे की ड्युटी के बाद भी महीने में 150-175 घण्टे काम होता है। इन 150-175 घण्टों के लिये कम्पनी 16 रुपये प्रति घण्टा देती है, जिसे कम्पनी ओवर टाइम कहती है उसका भुगतान भी सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी. एफ. उत्पादन व फिनिशिंग में सिलाई कारीगरों और धागा काटने वालों में किसी के नहीं हैं।''

ऋचा ग्लोबल मजदूर : ''प्लॉट 232 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कीर्तिनगर, दिल्ली वाली कम्पनी की फैक्ट्री से ट्रान्सफर किये मजदूरों को इस्तीफों के लिये परेशान किया जा रहा है। इस वर्ष मार्च में दिल्ली से गुड़गाँव भेजने पर कम्पनी ने आने-जाने के लिये वाहन का प्रबन्ध नहीं किया और न ही वेतन में कोई वृद्धि की। ऐसे में कुछ मजदूरों ने दिल्ली में श्रम विभाग में शिकायत की और गुड़गाँव जाने से इनकार कर दिया। वहाँ श्रम विभाग में मामला अभी चल रहा है। स्थाई मजदूरों में से 13 गुड़गाँव फैक्ट्री आये। इन 8 महीनों में परेशान कर मैनेजमेन्ट ने 10 मजदूरों से इस्तीफे लिखवा कर उन्हें निकाल दिया है परन्तु दो महिला और एक पुरुष मजदूर नौकरी छोड़ने से इनकार पर अड़े हैं। बिना कोई पत्र दिये गेट रोकने जैसी हरकतों को झेल चुके इन मजदूरों को इधर मैनेजमेन्ट अन्य वरकरों से अलग बैठाने लगी है, अधिक उत्पादन माँग रही है, प्रोडक्शन मैनेजर गाली देता है।''

आज अन्तरिक्ष तक युद्ध-क्षेत्र और युद्ध के लिये क्षेत्र बन गया है। एटम बमों और प्रक्षेपास्त्रों के भण्डार तो हैं ही। ऐसे में हमारे लिये सर्वोपरि महत्व की बात यह है कि सरकारों के गिरोहों के बीच तीसरा विश्वयुद्ध नहीं हो। इसके लिये जरूरी है कि मजदूरों-मेहनतकशों के असन्तोष, विरोध, विद्रोह हर जगह बढें।

मंदी में पेट काटने की बातें

मंदी की बातें चारों तरफ हो रही हैं। बाजार में माँग कम है, उत्पादन कम करना है, कीमतें गिर रही हैं, खर्चे कम करने हैं। इससे बाजार में माँग और कम होगी..... पर खैर, कटौतियों की माँग बढ रही है। और ढर्रा यह चला आ रहा है कि चर्चायें मजदूरों के वेतन व नौकरियों में कटौती पर केन्द्रित हैं।

कम्पनियों के खर्चों में कटौती करनी है तो देखने की जरूरत है कि खर्चे हो कहाँ रहे हैं। कम्पनियों के कुल खर्चों पर नजर दौड़ायें तो मशीनों और कच्चे माल के अलावा खर्चे ऐसे बँटते दिखते हैं —

1. टैक्स। सरकारें भाँति-भाँति के टैक्स, कर, ड्युटी, एक्साइज ड्युटी, कस्टम ड्युटी, बिक्री कर, बिजली-सड़क-पानी-सम्पत्ति कर आदि-आदि कम्पनियों से लेती हैं। यह सब मिल-मिलाकर कुल खर्च का बड़ा हिस्सा बनते हैं।

2. ब्याज, डिविडेन्ड, किराये खर्च का दूसरा बड़ा हिस्सा हैं।

3. कट-कमीश-रिश्वत छोटे-बड़े ओहदों पर बैठे अधिकतर नेताओं, अफसरों, अधिकारियों, बाबुओं की दिनचर्या का अभिन्न अंग हैं। एक बड़ा खर्च यह भी हैं।

4. कम्पनियों के बड़े मैनेजर-डायरेक्टरों के वेतन-भत्ते भारी-भरकम होते हैं और यह लोग कम्पनी के काम के वक्त (या उस नाम से) मोटे खर्चे करते हैं।

हमारा अनुमान है कि 95 प्रतिशत या इससे भी ज्यादा खर्च कम्पनियाँ इन ऊपर दिये मदों पर करती हैं।

बचता है मजदूरों का वेतन। यह कम्पनियों के खर्च के 1-2-5 प्रतिशत के दायरे में ही आता है।

दो-तीन सौ साल मानव इतिहास में लम्बा समय नहीं है। इतना ही पीछे जा कर देखें तो दुनियाँ में फैक्ट्री उत्पादन शुरू नहीं हुआ था। अधिकतर उत्पादन किसान-दस्तकार करते थे। कुल उत्पादन के दसवें हिस्से, छठे हिस्से, चौथे हिस्से की वसूली ऊपर के तबकों द्वारा किये जाने की बातें सुनने को मिलती हैं। और किसानों-दस्तकारों का काम साल में दो-तीन महीने, कहीं ज्यादा तो 5-6 महीने। दिन में कुछ ही घण्टे का काम। रात में अँधेरा — छुट्टी। बड़े परिवार, लम्बे त्यौहार।

फैक्ट्री उत्पादन शुरू हुआ, और तेजी से मेहनतकशों की शामत आ गई, ताकत क्षीण होती गई। काम बढता गया — साल भर काम, दिन भर काम, रात में काम, त्यौहार छोटे होते गये, परिवार छोटे होते गये। मजदूरों के हाथ में आने वाला उत्पादन का हिस्सा कम होता गया। अब की स्थिति में आ पहुँचे हैं जहाँ

बड़ी सँख्या में मजदूर 12 घण्टे की शिफ्ट, ऊपर से ओवर टाइम, रात्रि में तेज गति से काम करते हैं। परिवार घटा रहे हैं, त्यौहार घण्टों के हिसाब से मना रहे हैं।

दूसरी ओर सेनाओं का, अंतरिक्ष यानों और यात्राओं का, फाइव स्टार खर्चों का तांता लगा हुआ है।

सवाल है : कटौती की जरूरत है तो किन खर्चों में ?

— अमित

उपचार और बाजार

यहाँ बीमारियों की बात नहीं करेंगे। बीमारियों के कारणों की चर्चा भी नहीं करेंगे। निगाह अंग्रेजी, यानी ऐलोपैथिक उपचार पर रखेंगे।

बात 1984-85 की है। तब मैं मेडिकल कॉलेज का छात्र था। मेरी इच्छा एक अच्छा चिकित्सक बनने की थी। इसके लिये आवश्यक ज्ञान व हुनर प्राप्त करना चाहता था। इसके साथ थोड़ा-सा धन कमाने की इच्छा भी जुड़ी थी। जरूरतमन्दों का उपचार करूँ और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये धन भी हो। मेरे अधिकतर सहपाठियों में भी यही भावनायें थी।

लेकिन, 1992 -93 से बाजार का उपचार पर हावी होते जाना मुझे दिखने लगा। यहाँ दिखने लगा।

साधनहीनों को अति आवश्यक होने पर भी उपचार उपलब्ध नहीं होना। सम्पन्नों को आवश्यक नहीं होने पर भी पैसों की चाह में उपचार परोसना। एक तरफ मर रहों को अस्पताल में बिस्तर नहीं और दूसरी तरफ सामान्य-सी बीमारी, जैसे वायरल बुखार होने पर भर्ती कर लेना तथा 50-60 हजार रुपये का बिल बना देना।

— सरकारी अस्पताल 1980 से लगातार उपेक्षा के शिकार हैं। तब सरकारों के व्यय में स्वास्थ्य क्षेत्र का हिस्सा तीन प्रतिशत था जो घटते-घटते 2001 तक एक प्रतिशत से भी कम, 0.9 तक आ गया। अतः देख-रेख भी नहीं, वृद्धि की तो बात ही क्या करना।

— विश्व-भर से रोगियों को उपचार के लिये, सस्ते उपचार के लिये आमन्त्रित करना। अति विशेषज्ञता वाले महँगे अस्पतालों के निर्माण के लिये सस्ते में जमीन उपलब्ध कराना।

— 1980 में 160 सरकारी मेडिकल कॉलेज थे और आज 2008 में यह सँख्या 170 तक नहीं पहुँची है। इसी अवधि में निगमित क्षेत्र में 100 से अधिक नये मेडिकल कॉलेज खुले हैं। चिकित्सक बनने के लिये कई लाख रुपये खर्च करना आवश्यकता बन गया है।

— मेडिकल कॉलेज खोलने के लिये 500 बिस्तर का अस्पताल आवश्यक है। आज 70 करोड़ रुपये वार्षिक व्यय में 500 बिस्तर का अस्पताल तथा मेडिकल कॉलेज सहज ढँग से चल सकते हैं। भारत में 600 जिले हैं, प्रत्येक जिले में सरकारी मेडिकल कॉलेज.... बाजार के प्रभाव में बाधा। सरकारें अति विशेषज्ञता के लिये एक संस्थान पर 200-250 करोड़ रुपये वार्षिक खर्च करती हैं।

— नर्स, फार्मासिस्ट, लैब टैक्नीशियन, फिजियोथेरेपिस्ट, ऑपरेशन थियेटर टैक्नीशियन की बीमार समाज में आवश्यकता लाखों में है। एक डॉक्टर के संग 3 नर्स। सरकारी क्षेत्र में इनके शिक्षण-प्रशिक्षण के लिये 1980 से उल्लेखनीय वृद्धि नहीं। जबकि, गली-गली में इनके संस्थान खुल गये हैं। इस समय फरीदाबाद में ही 16 हैं — सरकारी एक भी नहीं।

— सरकारी अस्पतालों में नर्सों व अन्य पैरा मेडिकल स्टाफ की भारी कमी है। मानक अनुसार 200 बिस्तर के अस्पताल में 200 नर्स होनी चाहियें। सरकारें 50-60 पद ही स्वीकृत करती हैं। और, वास्तव में 20-30 नर्स ही होती हैं। हाँ, भारत सरकार-हरियाणा सरकार नर्सों के निर्यात को प्रोत्साहित करती हैं।

— स्वास्थ्य बीमा नया, तेजी से बढता धन्धा है। बीमा बीमारियों का नहीं किया जाता बल्कि राशि आधारित है। यह अस्पतालों को अनावश्यक उपचार के लिये प्रेरित करता है। यह बीमा कम्पनी को आवश्यक उपचार पर भी कैंची चलाने को प्रेरित करता है। अस्पतालों और बीमा कम्पनियों की खींचातान ने बिचौलिये (टी पी ए) को जन्म दिया है जो बीमा करवाने वाले के लिये अतिरिक्त व्यय व परेशानी लिये है।

— धर्मार्थ अस्पतालों में भी बाजार का दबदबा कायम हो गया है। दिल्ली में मूलचन्द, गंगाराम और यहाँ फरीदाबाद में सनफ्लैग, एस्कोर्ट्स अस्पताल उदाहरण हैं। अब इन में उपचार बहुत महँगा हो गया है। गंगाराम अस्पताल की ही बात करें। मरीज से पहला प्रश्न : स्वास्थ्य बीमा है कि नहीं ? है तो कितने का? तीन लाख रुपये का है तो कहीं और देखिये। दस लाख रुपये के बीमे से कम वालों को उपचार कहीं और करवाने की सलाह दी जाती है।

उपचार का बाजार आज भारत में एक लाख पचास हजार करोड़ रुपये वार्षिक का है। लोग प्रत्यक्ष तौर पर एक लाख पन्द्रह हजार करोड़ रुपये और सरकारों के माध्यम से 35 हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष खर्च करते हैं।

उपचार पर बाजार के हावी होने का एक प्रतीक गुर्दे खरीदना और गुर्दे बेचना है। —एक डॉक्टर

आदान–प्रदान बनाम शास्त्रार्थ

प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार में होती है।

जो है उसके किसी न किसी पहलू से हर व्यक्ति का हर समय वास्ता रहता है।

जो हैं वे भौतिक रूपों में हो सकती हैं; कौशल स्वरूपों में हो सकती हैं; विचारों के, धारणाओं के रूपों में हो सकती हैं; अथवा इनके अनेक मिश्रणों में हो सकती हैं।

जो हैं उनकी गतियाँ भिन्न हैं। उनमें होते परिवर्तनों की अवधि और गति भिन्न हैं। जो हैं वो (और जो थी तथा जिनके होने की सम्भावनायें हैं वो भी) एक-दूसरे को हर समय प्रभावित करती हैं।

स्पष्ट लगता है कि हम सब का वास्ता अत्यन्त जटिल और प्रत्येक क्षण परिवर्तन की स्थिति में जो हैं उन से रहता है। इसलिये यह भी लगता है कि हर एक के लिये हर समय आंकलन में चूकने की सम्भावना बहुत अधिक रहती है। मेरा-तेरा गलती करना, गलत होना स्वाभाविक लगता है।

ऐसे में हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है। अधिक से अधिक लोगों के बीच बातचीतें, चर्चायें सर्वोपरि महत्व की लगती हैं। आज पृथ्वी पर फैले सात अरब मनुष्यों के बीच होते आदान-प्रदानों को बढाना प्रत्येक व्यक्ति के संगत रहने के लिये, अर्थपूर्ण जीवन के लिये एक प्राथमिक आवश्यकता लगती है।

जबकि शास्त्रार्थ में

हर व्यक्ति सामान्य तौर पर स्वयं को सही बताता है।

प्रत्येक अपने शास्त्र को सर्वोपरि कहती है।

शास्त्र की रचना ईश्वर-गॉड-अल्लाह ने की है कहने वाले हैं। अवतार, गॉड के पुत्र, नबी ने ईश्वरीय वाणी को शास्त्र-रूप में मानव प्रजाति को उसकी भलाई के लिये उपहार दिया है कहने वाले हैं।

शास्त्र की रचना महान मार्क्स ने, महान लेनिन ने, महान माओ ने, महान अम्बेडकर ने, महान..... ने की है कहने वाले हैं।

शास्त्रार्थ का सार : मैं-हम सही और तुम-वे गलत।

शास्त्रार्थ का परिणाम सामान्य तौर पर अनुयायी अथवा शत्रु होते हैं। मैं-हम-मेरे-हमारे-अपने-मित्र और वो-अन्य-दूसरे-पराये-शत्रु की रचना-पुष्टि शास्त्रार्थ का चाहा-अनचाहा परिणाम होता है। वर्तमान में आंकलनों पर होता शास्त्रार्थ ही बहुत अधिक कटुता लिये रहता है। विगत के शास्त्रों के आधार पर शास्त्रार्थ.....

शास्त्री बनना है, बने रहना है और शास्त्रार्थ करना है अथवा आदान-प्रदान बढाना है ? इनमें प्रत्येक चुन सकती है, हर एक चुन सकता है।